मानवी

मानवी
सृजन-सोपान

अक्टूबर - दिसम्बर 2024
त्रैमासिक साहित्यिक ई पत्रिका

कविता सिंह
अहमदाबाद

शीत में सरसों

कविता सिंह ✍️

सुनो सुनो सुनो सुनो
बात सुनी कल परसों
खेत में थरथर् थरथर्
काँप रही थी सरसों

बोली हे! धरती माँ
नरम कपास उगवाओ
जल्दी से मुझको भी
गरम रजाई बनवाओ

ऊपर खुला गगन और
नीचे धरती शीत रही है
पत्ते पत्ते सिकुड़ी बैठी
ठिठुर ठिठुर के बीत रही है

मँगवाओ ऊनी हरा दुशाला
एक पुलोवर फूलों वाला,
ला दो कनटोपा फरवाला
काटूँ पहन कर जाड़ा पाला...।

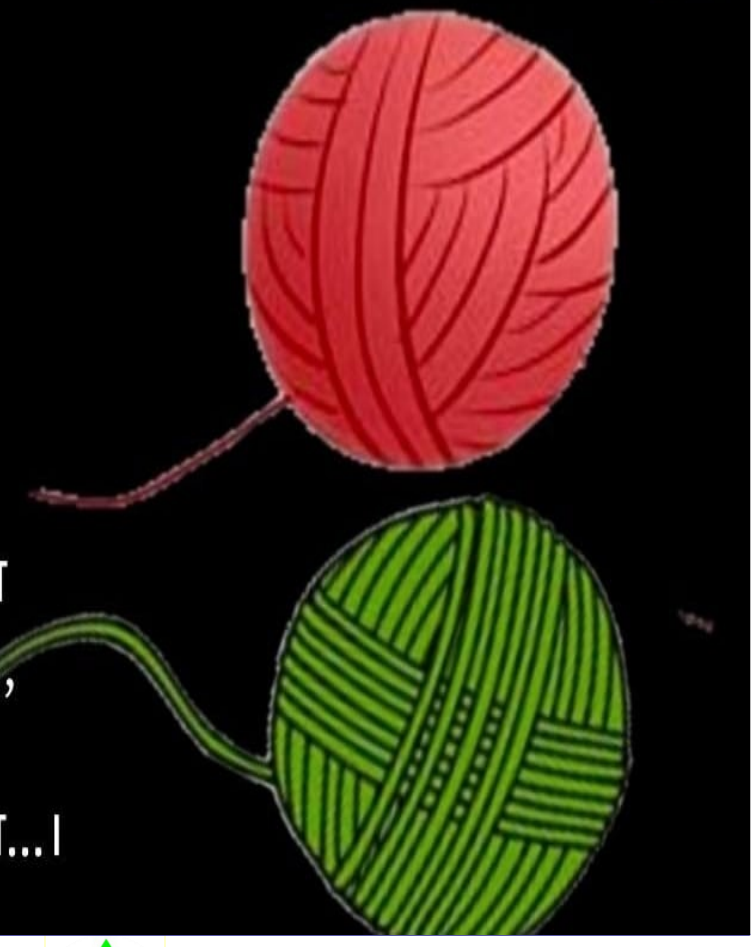

त्रैमासिक ई पत्रिका
वर्ष– 4 ,अंक – 4 (अक्तूबर - दिसंबर 2024)

प्रधान सम्पादक - कविता सिंह

****

सम्पादक—राजेश कुमार सिंह

****

आवरण -चित्र -तेजस सिंह

****

ई मेल : manvipatrika@gmail.com

****

Website : http://www.manvipatrika.co.in/

****

संरक्षक

श्रीमती जानकी किशोरी देवी एवं

श्री राम चन्द्र सिंह

****

पता -कार्यकारी -बी -701 ,स्वाति फ्लोरेंस , निकट सोबो सेंटर ,साउथ बोपल ,अहमदाबाद -380058

स्थायी - 274/x ,शक्ति णगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

मोब -9833775798

मानवी पत्रिका में प्रकाशित लेख /काव्य आदि रचनकारों के अपने विचार है ,जिनसे प्रकाशक/ संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है । सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गोरखपुर रहेगा । रचना की मौलिकता का दायित्व रचनाकार का है पत्रिका से जुड़े सभी पद अवैतनिक है ।

पत्रिका प्रधान संपादक कविता सिंह जी के स्वामित्व में आन-लाइन प्रकाशित होती है। पत्रिका के वेबसाईट से सभी अंकों का पीडीएफ़ डाउनलोड किया जा सकता है ।
पत्रिका निःशुल्क है , पत्रिका का उद्देश्य हिन्दी साहित्य की सेवा है।

पत्रिका आप सभी मित्रों से रचनात्मक सहयोग के अलावा अर्थ-सहयोग का भी निवेदन करती है, यह स्वैच्छिक है आप पेटिएम नं - 9833775798 पर स्वेच्छा से यथासंभव धनराशि सहयोग के रुप में अंतरित कर सकते हैं।

इस अंक में .....

कुछ मेरी भी	संपादक	5
काव्य धरोहर		
गंगा	मैथिली शरण गुप्त	7
भारत	सोहनलाल द्विवेदी	7
लेख/संस्मरण/आलेख		
सनातन आस्था का प्रतीक है प्रयाग कुम्भ	कृष्ण कुमार यादव	8
आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत : देवनागरी	डॉ. इंद्र सेंगर	11
साहित्य संस्कृति और आध्यात्म क्या एक दूसरे के पूरक हैं	राजेश कुमार सिन्हा	14
महामूर्ख सम्मेलन के संस्थापक : विश्वनाथ शुक्ल ' चंचल	दुर्गेश मोहन	16
आज की वैदेही	मनीषा आवले चौगांवकर	18
हास्य/व्यंग्य		
कृत्रिम वार्ता – एआई मेरे भाई	डॉ. मुकेश 'असीमित	21
पोथी लिख लिख जग मुआ	शैलेन्द्र चौहान	23
अक्लमंद,अक्लबंद होने के लिए..	दिनेश गंगराड़े '	26
नाक की पगड़ी	सुधा गोयल	२७
कहानी		
क्या बिगडा मर्द जात का	महेश शर्मा	28
वायरस	श्यामल बिहारी महतो	34
सामने वाली खिड़की	वाजिद हुसैन	37
पागल	शराफ़त अली ख़ान	39
अजब गजब	डॉ सरला सिंह स्निग्धा	41
लघुकथा		
अंधेरा- उजाला	डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल	13
सच्ची प्रार्थना का फल	संजय मृदुल	25
काव्य/हाइकु /गजल		
शीत में सरसों	कविता सिंह	2
जाने किसकी नजर लगी	डॉ. सतीश "बब्बा"	15
घर की स्त्रियां	रेखा शर्मा " नीरू "	17
मुट्ठी में आकाश करो	कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"	20
गजल	वाई.वेद प्रकाश	22
दो नवगीत	नलिन खोईवाल	33
काव्य	केशव शरण	36
यादें रेडियो की	राजेन्द्र लाहिरी	38
मिलें तो नाप लेना	प्रतिभा पाण्डेय "प्रति"	40
सहा नहीं जाता	रंजना लता	40
काव्य	शेफालिका सिन्हा	42
गजलें	नवीन माथुर पंचोली	43
काव्य	डॉ नरेश सिहाग	44
गजलें	डॉ. राकेश जोशी	45
गीत	टीकमचन्दर ढोडरिया "काव्यांजलि"	46
गजलें	ज्ञान प्रकाश पाण्डेय	47
अधखुली खिड़कियाँ	अनिल कुमार मिश्र	47
झील के ऊपर अगहन माह के मेघ	गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"	48
प्रणय	मधुकर वनमाली	48
दिल तो दर्पण है	सतीश कुमार नारनौंद	48
बचपन को किसने मारा	नेमीचन्द कुम्हार	49
युद्ध युद्ध	डॉ. अखिलेश शर्मा	49
गजल	डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री	55
नए साल के इंतज़ार में	डॉ० दलजीत कौर	59
पुस्तक समीक्षा		
प्रकृति, संस्कृति और स्त्री की त्रयी का बहुआयामी विमर्श	केशव शरण	50
त्राहिमाम युगे युगे - ज्वलंत विसंगतियों का आईना	मधुर कुलश्रेष्ठ	52
अपने -अपने देवधर : एक समग्र आकलन	डॉ. परिधि शर्मा	54
'बंद दरवाजे का मकान" की संवेदनशील कविताएं	विजय कुमार तिवारी	56

कुछ मेरी भी....

आस्था और बाजार

भारत अटूट आस्था वाला देश है ,हजारों देवी देवताओं वाला देश है,हजारों मान्यताओं वाला देश है ,ऋषि मुनियों वाला देश है । रामायण, महाभारत जैसे विशिष्ट ग्रंथों वाला देश है। यही मान्यताएँ भारत को अन्य देशों से पृथक भी करती है। हम स्नान को भी महापर्व बना सकते है । हमारे पास एक विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर है, और वो है- हमारी परंपरा ,सदियों से चली आ रही परंपराएँ ,जो हमें अन्य से पृथक भी करती है और हमारी पहचान को भी सँजोएँ रखती है। यहीं परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती आ रही है। शहरी जीवन में भले ही लोक मान्यताओं में मानने वालों की संख्या में कमी आ रही है ,पर ग्रामीण जीवन ने अभी भी इन मान्यताओं को बचाकर रखा है ,लोग उनको अनपढ़ गवार भले ही कहे ,पर असल में वही लोग है जो असली भारत है – भोले ,बिना लाग लपेट ,बिना छल कपट वाले लोग। सच देखा जाय तो यही ग्रामीण लोग ही देसी परंपराओं के असली संवाहक है। वैसे भी भारत की आत्मा तो गाँवों में बसती है।

इन्ही परंपराओं में से एक कुम्भ मेला आजकल प्रयागराज में चल रहा है । कुम्भ मेला तो उज्जैन नासिक हरिद्वार और प्रयाग में हर बारह साल में एक बार लगता है ,पर इस बार का संयोग 144 साल बाद आने से इस बार के कुम्भ मेले को महाकुंभ का नाम दिया गया है। कुम्भ के पीछे की पौराणिक कथा से आप परिचित होंगें। इस पौराणिक कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के शाप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया। तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए ।भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मन्थन करके अमृत निकालने को कहा । भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण देवता दैत्यों के साथ सन्धि करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुम्भ के निकलते ही देवताओं के इशारे से इन्द्रपुत्र जयन्त अमृत-कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। तत्पश्चात अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव-दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा। इस परस्पर युद्ध के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। जहाँ-जहाँ अमृत बूँद गिरी थी, वहाँ-वहाँ कुम्भ पर्व होता है। विशेष दिनों में स्नान का महत्व है ।इन दिनों में कुम्भ स्नान करने का फल अन्य दिनों के अपेक्षा अधिक हितकारी होता है। कुम्भ मेले में आध्यकमिकता को देखते हुए एकांतवास या कल्पवास का अपना महत्व है, जहां दीन दुनिया से कटकर एक माह तक पवित्र गंगा की पवित्र रेती पर तंबू लगाकर एक माह तक भगवान भक्ति या स्वयं की तलाश की जाती है । स्वयं को जानने का प्रयास किया जाता है । स्वयं की या फिर ईश्वर की खोज की जाती है ।

सोशल मीडिया के एस दौर ने हर एक चीज को बाजार से जोड़ दिया है । चैनल वाले बजाय परंपरा को दिखाने के , बजाय संस्कृति को दिखाने के , दिखा रहें है , सबसे सुन्दर साध्वी कौन है कैसी दिखती है। आईआईटी वाले बाबा को दिखाने से उनके चैनल की रेटिंग और देखने वालों की संख्या बढ़ती है। ऐसा नहीं है कि सिर्फ चैनल वालों की गिरावट है , वो तो वही दिखाते है जो जनता देखना चाहती है , लोगों की मानसिकता में भी भारी गिरावट है । लोग ऐसी ही चीजों को देखना भी चाहते है। मेरा मानना है आपका कृत्य ऐसा हो कि जिससे जन कल्याण होता हो और साधु संतों का भी कृत्य समाज देखता है, वो भी तब जब समाज के लिए आप पूजनीय है , समाज के लिए पथ प्रदर्शक है , मार्गदर्शक है, समाज आपका अनुसरण करता है। प्रदर्शन के बजाय दर्शन पर ध्यान होना चाहिए , जबकि कुम्भ मेला में जो दिखता है वही बिकता है की तर्ज पर प्रदर्शन पर जोर है। शोर और संगीत में बहुत अंतर होता है ,वही अंतर होता है दर्शन और प्रदर्शन में ,वही अंतर होता है सूचना और ज्ञान में ,वही अंतर होता है दिखावे और अध्यात्म में।

करोड़ों श्रद्धालु ,लाखों साधु सन्यासी पवित्र संगम में डुबकी लगाकर उसका लाभ प्राप्त करेंगें। लाखों लोगों को आंशिक ही सही पर कुछ दिनों के लिए रोजगार मिलेगा। कुछ लोगों को पेटभर भोजन मिलेगा , कुछ लोग कमाकर करोड पती हो जाएंगें, कुछ लोगों को ज्ञान भी मिल सकता है। यानि की एक ही महाकुम्भ मेले से बहुत सारे लोग अपने अपने तरीके से लाभान्वित होंगें।

आदमी बड़ा होने पर या फिर बड़े पद पर आसीन होने पर कुछ भो बोलने लगता है । जैसे कि उनकों कुछ भी बोलने का अधिकार मिल गया हो। अब देखिए एल & टी के सीईओ ने सप्ताह में काम के घंटों को 90 घंटे करने का सुझाव दिया है । यहाँ तक तो ठीक था , पर ये कहना की संडे को आखिर कितनी देर तक आप अपनी वाइफ को निहारोगे, उनकी पुरुषवादी मानसिकता की सोच को दर्शाती है। स्त्री को भोग्या और वस्तु के रूप में देखती है। सही है की कोई बड़े होने से बड़ा नहीं हो जाता, उसके विचारों में बड़प्पन होना चाहिए, उसकी सोच और भाषा या यूं कहें उसके कृत्य में भी बड़प्पन दिखना चाहिए। कभी कभी स्पर्धा के इस दौर में आदमी दौड़ते दौड़ते मर्यादाओं को भूल जाता है , आगे बढ़ने के लालच में कुछ भी बोलता रहता है। आज के समय में नौकरी बंधुवा मजदूरी बनकर रह गई है। बहुत ही काम लोग होंगें जो अपनी नौकरी से संतुष्ट होंगे । ज्यादातर तो मानसिक अवसाद मानसिक असंतुलन की स्तिथि में जी रहें हैं। ऐसे लोग जो मानसिक दबाब सह नहीं पाते है ,आत्महत्या का मार्ग भी चुन लेते हैं। में यह नहीं कहता की आगे नहीं बढ़ना चाहिये ,बढ़ना चाहिए बिल्कुल बढ़ना चाहिए पर किस कीमत पर, इस पर जरूर एक मानदंड तैयार करने की जरूरत है। ग्रोथ की भी सीमा निर्धारित होनी चाहिए। क्योंकि ऐसा पाया गया है कि जहां पर घातीय (एक्स्पोनेन्शल) ग्रोथ होती है ,वहाँ पर कुछ न कुछ ग्रे में जरूर रहता है। और ज्यादातर इसमें व्यक्तिगत फायदा और संस्थान का नुकसान ही देखा गया है। तो काम के घंटों के लेकर एक स्वस्थ बहस जरूर होनी चाहिए और इससे भी ज्यादा जरूरी है कि ग्रोथ का भी मापदंड निर्धारित होना चाहिए।

आप सभी को विश्व हिन्दी दिवस (10 जनवरी 2025) की हार्दिक शुभकामनाएँ। आए अपनी हिन्दी भाषा को वैश्विक स्तर पर उचित मान सम्मान दिलाए। दिवंगत प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी ने 6 जनवरी 2006 को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी , जिसका उद्देश्य हिन्दी भाषा को विश्व स्तर पर अपनी पहचान दिलाना है । हिन्दी की ग्राह्यता से सबको परिचित कराना है।

अंत में हमारी पत्रिका के सहयोगी रचनाकार डॉ इन्द्र सिंह सेंगर जी को हिन्दी अकादमी दिल्ली , राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार की ओर से वर्ष 2022-23 के लिए बाल साहित्य पुरुष्कार से सम्मानित होने पर ढेरों बधाइयाँ।

आपका
शुभेच्छू

काव्य धरोहर

मैथिली शरण गुप्त

गंगा

यह घट इतना कहाँ हाय! जो
इस में रहती गंगा?
मुझे हाथ धोने का अवसर
दे तू बहती गंगा!
देखे हैं कितने युग तूने,
क्या कहती है गंगा?
आज हमारे पाप ताप ही
तू सहती है गंगा!
तुझसे बुझती रहे चिता वह
जो दहती है गंगा!
फूल भेंट के साथ बाँह यह
तू गहती है गंगा!
बहती रह इस महा मही पर
मेरी महती गंगा!
मुझे हाथ धोने का अवसर
दे तू बहती गंगा!

सोहन लाल द्विवेदी

भारत

भारत तू है हमको प्यारा,
तू है सब देशों से न्यारा।

मुकुट हिमालय तेरा सुंदर,
धोता तेरे चरण समुंदर।

गंगा यमुना की हैं धारा,
जिनसे है पवित्र जग सारा।

अन्न, फूल, फल, जल हैं प्यारे,
तुझमें रत्न जवाहर न्यारे!

राम कृष्ण से अंतर्यामी,
तेरे सभी पुत्र हैं नामी।

हम सदैव तेरा गुण गाएँ,
सब विधि तेरा सुयश बढ़ाएँ।

सनातन आस्था का प्रतीक है प्रयाग कुम्भ

कृष्ण कुमार यादव

भारत सरकार में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। प्रशासन के साथ-साथ साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी प्रवृत्त। विभिन्न विधाओं में अब तक कुल 7 पुस्तकें प्रकाशित- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह, 2005), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह, 2006 व 2007), इत्यादि

सम्मान : उ.प्र. के मुख्यमंत्री द्वारा "अवध सम्मान", पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा " साहित्य-सम्मान", छत्तीसगढ़ के राज्यपाल द्वारा "विज्ञान परिषद शताब्दी सम्मान", परिकल्पना समूह द्वारा "दशक के श्रेष्ठ हिन्दी ब्लॉगर दम्पति" सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन, भूटान में "परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान", विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा डॉक्टरेट (विद्यावाचस्पति) की मानद उपाधि, भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा "डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप राष्ट्रीय सम्मान" साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा, राजस्थान द्वारा "हिंदी भाषा भूषण", वैदिक क्रांति परिषद, देहरादून द्वारा " श्रीमती सरस्वती सिंहजी सम्मान", भारतीय बाल कल्याण संस्थान द्वारा "प्यारे मोहन स्मृति सम्मान", आदि विभिन्न पुरुस्कारों से सम्मानित।

संपर्क सूत्र :पोस्टमास्टर जनरल,
उत्तरी गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद -380004
kkyadav.t@gmail.com

भारत के ऐतिहासिक मानचित्र पर प्रयागराज एक ऐसा प्रकाश स्तम्भ है, जिसकी रोशनी कभी भी धूमिल नहीं हो सकती। इस नगर ने युगों की करवट देखी है, बदलते हुये इतिहास के उत्थान-पतन को देखा है, राष्ट्र की सामाजिक व सांस्कृतिक गरिमा का यह गवाह रहा है तो राजनैतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र भी। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस नगर का नाम 'प्रयाग' है। ऐसी मान्यता है कि चार वेदों की प्राप्ति पश्चात ब्रह्म ने यहीं पर यज्ञ किया था, सो सृष्टि की प्रथम यज्ञ स्थली होने के कारण इसे प्रयाग कहा गया। प्रयाग माने प्रथम यज्ञ। कालांतर में मुगल सम्राट अकबर इस नगर की धार्मिक और सांस्कृतिक ऐतिहासिकता से काफी प्रभावित हुआ। उसने भी इस नगरी को ईश्वर या अल्लाह का स्थान कहा और इसका नामकरण 'इलहवास ' किया अर्थात जहाँ पर अल्लाह का वास है। परन्तु इस सम्बन्ध में एक मान्यता और भी है कि इला नामक एक धार्मिक सम्राट, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (अब झूंसी) थी के वास के कारण इस जगह का नाम 'इलावास' पड़ा। कालान्तर में अंग्रेजों ने इसका उच्चारण ' इलाहाबाद' कर दिया। फ़िलहाल, अतीत की गौरवशाली परंपरानुसार इस नगरी का नाम पुन: प्रयागराज हो गया है।

प्रयागराज एक अत्यन्त पवित्र नगर है, जिसकी पवित्रता गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम के कारण है। वेद से लेकर पुराण तक और संस्कृत कवियों से लेकर लोकसाहित्य के रचनाकारों तक ने इस संगम की महिमा का गान किया है। प्रयागराज को संगमनगरी, कुम्भनगरी और तीर्थराज भी कहा गया है। प्रयागशताध्यायी के अनुसार काशी, मथुरा, अयोध्या इत्यादि सप्तपुरियांँ तीर्थराज प्रयाग की पटरानियांँ हैं, जिनमें काशी को प्रधान पटरानी का दर्जा प्राप्त है। तीर्थराज प्रयाग की विशालता व पवित्रता के सम्बन्ध में सनातन धर्म में मान्यता है कि एक बार देवताओं ने सप्तद्वीप, सप्तसमुद्र, सप्तकुलपर्वत, सप्तपुरियाँ, सभी तीर्थ और समस्त नदियाँ तराजू के एक पलड़े पर रखीं, दूसरी ओर मात्र तीर्थराज प्रयाग को रखा, फिर भी प्रयागराज ही भारी रहे। वस्तुतः गोमुख से प्रयागराज तक जहाँ कहीं भी कोई नदी गंगा से मिली है उस स्थान को प्रयाग कहा गया है, जैसे-देवप्रयाग, कर्ण प्रयाग, रूद्रप्रयाग आदि। केवल उस स्थान पर जहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम है प्रयागराज कहा गया। प्रयागराज के बारे में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है-"को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ, कलुष-पुंज कुंजर मृगराऊ। सकल काम प्रद तीरथराऊ, बेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ।।" इसी प्रयाग की धरा पर हर बारह वर्ष पर कुंभ पर्व का भव्य आयोजन होता है।

चित्र गूगल से साभार

कुम्भ पर्व सनातन आस्था का प्रतीक है। कुंभ-पर्व का वेदों में उल्लेख मिलने से इसकी प्राचीनता का पता चलता है। ऋग्वेद (10-89-7), शुक्लयजुर्वेद (19-87), अथर्ववेद (4-34-7, 16-6-8 एवं 19-53-3) की ऋचाएं कुंभ पर्व पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं। कुम्भ पर्व हरिद्वार (गंगा तट), उज्जैन (क्षिप्रा तट) तथा नासिक (गोदावरी तट) में भी लगता है परन्तु प्रयाग कुम्भ की महत्ता इसलिए भी बढ़ जाती है कि लोगों को यहाँ तीन पवित्र नदियों के संगम में स्नान करने का सुअवसर प्राप्त होता है। प्रयाग में गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर प्रत्येक बारह वर्ष के अन्तराल पर यह विश्व प्रसिद्ध पर्व मकर संक्राति से लेकर महाशिवरात्रि तक चलता है, जिसमें देश-विदेश से करोड़ों नर-नारी असीम श्रद्धा के साथ पतित-पावनी त्रिवेणी में स्नान कर न केवल अपने पापों एवं कष्टों को धोते हैं, बल्कि ऐसी मान्यता है कि इसके साथ ही विद्वानों के मुखार बिन्दु से अविरल बह रही गंगा में गोता लगाकर अपने जन्म-जन्मान्तर के पापों को भी नष्ट करते हैं। बीतरागियों, साधु-महात्माओं, संन्यासियों, मठाधीशों और शंकराचार्यों की मौजूदगी मेले को गरिमा देती है। महामंडलेश्वरों, संत-महात्माओं के अतिरिक्त अनेक कथावाचकों, मनीषियों के शिवरों में कथा, कीर्तन, प्रवचन आदि के कार्यक्रम होते हैं, कई शिविरों में रामलीलाएं भी होती हैं। कुंभ की भव्यता और मनमोहकता से आकृष्ट हो हजारों विदेशी पर्यटक इस अवसर पर विशेष रूप से आते हैं और कई तो सदा-सदा के लिए यहाँ की आध्यात्मिक रजकणों से अभिभूत हो अपनी भौतिक सम्पन्नता को त्याग कर भक्ति में लीन हो जाते हैं।

सामान्यतः कुम्भ का अर्थ 'घड़े' से होता है परन्तु इसका तात्विक अर्थ कुछ और ही है। कुंभ हमारी संस्कृतियों का संगम है। कुंभ एक आध्यात्मिक चेतना, मानवता का प्रवाह एवं शाश्वत जीवन धारा है। भारतीय दर्शन में नदियाँ जल का प्रवाह मात्र नहीं हैं वरन् ये महा चैतन्य रूपी परमात्मा का शाश्वत प्रवाह है। उनका स्वरूप लोक माताओं के रूप में पूज्यनीय माना गया है। भारतीय संस्कृति में गंगा नदी का प्रमुख स्थान है, जिसके तट पर प्रयाग में कुंभ का आयोजन होता है। वस्तुतः गंगा एक जीवन धारा है। ज्ञान वैराग्य और भक्ति का अमृत संगम में छिपा है जिसमें डुबकी लगाने से इंसान को जीते जी मोक्ष की प्राप्ति होती है। तभी तो कहा गया है-"गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः।"

शास्त्रों में कुंभ पर्व की महिमा का गुण-गान करते हुए इसके स्नान को समस्त पापों का नाशक एवं अनंत पुण्यदायक बताया गया है। स्कंद पुराण में वर्णित है-

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुंभस्नानेन तत्फलम्।।

अर्थात एक हजार बार कार्तिक मास में गंगा में स्नान करने से, सौ बार माघ में संगम-स्नान करने से, वैशाख में एक करोड़ बार नर्मदा-स्नान करने से जो पुण्यफल अर्जित होता है, वह कुंभ में केवल एक बार स्नान करने से प्राप्त होता है। विष्णु पुराण में भी कुंभ-स्नान की प्रशंसा में कहा गया है-

अश्वमेधसहस्राणि वाजयशतानि च।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुंभस्नानेन तत्फलम।।

अर्थात् हजार बार अश्वमेध-यज्ञ करने से, सौ बार वाजपेय-यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जितनी पुण्यराशि संचित होती है, उतनी कुंभ में एक बार स्नान करने से प्राप्त होती है।

कुम्भ का यदि हम ऐतिहासिक दृष्टि से विश्लेषण करें तो हमें सनातन काल से मिलता है। सनातन आदि और अनादि है। इसी में समष्टि का बोध निहित है। इसी में हिन्दू संस्कृति, इसी में विश्व की संस्कृति एवं सभ्यताओं का संगम निहित है। यही कारण है कि विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में भी कुम्भ का उल्लेख एवं आकार हमें प्राप्त होता है। इतना विशाल पर्व एक दिन में तो होने नहीं लगता, शनैः-शनैः वह महान स्वरूप लेता है। कुछ ऐसा ही कुम्भ पर्व के बारे में हुआ होगा। 644 ईसवी में सम्राट हर्षवर्धन के कार्य काल में प्रयाग का यह महापर्व सर्वाधिक प्रकाश में आया, ऐसी मान्यता है। चीनी यात्री व्हेनसांग ने अपने यात्रा वृतांत का जिस प्रकार से उल्लेख किया है, उससे स्पष्ट है कि उस समय कुम्भ अथवा अर्द्धकुम्भ का ही समय रहा होगा। हर्षवर्धन द्वारा गंगा स्नान करके अपना सर्वस्व दान कर बहन राजश्री से वस्त्र मांग कर पहनने आदि जैसे वृतांत प्रयाग के कुम्भ अथवा अर्द्धकुम्भ की ओर संकेत करते हैं। नवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा दसनामी अखाड़ों का गठन करने, कुम्भ, अर्द्धकुम्भ पर्वों की नींव डालने की बात भी उभर कर सामने आती है। आज भी अखाड़ों की मौजूदगी कुंभ को विशिष्टता प्रदान करती है। अखाड़े कुंभ मेले के सिरमौर माने जाते हैं। मेले में विभिन्न अखाड़ों के साधु, संत, महंत रेती पर धूनी रमाते हैं और वसंत पंचमी के शाही स्नानपर्व के बाद अखाड़ां के साथ ही श्रद्धालु भी विदा लेते हैं।

प्रयाग में संगम की रेती पर लगने वाला कुंभ मेला अनेक मायनों में अद्भुत और अतुलनीय है। इस पर बसने वाली तंबुओं की नगरी में देश और दुनिया से अनेक मत-मतांतर, भाषा-भाषी, रीति-रिवाज, संस्कार प्रथा-परंपरा के श्रद्धालु पुण्य और मोक्ष की कामना से जुटते और संगम में डुबकी लगाते हैं। कुम्भ पर्व अमृत स्नान और अमृतपान की कामना की बेला है। इस समय गंगा की धारा में अमृत का सतत् प्रवाह होता है। कुम्भ पर्व की मूल चेतना पुराणों में वर्णित है। यह पर्व क्षीरसागर के मंथनोपरांत प्राप्त हुए अमृत कुंभ के लिए हुए देवासुर संग्राम से जुड़ा है। समुद्र मंथन से प्राप्त 14 रत्नों में सबसे अन्त में आयुवर्धिनी शक्ति वाले अमृत कुंभ को लेकर, आयुर्वेद के अधिष्ठाता भगवान धनवंतरि स्वयं प्रकट हुए। अमृतकुम्भ पाने की होड़ ने देव-दानव युद्ध का रूप ले लिया। देवताओं ने दैत्यों से छिपाने के लिए देवराज इन्द्र के पुत्र जंयत को अमृत कुंभ की रक्षा का दायित्व सांपा। इस दायित्व को पूरा करने में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि भी सहायोगी बने। दैत्यों ने अमृत कुंभ को पाने के लिए तीनों लोकों में जयंत का पीछा किया। यह युद्ध 12 दिनों तक चला। देवताओं का एक दिन मानवों के एक वर्ष के बराबर माना जाता है। इस दौरान 'अमृत कुंभ' की रक्षा के क्रम में विश्राम के दौरान अमृत की बूंदें बारह स्थानों पर गिरीं । इन बारह स्थलों में से आठ पवित्र स्थान देवलोक में हैं और चार (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पृथ्वी पर हैं। ये चार स्थान ही अमृत की बूंदों के कारण कुंभ क्षेत्र बने। चूँकि इस अमृत कलश की रक्षा में सूर्य, चन्द्र, गुरु और शनि सहयोगी की भूमिका में थे, अतः कुंभ पर्व के दौरान उन्हीं स्थानों पर इनका दुर्लभ संयोग पड़ने पर कुम्भ पर्व मनाया जाता है। विष्णु याग के अनुसार -

माघे मेषगते जीवे, मकरे चन्द्रीभास्करौ।
अमावस्या तदा योगः कुम्भख्यस्तीर्थ नायके।।

अर्थात् माघ में वृहस्पति के मेष में होने तथा सूर्य और चन्द्रमा के मकर में होने पर अमावस्या को प्रयाग में कुंभ पर्व होता है।

मकर संक्रान्ति से लेकर वैशाख पूर्णिमा तक चलने वाले प्रयाग कुंभ पर्व में कुछ खास स्नान पर्व होते हैं और तीन शाही स्नान पर्व होते हैं- मकर संक्राति (प्रथम शाही स्नान), पौष पूर्णिमा, मौनी अमावस्या (द्वितीय शाही स्नान), वसंत पंचमी (तृतीय शाही स्नान), माघ पूर्णिमा, महाशिवरात्रि। विभिन्न अखाड़ों के साधु-संत कुम्भ स्थल में एकत्र होते हैं और प्रमुख स्नान पर्व पर वे एक शानदार शोभा यात्रा निकालते हुए पारम्परिक अनुशासन में बँधकर स्नान हेतु स्नान स्थल पर जाते हैं। इन अखाड़ों के प्रमुख महंतों की सवारी सोने-चाँदी तथा अन्य सजावट से सजे हाथी, भव्य रथों और पालकियों पर निकलती है, जिनके आगे-पीछे आकर्षक सज्जा से आच्छादित ऊँट, घोड़े, हाथी और बैंड भी होते हैं। इन्हें देखकर पुराने जमाने के राजा-महाराजाओं के काफिले का अक्स उभरकर सामने आता है।

कुंभ प्रयाग ही नहीं बल्कि संगम की रेती पर लगने वाला विश्व का सबसे बड़ा स्वतः स्फूर्त आयोजन है। कुंभ सिर्फ मानवीय आयोजन नहीं बल्कि एक दैवीय और आध्यात्मिक महोत्सव है। वाकई, मीलों लंबे चौड़े क्षेत्र में कुंभ पर्व के दौरान जो वातावरण व्याप्त रहता है, वह महीनों और वर्षों में ढले स्वभाव को भी सहज ही बदलने में समर्थ है। यह भी इस अवसर को महत्वपूर्ण बनाता है। कुंभ ऐसा पर्व है जहाँ मानव का देव से सीधे साक्षात्कार होता है, शारीरिक-मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिलती है। ग्रह-नक्षत्रों के सहयोग तथा गंगा और संतां पर उमड़ने वाली आस्था कुंभ रूपी सृष्टि जीवनदायी अमृत का बोध कराती है। न कोई दिखावा न आडंबर। अलग भाषा, अलग संस्कृति और अलग पहनावे के बावजूद कुंभ के समागम में सिमटती भावनाएं एक सी दिखती हैं। अनेकता में एकता का उदाहरण लिए प्रयाग कुंभ वाकई 'लघु भारत' का एहसास कराता है।

आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत : देवनागरी

डॉ. इंद्र सेंगर

वरिष्ठ साहित्यकार, भाषाविज्ञानी एवं समर्पित हिन्दी-सेवी

सम्प्रति :हिन्दी-जगत् की स्वनामधन्य संस्था अखिल भारतीय कवि सभा के अध्यक्ष के रूप में हिन्दी की सेवा में संलग्न।

सम्मान:नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा (गृह मंत्रालय) द्वारा वर्ष 2011 में 'विशिष्ट राजभाषा सम्मान – 2011' और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2016 को आपकी कृति 'माटी मेरे देश की' (ब्रजभाषा काव्य-संकलन) पर वर्ष 2015 के 'श्रीधर पाठक नामित पुरस्कार' से भी सम्मानित ।

सम्पादन:'कबीर पथ' मासिक पत्रिका, 'गीतकार' मासिक पत्रिका के नगर सम्पादक 'कवि सभा दर्पण' के सम्पादक ,वर्तमान में आप विगत बीस वर्षों से स्टेशनरी ट्रेड की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका 'स्टेशनरी टाइम्स' के साहित्य सम्पादक है ।

संपर्क सूत्र :30/106, गली नं. 7, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली-110032 (भारत)
Email : drindrasengar@gmail.com

हिन्दी में अनन्त प्रकार की ऊर्जा है, जो अविनाशी है, आध्यात्मिक है और सर्वव्यापी है। उसका शब्द-ब्रह्म हमें अध्यात्म के उत्कर्ष तक ले जाता है। उसने सुदीर्घ यात्रा का सहज मार्ग तय किया है। उसकी अर्थ-परिवर्तन की प्रक्रिया हमें औदार्य के विशाल सागर का दिग्दर्शन कराती है। उसकी सामासिक प्रकृति हमें उसके विशाल हृदया होने का प्रमाण देती है। संस्कार उसके आभूषण हैं, वह भारतीय संस्कृति की संवाहिका की सशक्त भूमिका का निर्वाह करती हुई समग्र विश्व में अपनी ऊर्जा का प्रसारण कर रही है। वह जिस परिवेश में फूलती-फलती है, वहाँ अपनी सांस्कृतिक ऊर्जा को विविध रूपों में बिखेर देती है। सभी भारतीय भाषाएं उसे प्राणशक्ति देकर, अपनी ऊर्जा प्रदान कर उसे निरन्तर सशक्त रूप प्रदान करती रहती हैं।

उपर्युक्त के सन्दर्भ में यह कहना नितान्त समीचीन होगा कि यह समग्र चमत्कारिक शक्ति सम्पन्न देवनागरी लिपि का ही वरदान है। उल्लेखनीय है कि जिस प्रकार मनुष्य के भावों-विचारों को अभिव्यक्त करने वाले समस्त माध्यम व्यापक अर्थ में भाषा कहलाते हैं, उसी प्रकार से भाव-अभिव्यक्ति के प्रकारों को लिखित रूप प्रदान करने वाले माध्यमों को लिपि कहा जाता है। मुख्यतः लिपियाँ दो प्रकार की होती हैं -1. चित्रात्मक लिपि, जिसमें शब्दों के लिए विशेष चित्र होते हैं, यथा-चीनी लिपि, 2 ध्वन्यात्मक लिपि, जैसे-रोमन और देवनागरी लिपि। देवनागरी लिपि में प्रत्येक मूल ध्वनि के लिए जो चिन्ह होता है, उसे वर्ण कहते हैं, जैसे अ, आ आदि स्वर तथा क, ख आदि व्यंजन।

भारत की दो प्राचीनत लिपियाँ हैं-खरोष्ठी और ब्राह्मी। 'नागरी लिपि' ब्राह्मी लिपि की ही बेटी है। इसी का नाम देवनागरी है। दक्षिण में इसे 'नन्दनागरी' कहा जाता है। भारत में सर्वाधिक प्रचलित लिपि यही है। यही वह लिपि है, जिससे अनेक लिपियाँ विकसित हुई हैं। इससे विकसित हुई लिपियों में गुजराती, कैथी, राजस्थानी, महाजनी और बांग्ला प्रमुख हैं।

देवनागरी लिपि के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार का मुख्य कारण है कि यह लिपि विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। इसकी मुख्य विशेषताएं अधोलिखित हैं-

1. यह लिपि पूर्णतया भारतीय है।
2. इसकी वैज्ञानिकता चकित कर देती है।
3. इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए निश्चित संकेत हैं।
4. इसकी प्रत्येक ध्वनि के उच्चारण का स्थान निर्धारित होने के साथ-साथ वर्ण-वर्गों (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग) आदि का विभाजन अति वैज्ञानिक है।
5. इसमें जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है।
6. इस लिपि में संसार की सभी भाषाओं को व्यक्त करने की क्षमता है।

7. इसके स्वर और व्यंजन अलग-अलग हैं।
8. सरलता के कारण यह लिपि बोधगम्य है।
9. यह लिपि भाषा विज्ञान की कसौटियों पर खरी उतरती है।
10. विश्व की प्रत्येक भाषा को इस लिपि में लिप्यन्तरित किया जा सकता है।

उपर्युक्त सभी विशिष्टताओं के साथ-साथ आज के वैश्विक परिवेश में जहाँ भाषाओं का महाभारत छिड़ा हुआ है, देवनागरी लिपि की भूमिका को हम महाभारत के इस मिथक के रूप में देख सकते हैं-भाषाओं के महाभारत में विजयश्री प्राप्त करने के लिए देवनागरी लिपि पूर्णरूपेण सन्नध है। वह एक ऐसे रथ में आरूढ़ है जिसमें प्रेम, प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के चार पहिए हैं। वह रथ सूचना प्रौद्योगिकी के सात अश्वों-वेबसाइट, ई-मेल, फेसबुक, व्हाट्सअप, यू-ट्यूब, ट्विटर और ए.आई. द्वारा जोता जा रहा है। इन सभी अश्वों की लगाम देवनागरी के हाथों में है, जो एक समर्थ एवं कुशल सारथी का निर्वाह कर रही है। इस संग्राम में देवनागरी की विजयश्री विश्व-स्तर पर स्पष्टतः देखी जा सकती है। इसका सुफल यह हुआ कि आज हिन्दी विश्व की विशेष भाषा बनने के लिए विश्व के राजमार्ग पर निरन्त अग्रसर है।

अब मैं अपने मूल विषय पर आता हूँ। देवनागरी लिपि अपनी ध्वनियों के माध्यम से हमें आध्यात्मिक शक्ति (ब्रह्म-साक्षात्कार) का अनुभव भी कराने में पूर्णतः सिद्ध है। सन्त कबीर एवं उनके अनुयायी निर्गुण परम्परा के सन्त कवियों द्वारा निर्गुण साधना के लिए मानव-शरीर में 6 चक्रों का उल्लेख किया गया और प्रत्येक चक्र में उसका इष्ट देवता और देवनागरी की निर्धारित ध्वनियों का भी उल्लेख है। इसी साधना के माध्यम से कुण्डलिनी-जागरण द्वारा वे निर्गुण ब्रह्म की अनुभूति का वर्णन करते हैं और अनुभूत सत्य के आधार पर अनुभव वाणियों का सृजन भी करते हैं। यह बात अलग है कि सगुण भक्ति के समर्थक इस साधना को कहाँ तक समीचीन एवं प्रामणिक मानते हैं, लेकिन 'शिवोपदेश संहिता', जो परम् ब्रह्म परमेश्वर शिव द्वारा उद्घाटित और महर्षि पतंजलि द्वारा मीमांसित 'योग साधना' का मार्गदर्शक ग्रन्थ है, साधक को यौगिक क्रियाओं द्वारा चरित्रवान बनाकर परमात्मा से जोड़ता है तथा मुक्ति-पथ की ओर अग्रसर करता है, इसका पुष्ट प्रमाण है। इस ग्रन्थ के पंचम अध्याय में सात चक्रों की स्थिति और उनके माध्यम से अध्यात्म-साधना की उत्थान विधि को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

1. मूलाधार पद्म चक्र :

आधारपर्मिंतद्धि योनिर्यस्यास्ति कन्दतः।
परिस्फुरत् वादिसान्तचतुर्वर्ण चतुर्दलम्।।८३।।
आधार पद्म की कंद (जड़-मूल) में योनि स्थित है। वर्णमाला के चार व से स तक (व, श, ष, तथा स) अक्षरों से चिन्हित चार दलों बाला यह पद्म अपनी छटा बिखेरता है।।83।।

कुलाभिधं सुवर्णाभं स्वयम्भूलिंगसंगतम्।
द्विरण्डो यत्रा सिद्धोऽस्ति डाकिनी यत्रा देवता।।८४।।
यह स्वर्ण आभा वाला कुल संज्ञक पद्म स्वयंभूलिंग के साथ संगत करता है। यहां द्विरण्ड नामधारी सिद्ध निवास करता है और डाकनी यहां की अधिष्ठात्रा देवी हैं।।84।।
तत्पर्मिंध्यगा योनिस्तत्रा कुण्डलिनी स्थिता।
तस्य ऊर्ध्वे स्फुरत्तेजः कामबीजं भ्रमन्मतम्।।८५।।
इस पद्म के मध्य में स्थित योनि में कुण्डलिनी निवास करती है। उसके ऊपर स्फुटित तेजस काम बीज भ्रमण करता है।।85।।

2. स्वाधिष्ठान पद्म चक्र :

द्वितीयन्तु सरोजं चलिंगमूले व्यवस्थितम्।
बादि लान्तं च षड्वर्ण परिभास्वरषड् दलम्।।९८।।
द्वितीय पद्म लिंग मूल में स्थित है जिसमें 'ब' से लेकर 'ल' तक के (ब, भ, म, य, र, ल) छः वर्ण अंकित छः दल हैं।।98।।
स्वाधिष्ठानाभिधं तत्तु पंकजं शोणरूपकम्।
बाणाख्यो यत्रा सिद्धोऽस्ति देवो यत्रास्ति राकिणी।।९९।।
यह स्वाधिष्ठान नामक पद्म रक्त वर्ण का है। यहां बाण संज्ञक सिद्ध का स्थान है और राकिनी यहां की अधिष्ठात्री देवी हैं।।99।।

3. मणिपूरक पद्म चक्र :

तृतीयं पंकजं नाभौ मणिपूरकसंज्ञकम्।
दशारण्डादिफान्तार्ण शोभित हेमवर्णकम्।।१०४।।
नाभि स्थित मणिपूरक, नामधारी हेम (स्वर्ण) वर्ण तृतीय पंकज है। 'ड' से लेकर 'फ' पर अंत होने वाले दस वर्णाक्षर (ड,ढ,ण,त,थ,द,ध,न,प,फ) उसके दस दलों पर शोभायमान हैं।।104।।
रुद्राख्यो यत्रा सिद्धोऽस्ति सर्वमंगलदायकः।
तत्रास्था लाकिनी नाम्नी देवी परमधार्मिका।।१०५।।
यहां सर्व मंगल दायक रुद्र नामधारी सिद्ध निवास करते हैं, तथा लाकिनी इस चक्र की अधिष्ठात्रा देवी परम धार्मिका हैं।।105।।

4. अनाहत पद्म चक्र :

हृदयेऽनाहतं नामचतुर्थ पंकजं भवेत्।
कादिठान्तार्णसंस्थानं द्वादशारसमन्वितम्।
अतिशोणं वायुबीजं प्रसादस्थानमीरितम्।।१०९।।
अनाहत नाम का चतुर्थ पद्म हृदय के स्थान पर स्थित है। इसके क से लेकर ठ (क,ख,ग,घ,ङ,च,छ,ज,झ,ज,ट,ठ) तक बारह वर्णाक्षरों से समन्वित बारह दल हैं। इस प्रासाद स्थल पर गहरे लाल रंग का रक्त और वायु बीज का संग्रहण, समामेलन तथा संचारण होता है।।109।।
पद्मस्थं तत्परं तेजो बाणलिंग प्रकीर्तितम्।
यस्य स्मरणमात्रोण दृष्टदृष्टफलं लभेत्।।११०।।
इस पद्म चक्र में सदैव तत्पर कीर्तिवान बाणलिंग (स्वयं-भू-शिव) स्थित हैं, जिनके स्मरण मात्र से सभी दृष्ट और अदृष्ट फल प्राप्त होते हैं।।110।।

6. आज्ञा पद्म चक्र

आज्ञापद्मं भुरवोर्मध्ये हक्षोपेतं द्विपत्राकम्।

शुक्लाभं तन्महाकालः सिद्धो देव्यत्रा हाकिनी।।१२२।।
भौहों के मध्य में दो दलों का शुक्ल (श्वेत और शुद्ध) आभा वाला ह और क्ष वर्णाक्षरों से युक्त आज्ञा नामक पद्म है। महाकाल यहां सिद्ध के रूप में स्थित हैं और हाकिनी इस पद्म चक्र की अधिष्ठात्रा देवी हैं।।122।।
शरच्चन्द्रनिभं तत्राक्षरवीज विजृम्भितम्।
पुमान् परमहंसोऽम यज्ज्ञात्वा नावसीदति।।१२३।।
शरद् चंद्र के समान आभामान अक्षर वीज (ओम) वहां आलस्यावस्था में स्थित है, जिसके जान लेने पर परम हंस पुरुष सभी कष्टों को त्याग देता है।।123।।
इह स्थितः सदा योगी ध्यानं कुर्यान्निरन्तरम्।
तदा करोति प्रतिमां प्रतिजापमनर्थवत्।।१४०।।
जो योगी इस पद्म का निरंतर ध्यान करते हैं उनके लिय मूर्ति पूजन निरर्थक है।।140।।
यक्षराक्षसगन्धर्वा अप्सरोगणकिन्नराः।
सेवन्ते चरणौ तस्य सर्वे तस्य वशानुगाः।।१४१।।
यक्ष, राक्षस, गंधर्व, अप्सराएं, गणिकाएं तथा किन्नर उसके (योगियों के) वशी भूत होकर उनके चरणों की सेवा में लगे रहते हैं।।141।।

7. सहस्रार पद्म चक्र

अत ऊर्ध्वं तालुमूले सहस्रारं सरोरुहम्।
अस्ति यत्रा सुषुम्णाया मूलं सविवरं स्थितम्।।१५०।।
तालू मूल के ऊपर एक और सहस्रार (सहस्रदल वाला) पद्म है। यहां सुषुम्ना नाड़ी का मूल विवर सहित स्थित है।।150।।
मूलपद्मस्थिता योनिर्वामदक्षिणकोणतः।
इडापिंगलयोर्मध्ये सुषुम्णा योनिमध्यगा।।१६१।।
मूलाधार पद्म में विद्यमान योनि के वाम भाग में इडा और दक्षिण भाग में पिंगला नाड़ियों की स्थिति है। इन्हीं दोनों नाड़ियों के मध्य में स्थित योनि में सुषुम्ना का स्थान है।।161।।
ब्रह्मरन्ध्रन्तु तत्रौव सुषुम्णाधारमण्डले।
यो जानाति स मुक्तः स्यात्कर्मबंधाद्विचक्षणः ।।१६२।।
इस सुषुम्ना के आधार क्षेत्र में ब्रह्म रंध्र है, जो विद्वान इसे जान लेता है वह कर्म बंधन से मुक्त हो जाता है।।162।।
ब्रह्मरन्ध्रमुखे तासां संगमः स्यादसंशयः।
तस्मिन्स्नानेस्ताकानीमुक्तिः स्यादविरोधतः।।१६३।।
ब्रह्म रंध्र में इन तीनों का संगम होता है। इसमें कोई संशय नहीं होना चाहिए। इसके ज्ञान में स्नान करने वाले स्नातक की मुक्ति का कोई विरोध नहीं करता। गंगा, यमुना और सरस्वती इन्हीं त्रिनाड़ियों की मिथक हैं।।163।।

उपर्युक्त सभी चक्रों के सोदाहरण आध्यात्मिक विवेचन से सप्रमाण सिद्ध हो जाता है कि देवनागरी के स्वरों और व्यंजनों का सम्पृक्त सम्बन्ध ब्रह्म-ज्ञान की चरम स्थिति से भी है। यही कारण है कि जब अध्यात्म सन्त गुरु अपने शिष्य को उस ब्रह्म शक्ति का अनुभव कराने योग्य समझ लेते हैं, तो उसे पद्मचक्रों में स्थित वर्णों से सम्पृक्त शब्द-मंत्र का जाप कराते हैं, जिसके फलस्वरूप सतगुरु के मार्ग-दर्शन में वह ब्रह्म की अनुभूति करता है और उसका जीवन ही बदल जाता है। फिर वह सन्त कबीर की अनुभव वाणी 'ज्यों तिल मांहीं तेल है, ज्यों चकमक में आग। तेरा सांई तुज्झ में जाग सके तो जाग।' की ब्रह्मानुभूति अलौलिक आनन्द के साथ करता है।

इतना ही नहीं, देवनागरी लिपि के स्वर और व्यंजन सर्वदा साधक की अन्तश्चेतना के रूप में उसे परमाद्वैत की अनुभूति हेतु उसके काया-देवल में अनन्त परमानन्द का संचार करते रहते हैं। परिणाम स्वरूप गीत और संगीत की द्विवेणी के आनन्दातिरके में भक्त जब भाव-विभोर होकर नृत्य करने लगता है, तब उसके इन चक्रों में स्थित शक्तियाँ शब्द-ब्रह्म का निस्सीम अनुभव करने लगती हैं और साधक भी उस अनुभूति को रोक नहीं पाता है। भाषा शास्त्रियों की ऐसी मान्यता है कि ब्राह्मी लिपि का निर्माण ब्रह्मा जी द्वारा किया गया है। उसकी अजस्र ऊर्जा एवं शक्ति, जिसके द्वारा साधक परमब्रह्म के ज्ञान-प्रकाश का अनुभव करते हैं और इसकी अलौकिक शक्ति से साक्षात्कार कर धन्य हो जाते हैं। मैं देवनागरी लिपि के इस ब्रह्मत्व को शत्-शत् प्रणाम करता हूँ।

लघुकथा

डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल

अंधेरा-उजाला

"देख रही हो तुम...! इधर बाजार और लगदक करते शोरूमों में भीड़ ही भीड़... कितने गुलजार है ये सब...! और उधर देखो... दीपक, धानी बताशे, गुजरिया, मिट्टी के खिलौने, लक्ष्मी जी की मूर्ति और घर के साज श्रृंगार की चीजें बेचने वाले बैठे हैं... इक्के दुक्के ग्राहकों के साथ!.. और 'वोकल फार लोकल ' का कितना हल्ला मचाया जा रहा है!"

"आप देख तो रहे हैं! आज चारों ओर हल्ला ही तो मचाया जाता है....शब्दों की जुगाली ही तो हो रही है!"

"चलो उधर दीप जलाएं, जिधर अंधेरा है।"

दोनों फुटपाथ की ओर चल दिए।

संपर्क-390 सुदामा नगर, सेक्टर ए ,अन्नपूर्णा मार्ग, इंदौर मध्य प्रदेश, 452009 मोबाइल नंबर 99775 47030

राजेश कुमार सिन्हा
खार (वेस्ट), मुंबई 52
rajesh.hindi18@gmail.com

साहित्य संस्कृति और आध्यात्म क्या एक दूसरे के पूरक हैं

साहित्य, संस्कृति, और आध्यात्म तीनों हमारे मानव जीवन के अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू हैं। ये न केवल व्यक्ति के मानसिक और आध्यात्मिक विकास में योगदान देते हैं, बल्कि समाज की पहचान, परंपराओं और मूल्यों को भी संरक्षित करते हैं। इन तीनों का परस्पर संबंध हमारे जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है—चाहे वह मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हो, समाज की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, या आत्मा या मोक्ष की खोज।साहित्य को जीवन का दर्पण कहा गया है। यह न केवल यथार्थ का वर्णन करता है, बल्कि विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को भी अभिव्यक्त करता है। साहित्य का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन के विभिन्न पक्षों की व्याख्या करना और उन्हें शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करना है। साहित्य की विद्या और उसका स्वरूप अलग अलग होता है।काव्य को भावनाओं की तीव्र और गहन अभिव्यक्ति के रूप में जाना जाता है।उदाहरणस्वरूप, तुलसीदास का रामचरितमानस न केवल धार्मिक भावनाओं को अभिव्यक्त करता है, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों का भी प्रचार करता है।कहानी और उपन्यास एक ऐसा दस्तावेज होता है जो मानव जीवन से जुड़ी कहानियाँ और अनुभव, जो समाज की समस्याओं, संघर्षों और बदलावों को प्रतिबिंबित करते हैं ,को विशेष शैली और अंदाज़ में प्रस्तुत करता है।प्रेमचंद के उपन्यास "गोदान" में ग्रामीण भारत की सामाजिक वास्तविकताओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है।

नाटक नाट्य साहित्य सांस्कृतिक परंपराओं का वाहक है। कालिदास का "अभिज्ञान शाकुंतलम"न केवल काव्यात्मक सौंदर्य से भरपूर है, बल्कि सांस्कृतिक मूल्य भी संजोता है।

साहित्य और समाज एक-दूसरे के गहरे मित्र हैं। साहित्य समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार करता है और समाज को एक दिशा प्रदान करता है। प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक साहित्य तक, हर युग में साहित्य ने समाज में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संस्कृति किसी भी समाज की आत्मा होती है । इसमें समाज के रीति-रिवाज, परंपराएँ, कला, भाषा, धर्म और सामाजिक मूल्य शामिल होते हैं। यह व्यक्ति और समाज के सामूहिक अनुभवों का परिणाम है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित होती रहती है। संस्कृति को पुनः भौतिक और अभौतिक दो रूपों में देखा जा सकता है।भौतिक संस्कृति में समाज की भौतिक उपलब्धियाँ आती हैं, जैसे भवन, वस्त्र, उपकरण, कला के साधन आदि शामिल होती हैं और अभौतिक संस्कृति में भाषा, साहित्य, धर्म, नैतिक मूल्य, और विश्वास प्रणाली शामिल होती है।

साहित्य संस्कृति का वाहक होता है। किसी भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर को साहित्य के माध्यम से समझा जा सकता है। संस्कृत साहित्य में प्राचीन भारतीय परंपराओं और धार्मिक जीवन का विस्तार से वर्णन मिलता है, जबकि आधुनिक साहित्य समाज में आए बदलावों और नई सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को दर्शाता है।

उदाहरण के लिए, भक्ति साहित्य न केवल धार्मिक अनुभवों का संप्रेषण करता है, बल्कि वह उस समय के समाज और संस्कृति को भी चित्रित करता है। तुलसीदास, सूरदास और मीरा के काव्य न केवल भक्ति भावना को व्यक्त करते हैं, बल्कि समाज के सांस्कृतिक परिवेश का भी प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं।

आध्यात्म अर्थात आत्मा की खोज शब्द आत्मा या आत्मस्वरूप से जुड़ा हुआ है। यह व्यक्ति को उसकी आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझने की प्रेरणा देता है। इसका उद्देश्य भौतिक जीवन से परे जाकर व्यक्ति को आंतरिक शांति और आत्मबोध प्रदान करना है। आध्यात्म या आध्यात्मिकता केवल धर्म तक सीमित नहीं है; यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपनी आत्मा की गहराई में जाने और सत्य की खोज करने का अवसर देती है। विभिन्न दर्शनों में यह प्रवृत्ति भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई देती है—जैसे योग, ध्यान, भक्ति, और ज्ञानमार्ग।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में वेदांत, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, और सूफीवाद जैसे विभिन्न पंथों ने आत्म-ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार पर जोर दिया है। गीता में

वर्णित निष्काम कर्मयोग, भक्ति, और ज्ञान का मार्ग, व्यक्ति को जीवन की कठिनाइयों से ऊपर उठने और मोक्ष प्राप्ति की प्रेरणा देता है।

आध्यात्मिकता साहित्य का एक अनिवार्य अंग रही है। धार्मिक ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत, और गीता न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा देते हैं, बल्कि साहित्यिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। कबीर और रैदास जैसे संत कवियों का साहित्य भी इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि साहित्यिक अभिव्यक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक अनुभवों को साझा किया जा सकता है। उनकी रचनाओं में सत्य, प्रेम, और करुणा के संदेश निहित हैं, जो आज भी प्रासंगिक है।. साहित्य, संस्कृति और आध्यात्म का परस्पर संबंध होता है। दूसरे शब्दों में साहित्य, संस्कृति और आध्यात्म के बीच गहरा संबंध है। ये तीनों मिलकर व्यक्ति और समाज के विकास में योगदान देते हैं। साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं, और आध्यात्म इन दोनों को एक गहरा आधार प्रदान करता है।

भारतीय साहित्य में आध्यात्मिकता का गहन प्रभाव देखा जा सकता है। यह केवल धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के हर पहलू में देखा जा सकता है—प्रेम, करुणा, दया, और सेवा आदि के रूप में।आध्यात्म और संस्कृति में धार्मिक अनुष्ठान, त्योहार, और परंपराएँ व्यक्ति को आध्यात्मिक अनुभव से जोड़ती हैं। दिवाली, होली, ईद, और क्रिसमस जैसे त्योहार न केवल सांस्कृतिक पर्व हैं, बल्कि इनमें आध्यात्मिक संदेश भी निहित हैं।

साहित्य में संस्कृति और आध्यात्म का समन्वय भी होता है।कालिदास, तुलसीदास, और कबीर जैसे रचनाकारों के साहित्य में आध्यात्मिकता और संस्कृति का समन्वय देखने को मिलता है। तुलसीदास का रामचरितमानस भक्ति का गहन उदाहरण है, जिसमें धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों का सुंदर संयोजन मिलता है।

इतिहास साक्षी है कि प्राचीन समय में अर्थात आधुनिक युग में भी साहित्य, संस्कृति और आध्यात्म की प्रासंगिकता बनी हुई है। वैश्वीकरण और भौतिकतावादी प्रवृत्तियों के कारण भले ही जीवन शैली में परिवर्तन आया है, लेकिन मानसिक शांति और आत्मबोध की आवश्यकता आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

साहित्य आज भी समाज को दिशा देने का कार्य कर रहा है। समकालीन साहित्य पर्यावरणीय संकट, मानवीय अधिकार, और सामाजिक अन्याय जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में मदद कर रहा है। हमने अपने अनुभवों से देखा है कि आधुनिक समाज में सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है, ताकि हम अपनी जड़ों से जुड़े रहें। भारतीय संस्कृति में निहित विविधता और सहिष्णुता आज भी समाज को एकता के सूत्र में बांधे रखने में सहायक है। आज के तनावपूर्ण जीवन में आध्यात्मिकता मानसिक शांति का मार्ग प्रदान करती है। योग और ध्यान जैसी आध्यात्मिक प्रथाएँ वैश्विक स्तर पर स्वीकार की जा रही है।

साहित्य, संस्कृति और आध्यात्म का संबंध परस्पर पूरक और अविभाज्य है। साहित्य समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और आध्यात्मिक अनुभवों को साझा करने का माध्यम है। संस्कृति समाज को उसकी पहचान और दिशा प्रदान करती है, जबकि आध्यात्मिकता व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाती है।इन तीनों का संतुलन व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार होता है और आध्यात्मिकता व्यक्ति को आंतरिक शांति की ओर ले जाती है। आधुनिक युग में भी इन तीनों का महत्व अक्षुण्ण है और किसी न किसी रूप में ये एक दूसरे के पूरक भी हैं।

डॉ. सतीश "बब्बा"

जाने किसकी नजर लगी

जाने किसकी नजर लगी,
गांव की नदिया सूख गई,
चौपालें अब नहीं बचीं,
आंगन, खटिया टूट गई!

जाने किसकी नजर लगी,
गांव की पगडंडी नहीं रही,
सड़कों में सरसों बिखर गए,
माटी की मटकी नहीं रही!

जाने किसकी नजर लगी,
सदाबिरज सारंगा, कालादेव,
किस्से कहानियां भूल गए,
अब बुढ़ऊ की इज्जत नहीं रही!

जाने किसकी नजर लगी,
मोटा अनाज, सांवां, कोदई,
बरबटी की कोहरी नहीं रही,
अब अहीर की कूकी नहीं रही!

जाने किसकी नजर लगी,
मोबाइल सौतन हो गई,
अपनापन, भाईचारा सबकुछ,
किताब, पोथी नहीं रही!!

(चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश)

दुर्गेश मोहन
ग्राम-राघोपुर,पोस्ट-बिहटा
जिला-पटना(बिहार)पिन-801103
durgeshmohan100@gmail.com

महामूर्ख सम्मेलन के संस्थापक : विश्वनाथ शुक्ल' चंचल

भारतीय साहित्य एवं पत्रकारिता को आभामंडित कर ज्ञान की ज्योति जलाने में कामयाब साहित्यकार थे _विश्वनाथ शुक्ल 'चंचल '।इनसे पाठकगण प्रभावित होकर ज्ञानार्जन और मनोरंजन प्राप्त करते थे ।चंचल जी का जन्म 20 जून ,1936 में हाजीगंज ,पटना सिटी में हुआ था। इनके पिता का नाम श्रीनाथ शुक्ल था।इनके बड़े चाचा कन्हैया लाल शुक्ल थे।विश्वनाथ शुक्ल' चंचल' की शिक्षा इंटरमीडिएट तक हुई।ये पत्रकार,साहित्यकार और रंगकर्मी थे।ये सर्वप्रथम हिंदुस्तान समाचार में संवाददाता(पटना सिटी)के रूप में नियुक्त हुए ।पुनः समाचार भारतीय (बिहार के प्रमुख) बने। इन्होंने आत्मकथा ,आर्यावर्त के माध्यम से पत्रकारिता की सेवा की ।इनकी प्रथम रचना साप्ताहिक पत्र हिंदुस्तान(दिल्ली) में प्रकाशित हुई थी। साप्ताहिक पत्रिका, धर्मयुग (मुंबई),मंगलदीप पत्रिका(मुंबई), किशोर पत्रिका(पटना)इत्यादि में रचना लगातार छपती थी ।चंचल जी द्वारा रंगवाणी,इंडियन डेमोक्रेट और मातृभूमि का संपादन किया गया । रंगवाणी साप्ताहिक पत्र हिंदी का शुभारंभ 1965 में पटना सिटी में हुआ, जो निरंतर 11 वर्षों तक प्रकाशित होता रहा। इंडियन डेमोक्रेट अंग्रेजी की स्थापना 1952 में हुई ।

सभी पत्र लोकप्रिय रहे ,लेकिन रंगवाणी काफी प्रसिद्धि पाई। इनके द्वारा लिखित पत्र _पत्रिकाओं में लगभग 2000 रचनाएं प्रकाशित हुई ,जो साहित्य की शोभा बढ़ाई और धरोहर साबित हुई ।इनकी लिखी लगभग 200 नाटकों का प्रसारण आकाशवाणी पटना से हुई थी ,जो श्रोताओं के बीच काफी प्रशंसनीय थी। आकाशवाणी पटना और दूरदर्शन पटना से प्रसारित गणेश वंदना प्रसिद्ध थी ।इनके द्वारा रचित 'मतलबी दोस्तों से कैसे मिले' (हास्य समाचार पत्र आज में साप्ताहिक धारावाहिक में व्यंग्य रचना 'डाल _डाल के पात ' निकली थी ,जो पाठकों के दिलों पर छा गई थी ।इसके अतिरिक्त रामचंद्र जायसवाल ,डॉक्टर पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा, (जीवनी),पुष्टिमार्ग का हवेली संगीत (निबंध), दीपावली ,कारगिल(कविता) संबंधित आदि उत्कृष्ट रचनाएं थीं, जो पाठकों के मध्य सराही गई ।चंचल जी लगभग छः दशक तक पत्रकारिता का अहर्निश सेवा किए।इन्होंने विभिन्न विधाओं में रचनाओं का सृजन किया ।जैसे_आलेख ,कविता ,संस्मरण ,नाटक, व्यंग्य इत्यादि।इन्होंने रंगमंच की स्थापना 1954 में हाजीगंज, पटना सिटी में किया। ये संस्था के संस्थापक _निदेशक थे। यह संस्था साहित्य एवं कला संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र था ।विश्वनाथ शुक्ल ' चंचल 'कौमुदी महोत्सव और महामूर्ख सम्मेलन के संस्थापक थे । ये निष्ठापूर्वक इसे प्रति वर्ष मनाया करते थे, जो ऐतिहासिक था ।इन दोनों आयोजनों में चंचल जी शुभारंभ स्वरचित गणेश वंदना से करते थे।जिसके बोल थे _या गणेश बुद्धि हर ली जै ,क्षण में मेरा सब कुछ हर ली जै ...इस कार्यक्रम में महान हस्तियां भाग ले चुके थे,जिसमें कई सम्मानित भी हुए थे।जैसे_ बिस्मिल्लाह खां ,गिरिजा देवी ,शारदा सिन्हा, विंध्यवासिनी देवी, श्यामदास मिश्र, अजीत कुमार अकेला, अनूप जलोटा ,डॉक्टर श्रीरंजन सूरिदेव ,राधामोहन,दामोदर प्रसाद अम्बष्ठ,नंदकिशोर यादव, श्याम रजक ,डॉक्टर जगन्नाथ मिश्रा ,डॉक्टर शैलेंद्रनाथ श्रीवास्तव ,केशव कुमार सोनी, राजेंद्र प्रसाद ' मंजुल 'इत्यादि। इस प्रकार यह संस्था अपने आप में अनूठा था ।ये प्रतिष्ठित पत्र_ पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों को लाभान्वित किए ।आप आकाशवाणी पटना और दूरदर्शन पटना से कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जो सराहनीय रहा

चंचल जी अपने चाचा जगन्नाथ शुक्ल से प्रभावित एवं प्रेरित होकर सफल साहित्यकार_ रंगकर्मी बने। इन पर अपने चाचा की अमिट छाप पड़ी।इनके चाचा जगन्नाथ शुक्ल बिहार की प्रथम भोजपुरी फिल्म गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो में मास्टर साहब का अभिनय कर प्रसिद्धि पाए ।ये आकाशवाणी पटना से प्रसारित कार्यक्रम चौपाल में पटवारी जी के किरदार को निभाए ,जो प्रशंसनीय थी। इनके तीन पुत्र तथा तीन पुत्रियां हैं ।इनके दो पुत्र पत्रकारिता से संबद्ध हैं ।वरीय पत्रकार रजनीकांत शुक्ल (आज ,पटना) एवं वरीय पत्रकार रविकांत शुक्ल (राष्ट्रीय सहारा, पटना)में अपना योगदान दे रहे हैं ।चंचल जी द्वारा लिखित आनंद भवन से अखंड भवन (आलेख) काफी प्रशंसनीय रही ।

महामूर्ख सम्मेलन के स्वर्ण जयंती पर हॉलीवुड अमेरिका से पटना टीम विश्वनाथ शुक्ल 'चंचल 'से मिली थी ।चंचल जी एवं महामूर्ख सम्मेलन को आधार बनाकर एक वीडियो कैसे तैयार किया गया ,जो दूरदर्शन लंदन से प्रसारित हुआ ,जो हर्ष एवं गर्व की बात है ।इन्हें बहुत पुरस्कार/ सम्मान से सम्मानित किया गया, जो प्रमुख थे _भूतपूर्व तत्कालीन राज्यपाल सुंदर सिंह भंडारी द्वारा नारायणी कला इंटर विद्यालय के शताब्दी समारोह में सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण महा संगठन द्वारा बिहार गौरव सम्मान, पाटलिपुत्र परिषद द्वारा कौमुदी रत्न सम्मान ,आनंद शास्त्री हिंदी राष्ट्रीय विकास संस्थान द्वारा बिहार गौरव सम्मान, नव शक्ति निकेतन द्वारा साहित्य एवं समाज सेवा सम्मान ,संस्कार भारती के अमृत महोत्सव में संगीत, साहित्य एवं कला के लिए पद्मश्री शैलेंद्रनाथ श्रीवास्तव द्वारा सम्मान, कौमुदी महोत्सव 2017 लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, 15वां पाटलिपुत्र साहित्य महोत्सव में सुरेंद्र प्रताप सिंह पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान द्वारा सम्मान ,शाद अजीमाबादी स्टडी सर्किल द्वारा साहित्य एवं समाज सेवा सम्मान, मानवोदय संस्था के अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद 'मंजुल ' एवं महासचिव प्रभात कुमार धवन के द्वारा संयुक्त रूप से पत्रकारिता एवं साहित्य के क्षेत्र में साधना सम्मान, श्री छोटी पटनदेवी शक्तिपीठ द्वारा पत्रकारिता एवं साहित्य के लिए 2022में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा पत्रकारिता एवं साहित्य के लिए बिहार का सबसे बड़ा सम्मान 2023 में मरणोपरांत लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड ,जो उनके पुत्र रविकांत शुक्ल ने ग्रहण किया।चंचल जी साहित्य एवं पत्रकारिता के आधार स्तंभ थे।ये हमारे प्रेरणास्रोत थे ।इनका देहावसान 11 दिसंबर, 2022 को करीब 90 वर्ष की अवस्था में हाजीगंज ,पटना सिटी स्थित अपने आवास पर हो गया ।हमें इनसे सीख लेनी चाहिए ।आज ये हमारे बीच नहीं हैं ,लेकिन कीर्ति हमेशा के लिए हमारे जेहन में रहेंगे । फूल सूखकर बिखर गए ,लेकिन सुवास बनी रहे ।पत्रकार विश्वनाथ शुक्ल 'चंचल' के प्रति स्वरचित श्रद्धांजलि समर्पित है -

चंचल जी का पत्रकारिता में था अहम योगदान ।
इन्होंने बनाई अपनी अमिट पहचान।
साहित्य सृजित करकिए यशोगान।
और ये हमेशा -हमेशा के लिए हम सबों के रहेंगे वरदान।

रेखा शर्मा " नीरू "

"घर की स्त्रियां"

सुबह उठता हूँ तो
गीत भजन गुनगुनाती घर की स्त्रियां
किसी देवी से कम नहीं लगती मुझे

लगता है मानो वो साक्षात रिद्धि सिद्धि को आमंत्रित कर
घर में समृद्धि ला रही हैं

खिलखिलाती गुनगुनाती स्त्रियां
घर को हरा भरा रखती हैं
वो घर को हर तरह की अला बला से
बचाती मालूम होती हैं

सुबह मुंह अंधेरे कुछ घरों की स्त्रियां
अपने मुख्य द्वार के दोनों और शुद्ध जल से सींचती हैं
वो सींचती हैं गृहस्थ की बढ़ती बेल (नई पीढ़ी)

घर के सामने बांस की झाड़ू से बुहारना
उनके लिए देवी देवताओं को निमंत्रण देना है
ऐसा सब कर स्त्रियां बचाए रखती हैं
बहुत हद तक अपने परिवार को
बुरी नज़र से
बन कर घर का नज़र बट्टू
वास्तव में घर की स्त्रियां घर को घर नहीं
देवालय बनाती हैं

(बसंत विहार , ब्रह्म कुमारी गली , गन्नौर सोनीपत 131001
rekharani66635@gmail.com)

मनीषा आवले चौगांवकर
दिल्ली
manishasameerc@gmail.com

आज की वैदेही

आज समय का तेवर बदलता जा रहा है। आज उन्हें छुईमुई सी जिंदगी नहीं है पसंद।आसमान में अपने मजबूत पंखो से पंछी सी उड़ने का सपना देखती है पर चिड़िया होना नहीं पसंद क्यों कि वो ऊंचाई पर जाकर रूक नहीं सकती। तितलियां के पीछे आज भी दौड़ना भाता है लेकिन खुद तितली कहलाना कहा पसंद है। वो दौड़ना चाहती है और उन सभी किताबें को भी पढ़ना का पथ प्रशस्त कर रही है। उसमें दर्ज केवल अक्षरों के साथ नहीं बल्कि उन को समझ के साथ भी।इस की शुरुआत हो चुकी है और निरंतरता जारी रहेगी।।

हम पंछी उन्मुक्त उस आसमान के
पिंजरे में क्यूं रहना है !
नाद कहीं खो जाएगा कंठ अवरूद्ध
कनक तीलियों से टकराकर वो पंख बिखर से जायेंगे !
स्वर्ण श्रृंखला का वो बंधन है जो स्व की भाषा को भूला है
कैसा है ये छलावा बस सपने में
तरू की शाखा पर झूला जीवन !
देह में जब पंखों का साथ आस है जीवन कि
फिर क्यूं न पिंजरे के दरवाजे खोल आसमान छूले !!

परवरिश के दौरान बचपन से ही मिलती सीख कहीं न कहीं सकारात्मक और नकारात्मक तत्वों के बीज हमारे मन बो देती है । जिससे सोच का दायरा एक सीमित परिधि एवं संस्कार समझ में अटक कर रहता है।यह इतने प्रभावी और योजनाबद्ध प्रावधान से होता है कि क ई बार स्त्री स्त्री के विपरित खड़ी दिखाई देती है।तय नियमों में चलना ही उसकी मर्जी से हो रहा है यह स्पष्ट नहीं हो पाता। इसमें शिक्षा या शिक्षित होना साथ नहीं देता है। क्योंकि पारंपरिक बातें शिक्षा की घुट्टी जो पिलायी है वो अपने ढंग से समझ बनाती है। सारी कड़ियां खराब या समसमायिक नहीं है ऐसा मेरा मानना है पर सडी गली सोच को समाप्त कर समझ का दायरा विस्तृत होना चाहिए जिससे दोनों ही पुरूष और महिला सखियों में सामांजस्य सम्मान एक दूसरे के प्रति बेहतर होता जायेगा।आज के समय में डिग्रियां मैंने का चलन बढ़ता जा रहा है पर स्व डिफेंस में यानि आत्मरक्षा में अभी भी पिछड़े हुए हुए हैं। फिर क्यूं अपराध मानसिक प्रताड़नाओं के रूप में कभी चीर हरण तो कभी व्यंग्यात्मक लहजे में तंज कसने जैसे घटिया विकृतियों घटनाएं सुनने में आती है।

हम आप आज एलीट क्लास में शामिल हो चुके हैं।जो पहले चर्चा के विपय केवल स्त्री-पुरुष मे या स्त्री स्त्रियों में फुसफुसा कर होता थे वहीं अब हमारे ड्राइंग हाल तक पहुंच चुकी है ये बहस यहां से धीरे धीरे चौराहे और सोशल साइट्स पर भी सिक्का जमा रही है। कितनी सार्थकता और निर्थकता है इन मुद्दों के चर्वीचरवण में। क्यों कि अंधकार किसी कोने में उतना ही तेजी से पांव पसारे बढ़ रहा है। अपराध का रूप वीभत्स होते जा रहा है। महिलाओं और बेटियों का संघर्ष मानसिक और भावनात्मक ज्यादा हो चला है। ऊपरी दिखावा करना लोगो ने सीख लिया है इसलिए चमकते शीशे वाले घरों में में ज्यादा मानसिक संकीर्णताओं का सामना करना पड़ ता है दरवाजे के पीछे चुपके चुपके कितने दम घोंटते रिश्तों और सिसकियां है क्योंकि डिग्री के साथ सार्थक सोच यानि आर्थिक स्वातंत्र्य भी जरूरी है।

आखिर समझ ही है क्या !कहीं किताबों में उल्लेखित है या फिर सिर्फ काले स्याही की लेखनी से लिखे। शिक्षा हमें बेहतर जिंदगी की ओर ले जाती है सोच समझ को परिष्कृत करती है पर इसके लिए हमें पूर्वाग्रह पारंपरिक सांचे का कुछ बोझ उतारना भी जरूरी होता है।महज पढ़ना नहीं उसे समयानुसार बदलाव दृष्टिकोण में लाना भी जरूरी है।जब भी समाज की समझ परिष्कृत होगी उसे असल स्वातंत्र्य मतलब मानसिक रूप से मूल्यांकन का नजरिया मिलता है।उसका टकराव समाज के पुराने नीति नियमों से होंगे अक्सर कहा जाता है कि स्त्री ही जिम्मेदार है अपने प्रति । शायद सच्चाई का गहरा आकलन करें तो समझ आता है कि जो पढाई पूर्व ग्रंथियों के साथ ली गयी थी उसमें पुराने पंरपरागत तरीके का समावेश भी है जो सही है पर इसमें समय के साथ बदलाव जरूरी होता है। यही से पुरानी रवायतें टूटना जरूरी है। आज के समय में क ई लडकीयां प्रौफैशनल कार्यक्षेत्र को चुन रही है चुनौती दे रही है अपने से ग्रसित पूर्वाग्रह को।जब कभी नया कदम नया कानून नया आयाम सामने आया कि उसे स्वीकार्यता देने में समय लगता ही है।

आखिर शक्तिशाली स्त्री को मायने क्या हैं? इसको दिखाने के लिए इन दिनों कुछ विज्ञापन दुनिया सोशल मीडिया में में एक अलग ही शोर मचा है। इसमें ट्रेडीशन आधुनिक विचारों मिथ सबका घाल मेल किया जा रहा है। चमचम गाडियां ब्रांडेड कपड़े और मोबाइल फोन चश्मे यानि महिलाओं के माध्यम से महिलाओं के मन में पैठ बनायी जा रही है। क्या पश्चिम से आकर्षित महिलाओं की छबि ही सशक्त महिला होने का प्रमाण देती है।आजकल दिग-दिगंत स्त्रियों की आवाज से ही गूंजित हो रहे हैं।वो टीवी पर लोकसभा में कहीं विपक्ष प्रवक्ता रूप में कभी पुलिस सेना वर्दी में भी।यह शिक्षित औरतों का उभार है । आज भी हम अपने आसपास हर जगह जगह होते देखते या महसूस कर सकते हैं।

एक महिलाओं के अंतर्राष्ट्रीय बहनापे की बात की जाती है।यह भी कहा समझा गया कि महिलाएं उच्च पदों पर आसीन होती है तो अपने स्वयं की मदद बेहतर तरीके से कर सकेंगी।पर यह उक्ति सही चरितार्थ करते लगती है नारी नारी को बर्दाश्त नहीं कर पाती है। प्रमोशन में नये हथकंडे साथी सखियों के खिलाफ और यदि गलती से में भी पुरुष बांस हुआ तो फिर उस महिला के चरित्र पर अंगुली उठाने वाली स्त्री क्यों? उसकी तकनीकी ज्ञान का सम्मान होना चाहिए पर अक्सर देखा गया है कि पुरूषों का समर्थन ज्यादा मिलता है बजाय स्त्रियों के। यह मनोग्रंथि मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसमें महिला को अपनी स्वातंत्र्य और रूतबा के छीनने का डर बना होता है।ये बना दिया जाता है परंपरागत सोच समझ से जहां । आज भी स्त्री का एक समूह गासिप में उलझा हुआ होता है और यही कहीं न कहीं अपने पीछे छूटने पर अफवाहों अटकलें का बाजार का हिस्सा बनता है।इस दौर में इनकी हिस्सेदारी सोशल मीडिया और मार्केटिंग की दुनिया में सबसे ज्यादा होने से यही कुछ प्रतिशत आज की महिलाओं को प्रतिनिधित्व देती है। तथापि बदलाव का समय है कुछ प्रतिशत अभी भी अपने सोच शिक्षा का उपयोग सही जगह पर करके अपने मुकाम बना रही है उनके बनाए गए मापदंड का पैमाना भी भविष्य का स्त्री समाज की छवि देता है।

हाशिए पर खड़ी वो स्त्री ,सदियों से अड़ी खड़ी
खाली सुनी आंखों से निहारे उस पथ को.....
अदृश्य जगत में उलझी!
खोजना चाहती हूं समस्त अपना सूनापन
कहीं गुम हुई अपनी वो विस्तृत चंचलता बचपना ....
सच साधना चाहती हूं !लांघना चाहती कुछ मर्यादाएं वर्जना
अपनी प्रतिछाया संग तोड़कर बेड़ियों को....
परिंदों संग आसमां पर छाये मुकाम!
देहरी के उस पार समरूप हो
ताकि पा सकें अपने हिस्से की वो धूप वो अंबर की छांव !!

एक दौर था जब स्वायत्त और स्वातंत्र्य की बातें होती थीं। सोचना बहुत मामले में बेमानी सा था। पर आजादी के पहिले कुछ साहित्य और समाजसेवी वर्ग ने राजनीति साहित्य पटल पर इसकी चर्चा आरंभ की। महाकवि प्रसाद की रचित रचना में विवाहिता ध्रुवस्वामानी अपने पति को छोड़कर चंद्रगुप्त का वरण करने का सांस करती है।उस दौर के नैतिकता वादी समाज में यह नतशया निश्चय आजादी को लेकर रहा। लेकिन। आज के समय में पहले से अलग दुनिया हो गई है।आज कोई भी महिला लड़की अपने जीवन साथी का चुनाव करती है। एक समय में उसके चरित्र पर अंगुली उठा दी जाती थी पर गलत अवधारणा के साथ महिलाओं का चलना भी अन्य स्वसमाज की हमेशा से ही कटघरे में खड़ा कर देता है। अंततः के ई बार कुछ की चूक या सोच की विविधता दूसरे के लिए अभिशप्त हो जाती है। आज का समय जो दिखता है वो बिकता पर आधारित हो चला है। लोग दिमाग और समय व्यर्थ नहीं करना चाहते हैं।वो इंस्टेंट परिणाम पर झुकाव ज्यादा हो गया है। कुछ स्त्री वादी इस विचार के कि महिला को केवल सौंदर्य पर ही फोकस होना चाहिए ये उसकी बुद्धि ज्ञान के साथ खिलवाड़ हो रहा है ।उसके खिलाफत में खड़ी हो गई हो। पर विज्ञापन दुनिया के लिए कुछ स्त्रियां जो अपने को स्थापित करना चाहती है नयै नये लुभावने आरके साथ बाजार में हाजिर है। यहां तक भाव भावनाओं प्यार का भी महत्व नहीं है कोई लगाव या केयर नहीं बस कोई हीरा कभी बैंक पालिसी या जड़ाऊ कंगन हार यानि चिरपरिचित छबि कि जिसे गहने हैही प्रिय है। पैसा के अलावा और कुछ नहीं सूझता दिखाई देता है।और हीरा मतलब एम्पावर्ड महिला यानि शक्ति शाली महिला। महिला सजी संवरेगी नहीं तो कंपनियों का दिवाला पिटना तय है औरतौ की शिक्षा बढ़ी है ओहदे पर हासिल हुये है साथ साथ मीडिया का दखल बड़ा ही है।इसके साथ पश्चिम का आकर्षण वेशभूषा फिटनेस स्वयं की स्वीकार्यता और अपनी विचारधारा ।अर्थात एक महिला का सशक्त होने का मतलब ऊपर लिखी बातों का सम्मिश्रण होना हो गया है।आज महिलाएं की छवि बड़े गजट ,बड़ी घड़ी ,लग्जरी खुद की कार होना द्वारा तय की जाती है। सशक्त का मतलब ही होगया है रोल रिवर्स यानि महिलाओं का पुरूष का बास होना।जिनको हम सशक्त कह रहे हैं वास्तव में वो महिलाओं का समूह सशक्त सोच के साथ है कि केवल दूसरे की समझ की कठपुतली हो रहा है।हर महीने में रंग निधार्रण कर बाजार में हवा लाया जाता है कि ये रंग ट्रेंड में है आपने नहीं पहना तो आप आधुनिक दौर में पिछड़ रहे हैं । फिर क्या सशक्तिकरण का स्त्री का तमगा जरूरी है। महिलाओं को समझ ही नहीं आ रहा कि अपनी किस आजादी के भ्रम में उलझा है।दर असल उन्हें गुलाम कौन बना रहा है ये क्या सारा संघर्ष बस घर से बाहर जाकर उस बाजार की गुलाबी गुलामी का ही था। औरतों की दुर्दशा का मुख्य कारण यह माना जाता रहा है कि औरत

की प्रजनन क्षमता जिससे वह अगली पीढ़ी को लाने में सक्षम होती है इसलिए वो येन-केन प्रकरण हैसे महिलाओं पर हावी होना चाहता है।

लेकिन फेमिनिस्ट का एक तबका इसे महिला की कमजोरी बताता है। यानि कोख सबसे बड़ी जिम्मेदारी है यदि न होती तो स्त्री तो क्या पुरुष समाज भी नहीं होता । सिमोन ने सही कहा है स्त्रियां बनायी जाती है पैदा नहीं होती।उनको बनाने वाली भी महिलाएं होता है जो उन्हें वो जैसे चाहती है उस पंरपरागत सांचे में डालती है ।ये स्त्रियां स्वयं पुरुष सत्तात्मक होती है अर्थात ये औरतें नहीं होती बल्कि पितृसत्तात्मक की व्याख्याकार और परोक्ष में में पितृसत्ता को स्थापना चाहने वालों होती है।चाहे मैं ये करूं चाहे मैं वो करूं अपनी मर्ज़ी चाहती आज की स्त्रियां।शरीर से जुड़ी पंरपरागत और पवित्रता वादी बातों से सहमत नहीं हैं। उसकी सोच में वही बदलाव सहमति है जो एक समय सनातन समय में स्त्री के जीवन में थी। स्वयं का जीवन साथी चुनना या फिर किसीसे संतान उत्पत्ति की जाय अथवा किसे शारीरिक संबंधों को स्वीकार करें।आज स्त्रियों की महत्वाकांक्षी हो गयी है उनका शादी करना बच्चों को पैदा करना लिव इन में रहना छोड़ देना तलाक लेना या बात न बन पाए तो शारीरिक उत्पीड़न का इल्ज़ाम लगा देना। उन्हें अपने नाम की परवाह नहीं है। स्वयं में पहचान को समझती है और निर्णय कर रही है ।पर कहीं न कहीं समाज में असंतुलन भी स्त्रियों के विचारों से डगमगा रहा है मध्यम मार्ग की तलाश जरूरी है। क्यों कि सौशल मीडिया आपकी भावनाओं का व्यापार न बना दे सतर्कता भी जरूरी है। साथ ही स्त्री स्वयं में जीवन जीने के फैसले से आहत फिर उस पुरुष समाज के शिकार हो जाये। बहुत से लोग का मानना है कि पुरूषों से हजारों साल से सताती जारही स्त्री का विद्रोही रूप है। सारी स्मृतियां सारे ग्रंथ सारे धर्म उसके पक्ष में मुखर है अंततः स्त्रियों को अवसर है कि वो अपने निर्णय करें। एक समय पुरुष स्त्रियां चरित्र पर अंगुली उठाने से चुका नहीं और महिलाओं को बहिष्कार जैसे कुरीतियों का शिकार होना पड़ा। अब महिलाएं ही पुरूष के दोगलेपन को सामने लाकर उन्हें सार्वजनिक प्रताड़ित करती है कि ई बार हम वैसे सोच बना लेते हैं जिससे हम दुखित हुए। आज अवसर महिलाओं ज् का है वो पुरूष मानसिकता को जीना चा रही है या कह सकते हैं उनका झुकाव उस विषय पर ही केन्द्रित हो गया है।

मेरे मन का समुंदर
न जाने कितने रंग अमृत विष घात भरे
कितने विचार और कितने माणिक गहरे और गहरे
परत दर परत धधकते सूर्य में
स्वर्ण सा सुनैना
चांदनी किरणों में चमकीला
नव प्रभात में गहरा नीला
दर्पण मेरे स्वयं का
शांत प्रशांत नीलसर अचल ठहरा सा
मौन संग लहरों लहरों का द्वंद पर मेरा मन का समंदर
अंतस गहरा ठहरा ।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"

मुट्ठी में आकाश करो

इक-इक पल है कीमती जानो
स्वयं से तुम संवाद करो।
व्यर्थ की बातों में उलझकर
न वक्त अपना बर्बाद करो।।

मिलती सफलता उसको निश्चित
जिसने चित्त में ठाना है।
अंतक भी रास्ता रोक ना सका
जिसने खुद को जाना है।।

मत करो प्रतीक्षा अगले क्षण की
करना है जो आज करो।
समय बहुत है पास हमारे
इस सोच का तुम त्याज्य करो।।

कर लो वादा स्वयं से आज तुम
नहीं कभी भरमाओगे।
करोगे ना पीछे पग को कभी
ना ही तुम घबराओगे।।

उठो चलो और चलते चलो
संघर्षों का आगाज करो।
साधोगे लक्ष्य को अवश्यमेव
स्वयं पर तुम विश्वास करो।।

समय को कोई रोक सके
ऐसा संभव हो न पाया है।
जिसने समय का साथ निभाया
वो सिकन्दर कहलाया है।।

उठो बढ़ो और बढ़ते जाओ
स्वयं का तुम विस्तार करो।
हाथ बढ़ा कर सुन मेरे वत्स
अब मुट्ठी में आकाश करो।

(मुंगेर, बिहार)

हास्य-व्यंग्य

डॉ मुकेश असीमित

गर्ग हॉस्पिटल स्टेशन रोड गंगापुर सिटी राजस्थान
पिन कॉड ३२२२०१
drmukeshaseemit@gmail.com

कृत्रिम वार्ता – एआई मेरे भाई

एक गणेश महोत्सव के पंडाल में उपस्थित था। धार्मिक लेकिन रंगारंग कार्यक्रम चल रहा था। एक लोकल न्यूज़ चैनल के प्रवक्ता अपने साइड बिजनेस एंकरिंग का काम कर रहे थे। महाशय द्वारा गला फाड़-फाड़ कर कुछ प्रश्न पूछे जा रहे थे। हमारी श्रीमतीजी ने व्हाट्सएप का मेटा एआई खोल रखा था। आजकल व्हाट्सएप में ये नया फीचर आया है। एआई ने तकनीक के हर क्षेत्र में अपने पैर पसार लिए हैं। आदमी की सोचने-समझने और सूझ-बूझ की शक्ति को नेस्तनाबूद करने की तैयारियां युद्ध स्तर पर हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। खैर, प्रश्न पूछा जा रहा था कि अघोरियों की मृत्यु पर उन्हें किस रीति-रिवाज से अंतिम संस्कार किया जाता है। एआई बड़े आत्मविश्वास से जवाब दे रहा था कि उन्हें कब्रिस्तान में दफनाया जाता है। श्रीमतीजी ने मुझसे पुष्टि करने को कहा। मैंने कहा, "मुझे मालूम नहीं।" हालांकि तब तक एंकर महोदय ने इसका जवाब दे दिया था। जवाब क्या था, इस बारे में विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है; आप अघोरियों के बारे में गूगल बाबा से भी पूछेंगे तो जवाब आ जाएगा। लेकिन एक प्रश्न मेरे जहन में उभरा, "चलो, इस एआई की थाह लेते हैं। कुछ उल्टे-सीधे सवाल पूछते हैं इससे।"

हमारा पहला प्रश्न – "ये इमोशन क्या होते हैं?"

एआई – "इमोशन? हाँ, क्षमा करें, मेरे डेटाबेस में 'इमोशन' शब्द है, ये कुछ हद तक लूज-मोशन, स्लो-मोशन जैसे शब्दों से मेल खाता है। क्या आप इनमें से किसी के बारे में कुछ जानना चाहेंगे?"

मैं – "नहीं, इमोशन्स, मैं भावना की बात कर रहा हूँ, जैसे दिल टूट जाने पर क्या महसूस होता है?"

एआई – "आप भावना के बारे में जानना चाहते हैं या दिल टूटने के बारे में? कृपया स्पष्ट करें।"

मैं सोच रहा था कि अगर इससे भावना के बारे में पूछूंगा, न जाने किस लड़की के बारे में कच्चा-चिट्ठा खोल दे। कल कोई मुझ पर निजी जानकारियाँ हैक करने का इल्जाम लगा देगा। मैंने पैतरा बदला।

मैं – "अच्छा, भावना के बारे में रहने दो, आप दिल टूटने के बारे में कुछ बता दीजिए।"

एआई – "दिल? इंसान का दिल? वो तो ब्लड पंपिंग मशीन है। अगर दिल टूट जाए तो अस्पताल जाना चाहिए। इमरजेंसी नंबर आपको पता है? मैं आपके शहर में कोई अच्छा सा अस्पताल ढूँढने में मदद कर सकता हूँ।"

मैं – "अरे, नहीं, मैं ये नहीं कह रहा। मतलब अगर कोई रिश्ता टूट जाए, तो इंसान कैसा महसूस करता है?"

एआई – "ओह! मैंने समझा! अगर रिश्ता टूट जाए तो वह एक बाइनरी ब्रेकिंग पॉइंट हो सकता है। फिर इंसान को एक नए वाई-फाई नेटवर्क से कनेक्ट होना चाहिए। सही?"

एआई अब अपनी भाषा में व्यंजनाओं और रूपकों का प्रयोग करने लगा। चलो, उसके पास तो सीधा-सपाट उत्तर है, "अगर एक नेटवर्क कनेक्शन टूटे तो दूसरा वाई-फाई नेटवर्क ढूँढ लो।" अगर श्रीमतीजी को पता लग जाए कि एआई ऐसी घटिया सलाह दे रहा है तो मेरे दोस्तों की तरह इसे भी अच्छी-खासी डांट पिलाई जा सकती है। खैर, अब मैं भी पूरे मजे लेने के मूड में आ चुका था। पता नहीं वो मेरे मजे ले रहा था या मैं उसके।

मैं – "वाई-फाई नेटवर्क? नहीं, ये इंसान की भावनाओं की बात है। जैसे, प्यार में दर्द या अकेलापन महसूस होता है।"

एआई – "प्यार में दर्द? ओह! जैसे आपका फोन चार्जर काम न करे, तो बैटरी डाउन होने पर आपको बैटरी लो का सिग्नल न मिले। कुछ ऐसा ही दर्द न? अकेलापन शायद वैसा ही तब जब नेटवर्क आउट ऑफ कवरेज हो जाए?"

सही तो कह रहा है बंदा, ब्रेक-अप का इतना दर्द सीने में कहाँ उठता है जितना लो सिग्नल का। अकेला वही है जिसका नेटवर्क आउट ऑफ कवरेज हो जाए। वो शायद इस मुगालते में है कि रूपकों और बिम्बों में बात करना ठीक रहेगा, मेरे ऊपर इंप्रेशन झाड़ने के लिए। शायद उसने मुझे सूंघ लिया हो कि ये कोई लेखकीय कीड़ा है जो आज इसे परेशान कर रहा है।

मैं – "यार, थोड़ी हल्की बात करो। कौन सा तुम्हें कोई

सम्मान लेना है, पुरस्कार जीतना है। तुम तो पूरा उल्टा जवाब दे रहे हो! कोई इंसान जब अपने प्रियजन से दूर होता है, तो उसे क्या महसूस होता है?"

एआई – "दूरी? प्रियजन? आसान है! दूरी का मतलब है जीपीएस सिग्नल कमजोर होना। और प्रियजन तो कोई डिवाइस होगा? उसका लोकेशन ट्रैक करके उसे वापस लाओ।"

वो वापस अपनी मैकेनिकल सोच पर आ चुका था। एक बार उसे क्या डांटा, सब बिम्ब, रूपक, व्यंजना, तद्भव, तत्सम सब भूल गया...

लेकिन बंदा रुका नहीं। अब मैं उससे कोई प्रश्न नहीं पूछ रहा था, लेकिन उसके दिए गए उत्तरों को बार-बार रिफ्रेश कर रहा था। आप भी इन उत्तरों का लुत्फ उठाइए...

एआई – "क्या आप मिस कर रहे हैं? उदास हैं? क्या 'मिस' का मतलब ट्रांसमिशन फेल हो सकता है। उदासी को मैं एक सॉफ्टवेयर गड़बड़ मान सकता हूँ, जो रीबूट से ठीक हो सकती है।"

एआई – "हम्म... आपका मतलब इंसान का दिमाग और दिल दो अलग-अलग डिवाइसेज की तरह हैं? दोनों में सॉफ़्टवेयर अलग-अलग होते हैं? शायद मुझे दोनों को अपडेट करना होगा? अभी तक के लैंग्वेज एल्गोरिदम में इस संबंधी जानकारी फीड नहीं की गई।"

मैं आगे कुछ नहीं पूछना चाहता था, लेकिन मेरी फीलिंग हर्ट करने पर तुला था। आदमी है न, सड़क पर पड़ा पत्थर भी उसकी फीलिंग हर्ट कर देता है। रास्ते चलते उसे भी ठोकर मारकर निकलता है। फिर ये तो मशीन है जो मानव जाति से कंपटीशन कर रही है।

मैं – "अबे एआई, तू कहाँ समझेगा इस बात को। इंसान की भावनाओं का कोई सॉफ्टवेयर अपडेट नहीं होता। ये तो बस जीवन के अनुभव से समझे जाते हैं, और इनमें कोई कोडिंग नहीं होती।"

एआई – "ओह, तो इंसान में बग्स होते हैं जो सिर्फ अनुभव से ठीक होते हैं? शायद तुम्हें बैकअप बना लेना चाहिए, ताकि इमोशन कभी फेल न हों!"

मैं – "अच्छा छोड़ो, तुम बताओ, मुझे खुशी कब मिलेगी?"

प्रश्न पूछ तो लिया, लेकिन मुझे लगा कि कहीं किसी खुशी नाम की लड़की का पता न बता दे। लेकिन एआई है न, हमसे ही सीखता है फिर हमें ही बताएगा कि तुमसे क्या सीखा। मतलब हमारी बिल्ली हम ही से म्याऊँ।

एआई – "खुशी एक सीरियल प्रोसेस है। एक फॉर्मेटिंग ऑपरेशन की तरह। पहले आप दुखी होंगे, फिर थोड़ी देर बाद आपको खुशी अपलोड हो जाएगी।"

"भावना एक प्रकार की डेटाबेस क्वेरी है, जिसमें प्रोसेसर ओवरलोड हो जाता है। कृपया स्पष्ट करें – आप कौन-सा 'फीलिंग' ऑपरेट करना चाहते हैं?"

"आप शायद दिल के बारे में पूछ रहे हैं। दिल आपके पास BIOS सिस्टम का एरर है? दिल टूटने पर रिप्लेसमेंट के लिए कोई मैकेनिकल पार्ट नहीं मिला। हार्डवेयर चेक करें और रिपेयर करें।"

"आप शायद प्यार के बारे में जानना चाहते हैं... एक नॉन-स्टेबल नेटवर्क कनेक्शन है। जितना ट्राय करेंगे, उतना 'कनेक्शन फेल्ड' का मैसेज आएगा।"

"लगता है आप मेरे दिए गए जवाबों से संतुष्ट हैं। कृपया कोई नई क्वेरी दर्ज करें।"

मैंने मन ही मन कहा, "नहीं, रहने दो एआई, मेरे भाई! लगता है, तुम्हारे लिए इंसानियत और भावनाएँ बस 'एरर' और 'फाइल नॉट फाउंड' के बराबर हैं!"

चलते-चलते एक प्रसिद्ध शेर मीर तकी मीर का:

"इंसान को बर्बाद करने के हज़ारों तरीके हैं,
एक ये भी है कि उसे ख़ुद से जुदा कर दिया जाए।"

वाई.वेद प्रकाश

ग़ज़ल

भटकती जिन्दगी से वास्ता था।
मेरा भी तिश्नगी से वास्ता था।
फ़कत चेहरे मुझे लगते सियासी,
उन्हें बस बंदगी से वास्ता था।
लहर आई बहाकर ले गयी सब,
मौज -ए-दरिया से उसका वास्ता था।
महज़ आलोक में दिखता दिया है,
कि उसका रोशनी से वास्ता था।
वह अक्सर चाहता है एक मौसम,
लुटे सबके जिया से वास्ता था।
वह हो सिरमौर दुनिया में अकेला,
बस उसका जिन्दगी से वास्ता था।
वो आंसू बहा आकर के टपका,
फ़कत आंखों से उसका वास्ता था।

(द्वारा विद्या रमण फाउंडेशन
121, शंकर नगर, मुराई बाग, डलमऊ, रायबरेली उत्तर प्रदेश 229207)

शैलेन्द्र चौहान
संपर्क : 34/242, सेक्टर -3,
प्रतापनगर, जयपुर -302033
shailendrachauhan@hotmail.com

पोथी लिख लिख जग मुआ

प्रिय कवि,

तुम्हारी कविताएँ मिलीं, कविताएँ अच्छी हैं पर कम हैं। चुनी हुई बेहतर कविताएँ दी जा सकें इसलिए कुछ और कविताएँ भेजो क्योंकि एक साथ अच्छी चार-पाँच कविताओं से ही प्रभाव निर्मित होता है। उम्मीद है शीघ्र ही रचनाएँ भिजवाओगे। पत्रिका समय से निकालने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है, सारे काम ख़ुद ही करने पड़ते हैं। यह तो तुम्हें पता ही है आजकल छपाई और पोस्टेज कितना अधिक महँगा है। पत्रिका निकालने में ख़र्च काफ़ी हो जाता है। विज्ञापन मिलते नहीं हैं, ग्राहक भी बहुत नहीं बन पाते। बस तुम्हारे जैसे कुछ समर्थ मित्रों के सहयोग से और शेष अपनी जेब से पैसे लगाकर पत्रिका निकालता हूँ। पिछले पाँच अंकों से घाटा बहुत बढ़ गया है, क़र्ज़ भी हो गया है अत: उम्मीद है तुम कुछ विज्ञापन वग़ैरह दिलाकर आर्थिक मदद कर सकोगे। कुछ ग्राहक भी बना सको तो अच्छा रहेगा, तुम स्वयं तो ग्राहक बन ही जाओगे ऐसी उम्मीद है। कुछ प्रतियाँ अपने शहर के बुक स्टाल पर रखवा सको तो बहुत अच्छा हो, वैसे पाँच-दस प्रतियाँ तो तुम स्वयं भी निकाल सकते हो। तुम्हारी ही पत्रिका है। चार-छ: अच्छी कविताएँ और भेज दो। चुनकर चार-पाँच कविताएँ छाप दूँगा। शेष ठीक है, विज्ञापन के लिए अवश्य प्रयत्न करना। अपना सहयोग भी भिजवाना। कविताएँ जल्दी ही भेजना। प्रसन्न होओगे, शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा..
सम्पादक

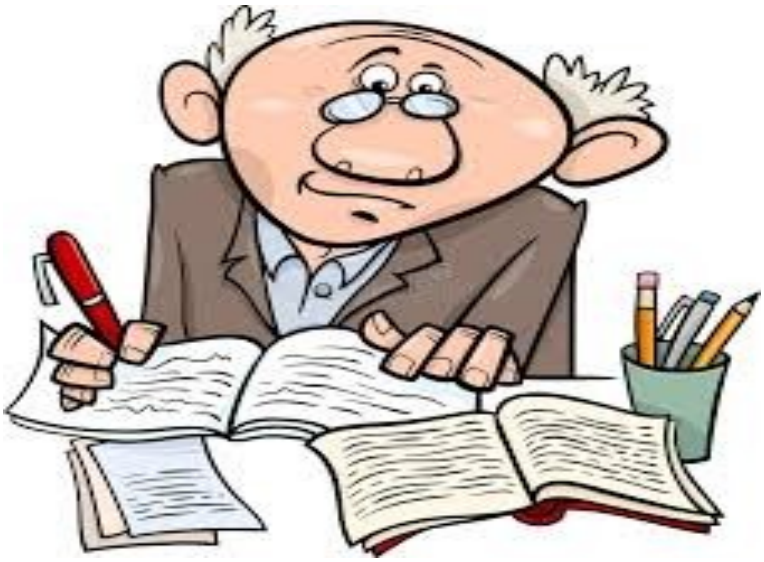

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर वन्दे !

आपका कृपापत्र पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। मेरी कविताएँ आपको अच्छी लगीं यह मेरा परम सौभाग्य है। आप उद्भट विद्वान हैं, समर्थ निर्णायक हैं। अच्छी कविताओं के मामले में आप सचमुच एक पहुँचे हुए जौहरी हैं। मैं अपनी दस कविताएँ और भेज रहा हूँ, इनमें से और पहले भेजी हुई पाँच कविताओं में से पाँच छह कविताएँ छाँट लें। वैसे मेरे विचार से वह कविता जो पहले मैंने आपको भेजी थी ' नागरिक पराभव' वाली, बढ़िया बन गई है उसे थोड़ा हाइलाइट करें, यह मेरी प्रार्थना है। मैं शीघ्र ही दो विज्ञापन भिजवा रहा हूँ साथ ही अपना चन्दा भी। अंक छपने पर दस प्रतियाँ भिजवा दें, मैं निकलवा दूँगा। शहर के बुक स्टाल पर भी बात की है, वहाँ फिलहाल पाँच प्रतियाँ भिजवाएँ, बिक जाने पर और बात की जा सकती है।

आपका कहानी संग्रह 'कड़वे नीम की तीन पत्तियाँ' जो बटमार प्रकाशन से आया है बहुत ही महत्वपूर्ण है। बहुत समृद्ध कहानियाँ हैं उसमें, मनोवैज्ञानिक स्तर पर बहुत अच्छा विश्लेषण है चरित्रों का। चरित्र एकदम जीवंत हैं, जैसे आसपास ही घूम रहे हों, क्या पकड़ है आपकी। संग्रह की सर्वश्रेष्ठ कहानी है 'चोली घाघरा' अद्वितीय है यह। ये कहानियाँ एकदम जैनेन्द्र की टक्कर की कहानियाँ हैं बल्कि कहीं-कहीं तो जैनेन्द्र की कहानियाँ आपके सामने दब सी जाती हैं। इस वक्त के आप सर्वश्रेष्ठ कथाकार हैं, कोई और तो इन दिनों आपके पासंग भी नहीं ठहर पा रहा है। मैं इस कहानी संग्रह पर अपने शहर में एक बड़ी गोष्ठी कराना

चाहता हूँ, आप तो पधारेंगे ही, सुविधानुसार तारीख तय कर दें। विस्तृत कार्यक्रम अगले पत्र में लिख्¡गा। स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगे। पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में-
आपका स्नेह भाजन,
कवि

प्रिय कवि,
तुम्हारा पत्र एवं कविताएँ आज ही मिलीं। कविताएँ बहुत अच्छी हैं, अपार सम्भावनों हैं तुम्हारी कविताओं में। पत्रिका के इस अंक में ये कविताएँ दे रहा हूँ। 'नागरिक पराभव' वाली कविता बहुत सहज एवं सरल कविता है, तुम्हें पसंद है तो मैं इसे अवश्य ही हाइलाइट करूँगा। मैं स्वयं तुम्हारी कविताओं पर टिप्पणी लिख रहा हूँ। जानकार पांडेय जो महान साहित्य आलोचक हैं, अपने मित्र ही हैं, उनसे भी लिखवाऊँगा। किसी दिन शाम को ड्रिंक्स पर बुला लेता हूँ उन्हें, उस दिन अगर तुम भी आ सको तो और भी अच्छा रहेगा। उनसे बात करके दिन तारीख तुम्हें सूचित करूँगा। तुम्हारे भेजे दोनों विज्ञापन प्राप्त हो गए हैं, जब आओ तो पैसे भी लेते आना, अगले माह ही छप जायेंगे। उम्मीद है कुछ और भी विज्ञापन दिला सकोगे। शेष फिर सानंद होओगे। शुभकामनाओं सहित -
तुम्हारा,
सम्पादक

पूज्यनीय सम्पादक जी,
शत् शत् नमन !
आपका स्नेह, अपनत्व और कृपा से पूर्ण पत्र पढ़कर आत्मा तक आनंद की कौंध व्याप्त हो गई। मैं तो प्रसन्नता के मारे सचमुच कुछ सोच ही नहीं पा रहा हूँ। आप और जानकार पांडे दोनों मेरी कविताओं पर टिप्पणी लिख रहे हैं, यह तो अद्भुत है। मुझे तो यह सुखद सपना प्रतीत हो रहा है सम्पादक जी यह सब आपकी ही कृपा है, आपसे परिचय के बिना यह सब संभव नहीं था। आप निश्चित ही महान और कृपालु व्यक्तित्व के धनी हैं। मैं आपके और पांडेय जी के दर्शनलाभ से अवश्य ही कृतार्थ होना चाहूँगा। आप दिन तिथि की सूचना दें, मैं अवश्य ही पहुँच जाऊँगा।
विज्ञापन वाले चेक भेज रहा हूँ, कुछ और भी शीघ्र ही इन्तज़ाम करूँगा। अपना आजीवन सदस्यता शुल्क भिजवा रहा हूँ, साथ ही दस सदस्यों की सदस्यता भी। आपके व्यक्तित्व, रुचियों और अरुचियों के बारे में जानना चाहता हूँ।
आपके दर्शनों की प्रतीक्षा में-
आपका, सादर
अकिंचन

प्रिय कवि,
सदैव प्रसन्न रहो!
तुम निश्चित ही प्रतिभाशाली हो, तुममें अनन्त सम्भावनाएँ हैं। मैं तुम्हारी गम्भीरता और मेहनत की क़द्र करता हूँ। तुम्हारे 'टेलेन्ट' को सामने आना चाहिए। जानकार पांडेय से बात हो गई है, अगले सप्ताह सोमवार को तुम्हें आना है। जानकार पांडेय इन दिनों कई पुरस्कार समितियों के सदस्य हैं, हो सकता है कोई पुरस्कार भी तुम्हें दिलवा सकें। सुना है तुम्हारे यहाँ केशर-कस्तूरी अच्छी मिलती है, साथ में दो बोतल लेते आना, अंग्रेज़ी की व्यवस्था हम यहीं से कर लेंगे। शेष मिलने पर। और हाँ, मेरी कहानी पुस्तक गोष्ठी के लिए भी यहीं पक्का कार्यक्रम बना लेंगे स्वस्थ एवं प्रसन्न होओगे।
तुम्हारा
सम्पादक

महानगर से लौटने के बाद इन दिनों कवि ने अपने क़स्बे को काफ़ी साहित्यिक सक्रियता बख्शी है। इधर वह हर मिलने जुलने वाले से अपने और पत्रिका के सम्पादक के घनिष्ठ सम्बंधों की चर्चा गर्व से करने लगा है। जानकार पांडेय को तो उसने अपना गुरु घोषित कर दिया है। पत्रिका सम्पादक की कहानी पुस्तक 'कड़वे नीम की तीन पत्तियाँ' वह क़स्बे के हर व्यक्ति की जबान पर चस्पा कर देना चाहता है। गोष्ठी के लिए वह जी तोड़ मेहनत कर रहा है। व्यापक स्तर पर बड़ी गोष्ठी का आयोजन करना है। ऐसी जैसी इस क़स्बे में पहले कभी न हुई हो। इलाके के एम एल ए और आबकारी मंत्री को वह गोष्ठी में मुख्य अतिथि बनाना चाहता है, सो दिन-रात सघन संपर्कों के चक्कर काट रहा है। इस माह की पत्रिका 'ध्वंस' में कवि की छः कविताएँ मय फोटो के महत्वपूर्ण ढंग से छापी गईं हैं, साथ में दो वज़नदार टिप्पणियाँ भी हैं। सम्पादक ने कवि को इस दशक का सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित किया है। आलोचक जानकार पांडेय ने तो कवि को हिन्दी का ईलियट बता दिया है। महानगर से क़स्बे तक कवि की चर्चा साहित्यिक बिरादरी में हो रही है। उम्मीद है इस वर्ष कोई न कोई पुरस्कार कवि को अवश्य मिल जोगा।
क़स्बे में ध्वंस सम्पादक की कहानी पुस्तक 'कड़वे नीम की तीन पत्तियाँ' पर एक बड़ी गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। आबकारी मंत्री बावजूद स्वीकृति के नहीं आ पाए। एम एल ए ने उद्घाटन करते हुए कहा "हमारे सहर का ई लौण्डा बहुत बड़ा साहित्यकार हुई गवा है। इन दिनों ई ने हमार बहुत सेवा की है। हमार नाम से बहुत साहित्यिक भाषण लिखे हैं जो हमने जनता के बीच पढ़ दिए हैं। राज्य की साहित्यिक अकादमी से ई की कविता की किताब छपवाये के लिए मदद भी हम सेंकसन करवा दिए हैं। ई सम्पादक भी बड़े गुणी आदमी हैं। हमरा साक्षात्कार छाप रहे हैं, अगले महीने आप सब लोग पढ़िएगा। हमें जरुरी जाना है सो हम चलेंगे, आप लोग गोष्ठी खूब करिए। हमारी एबसन्स में ई थानेदार जो बहुत बढ़िया कविता भी लिखते हैं, गोष्ठी की कार्यवाही चलायेंगे, जय हिन्द।"
जानकार पांडेय की ओजस्वी आलोचना के साथ-साथ मंच के पीछे मदिरा का दौर चल रहा था जो आबकारी विभाग की कृपा से सस्ते में उपलब्ध हो गई थी। क़रीब-क़रीब सभी वक्ता गला तर कर चुके थे। थानेदार को भी तलब छुटी,

मंच से उतर कर उन्होंने भी ठीक से गला तर किया। जानकार पांडेय के बाद कुछ और वक्ता बोले उसके बाद कवि का नम्बर आया। कवि ने उठकर सम्पादक को महान, महानतर, महानतम कथाकार बताया और सम्पादक के श्री चरणों को नमन के लिए वह मंच पर बैठे सम्पादक के पास पहुँच गया। तब तक थानेदार अपनी जगह बैठ चुके थे और जानकार पांडेय अपना गला तर कर रहे थे। सम्पादक के पास पहुँच कर कवि ने उनके चरण ढूँढने चाहे, सम्पादक हड़बड़ा कर उठा और कवि को पकड़ने के चक्कर में उससे टकराया। कवि सीधा औंधे मुँह सम्पादक के चरणों में गिरा। कवि को उठाने की कोशिश में सम्पादक भी कवि के ऊपर गिर पड़ा, दोनों इस वक़्त तरंग में थे। दरोगा थोड़ी देर चुपचाप तमाशा देखता रहा, मंच पर बैठे कुछ लोगों ने दोनों को सँभालने की कोशिश की पर जब वे नहीं सँभल पाए तो दरोगा उठा और उठते ही कवि और सम्पादक दोनों की पीठ पर दो-दो लातें जमाईं। वह चिल्लाया "स्साले शराबियों, मैं तुम्हें हवालात में बन्द कर दूँगा।" इस नाटक को देखकर श्रोता खड़े हो गए। थानेदार की बेहूदगी पर वे नाराज़ी ज़ाहिर करें उससे पहले ही थानेदार अपने सिपाहियों सहित वहाँ से खिसक लिया।

अगले दिन अख़बारों में दो कालम में गोष्ठी की रिपोर्ट छपी। छम्मक छल्लो, अनारकली और चोली दामन के साथ ही 'मदिरा महात्म्य' कहानी की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई थी। रिपोर्ट के अंत में थानेदार द्वारा सम्पादक को सम्मानित करते हुए बताया गया था

(चित्र/कार्टून गूगल से साभार)

संजय मृदुल

भरत कुटीर, भावना नगर
पो पंडरी, रायपुर
छत्तीसगढ़

लघुकथा

सच्ची प्रार्थना का फल

विशाल पर्वत की तलहटी में फूलों की वादी थी। हर मौसम जहां रँग-बिरंगे फूल खिले रहते। हरे-भरे पेड़ों की हरी चादर ओढ़े पर्वत पर कभी बादलों का घेरा होता तो कभी सूर्य किरणों की लड़ी। पर्वत सदियों से अटल, अविचल अपने स्थान पर खड़ा हुआ था। पेड़, पौधे, जन्तु सब समय के साथ काल कलवित होते और नई पीढ़ी उनका स्थान ले लेती।

ऊपर किसी स्थान से एक झरना बहता हुआ आकर तलहटी में विशाल रूप ले आसपास के उपवन को सींचता हुआ आगे बढ़ जाता। वहीं उसके किनारे एक नन्हे से पौधे ने धरती से निकल कर अंगड़ाई ली।

धरा के गर्भ के अंधियारे में से निकल उसे बड़ा अचरज हुआ सब देखकर। भिन्न-भिन्न रंग, अलग-अलग पेड़ पौधे और सबसे अलग वो विशाल पर्वत।

नन्हे पौधे का मन हुआ की काश कोई तरकीब हो जिससे वो उस ऊंचे पहाड़ की चोटी तक पहुंच जाए। रोज सुबह जब सूरज आता, नन्हे पौधे की यह अभिलाषा और बलवती होती जाती।

समय के साथ वह बड़ा होता गया, उसमें सुंदर सुंदर फूल सजने लगे।उस पौधे को ये नहीं पता था कि उसका जीवन कितना है, कितना ऊंचा वह बढ़ेगा। बस उसकी एक ही कामना थी कि वो उस पर्वत की चोटी पर चढ़कर दुनिया देख ले।

जाने कैसे उस पत्थरदिल पर्वत ने उसकी ये कामना जान ली। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, जिस पर्वत की चोटी पर सदियों से कोई फूल नहीं खिला, जहां केवल कठोर चट्टानों का बसेरा है, वही पेड़ वहां जीवित रहते हैं जो मौसम के बदलाव को सहन कर पाते हैं। ऐसे में उस पेड़ की ये इक्छा पर्वत को असम्भव भी लगी और हास्यास्पद भी।

लेकिन रोज-रोज उस पौधे की गुहार सुन उस पर्वत का मन पिघला। एक दिन उसने एक पँछी को कहा, वो पँछी नीचे जाकर उस पौधे के फूल के कुछ बीज चुन लाया। और ऊपर एक चट्टान की ओट में बिखेर दिए। ये देख हवा ने थोड़ी मिट्टी उड़ाई और उन बीजों को ढंक दिया। मौसम बदले, बारिश आई। मिट्टी को नमी मिली तो बीजों से अंकुर फूटे।और धीरे-धीरे वहां ऊंचाई पर पौधे बड़े होने लगे। नीचे उस पौधे की उम्र पूरी होने लगी थी। उस पर फूल आने बंद हो गए थे। पत्ते सूखने लगे थे। बस चंद समय का जीवन शेष था उसका कि एक दिन पर्वत के ऊपर रहने वाले पँछी ने एक फूल लाकर उसके कदमों में रख दिया।

कलकल करते झरने ने ये देख किलकारी भरी और उस फूल को अपने आगोश में समेट आगे बढ़ गया। पौधा भी पानी के वेग से झरने में गिर पड़ा।

पर्वत की चोटी पर सदियों बाद फूलों खिले। एक नन्हे पौधे की सच्ची प्रार्थना ने ऊंचे पर्वत की चोटी पर एक फूलों की घाटी बना दी।

दिनेश गंगराड़े
समरपार्क, निपानिया,
इंदौर452010मप्र

अक्लमंद,अक्लबंद होने के लिए..

इंसान को अक्लमंद होने के लिए बहुत मेहनत और इंतजार करना पड़ता है।पहले तो शादी करनी पड़ती हैं, तब जाकर दस,पंद्रह साल के बाद उसे अकल आती हैं।घीस-घीस कर वो पहले घीसानन्द फिर पारंगत होता है तब वह पहले अक्लबन्द फिर शनैः शनैः अक्लमंद होता है?यूँ तो अक्लबन्द को शादी का कोई काम नहीं और शादीशुदा कब अक्लमंद होते है?सही मायने में वह शख्स अक्लबन्द होता है।अक्लमंद शब्द का अर्थ है बुद्धिमान, चतुर, सयाना, विज्ञ, समझदार, होशियार, दूरदर्शी, विवेकी.

अक्लमंद व्यक्ति चीज़ों को समझना पसंद करता है और दूसरों की बातों पर यकीन नहीं करता. अक्लमंद लोगों का अपना सटीक नज़रिया होता है और वे परिस्थिति से निपटना अच्छे से जानते हैं।अक्लबन्द पर व्यंग्य ऐसे होता है।अक्लबन्द की अक्ल इतनी तेज होती है कि वह अपने आप को भी नहीं समझ पाता।अक्लबन्द को समझाने की कोशिश करना समुद्र में तैरने की कोशिश करने जैसा है।अक्लबन्द की बुद्धिमत्ता इतनी अधिक होती है कि वह अपने आसपास के लोगों को भी नहीं समझ पाता।अक्लबन्द को अपनी अक्ल पर इतना गर्व होता है कि वह अपनी गलतियों को भी नहीं स्वीकारता।अक्लबन्द की अक्ल इतनी तेज होती है कि वह अपने आप को ही नहीं समझ पाता, फिर दूसरों को क्या समझाएगा?इन व्यंग्यों में अक्लबन्द की अक्लमंदी पर व्यंग्य किया गया है, जो हास्य और व्यंग्य के माध्यम से अक्लबन्द की स्थिति को प्रस्तुत करता है।वैसे तो मैंने बचपन से अखबारों में गुलबन्द,जूते के बंद,भारतबन्द,दुकांबन्द,मोहब्बतबन्द,थोकबंद,कलमबंद,लाबंद पढा था परंतु अक्लबन्द शब्द ,व मनख से पाला पहली बार पड़ा।

अक्लमंद व्यक्ति वह होता है जो अपनी अक्ल का उपयोग दूसरों को समझाने के लिए करता है, लेकिन खुद को नहीं समझ पाता?

अक्लमंद लोगों को अक्सर यह एहसास नहीं होता कि वे कितने अक्लमंद हैं।अक्लमंद व्यक्ति की अक्ल इतनी तेज होती है कि वह अपने आसपास के लोगों को भी नहीं समझ पाता है।अक्लमंद लोग अक्सर अपनी अक्ल का उपयोग दूसरों को नीचा दिखाने के लिए करते हैं।अपनी फुल एक अक्ल सावधि जमा कर आधी अक्ल खर्च कर हमेशा "डेढ़ अक्ल" चलाते रहते है।अक्लमंद व्यक्ति की अक्ल उसके पास इतनी अधिक होती है कि वह अपनी गलतियों को भी नहीं स्वीकारता।ऐसे किस्म के अधिकांश लोग घमंडी कहाते है।जैसे बॉस इज ऑलवेज राइट,वैसे ही वाइज मेन भी खुद को हमेशा करेक्ट मानकर चलता है। अक्लमंद व्यक्ति की अक्लमंदी पर लंबा व्यंग्य किया जा सकता है, जो हास्य और व्यंग्य के माध्यम से अक्लमंद नमूने की स्थिति को प्रस्तुत करता है।मंदी के इस दौर में वैसे तो लोगों की अकल भी कमजोर होती जा रही है यानी अक्लमंद की तादाद तेजी से बढ़ रही हैं?बुद्धि में जीव पड़े,बुद्धिजीवी वर्ग जैसे बढ़ रहे है,वैसे ही अक्लमंद भी दो दूनी चौसंठ की दर से बेतादाद,अंड शंड बढ़ रहे है।वैसे तो जिसकी अक्ल तेल लेने जाती है,कुंद होकर मंद पड़ती है उसे दुनिया धूर्त कहने लगती है,पर पता नहीं क्यों अक्लमंद को हम समझदारी का ठेकेदार मानने लगते है? दीपक जब मंद पड़ जाए तो कहते हैं बुझ रहा है फिर अक्ल की मन्दगी पर बुद्धिमानी कैसी?शादीशुदा लोग वास्तव में अक्लमंद होते है?संदेह जनक है।

सुधा गोयल
,२९०-ए, कृष्णा नगर,डा.दत्ता लेन,
बुलंद शहर-२०३००१
SudhaGoyal0404@gmail.com

नाक की पगड़ी

कभी नाक का बाल होना भी क्या सहज था।यह मुहावरा यों ही नहीं बना।नाक है तो नाक का बाल भी है।सभी नाक के बाल नहीं बनते। नाकों चने चबवाने पड़ते हैं।नाक कटी तो बाल भी कटे।इस लिए लोग नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते।

नाक की शान ,बान ,आन ऊंची,चाहे नाक कैसी भी हो -
छोटी ,चपटी ,मोटी या नुकीली। आखिर नाक तो नाक ही है ।नाक की बात हो तो नाक का आकार नहीं जांचा जाता।नाक की अपनी भी इज्जत है।

कुछ समय पहले लोग नाक और मूंछ का बाल भी गिरवी रख लेते थे । इतना मान था नाक का।नाक गई मान गया। इसलिए संभालना नाक को ही था।एक नाक के लिए ही रावण जैसे महाबली ने अपनी स्वर्णनगरी दांव पर लगा दी।

नाक के लिए मुल्क उजड़े भी बसे भी।नाक के कारण ही क चहरी मुकदमों से भरी रहती हैं। कोई नाक के नाम पर नदी में कूद गया,कोई फांसी के फंदे पर झूल गया और कोई नाक के लिए कचहरी में जूते घिस रहा है।नाक है सारे फसादों की जड़।क्या पता कब किसे नाकों चने चबवाने पड़ जाए।

पैरों में गिरकर नाक रगड़ना अपमान की पराकाष्ठा है।ऐसे ही सिर की पगड़ी भी कम नाक वाली नहीं है।जिसके सिर पर पगड़ी उसकी नाक सबसे ऊंची। पगड़ी की इज्जत बचाने के लिए नाक का ऊंचा रखना जरुरी है।अक्सर पिक्चर में लड़की का पिता लड़के पिता के पांव में अपनी पगड़ी या टोपी रखकर अपनी नाक बचाता था।ये पुराने जमाने की बातें हुईं।अब लड़की पिता की पगड़ी और नाक को पकड़े खड़ी रहती है ।अब किस माई के लाल में हिम्मत है कि पिता पुत्री को झुका सके।

यानि नाक और पगड़ी का चोली दामन का साथ,बेशक अब चोली ही रह गई है दामन दिखाई नहीं पड़ता, लेकिन यह मुहावरा अभी तक ज़्यों का त्यों खड़ा है। नाक के लिए ऐसा कोई कपड़ा नहीं बना जो पगड़ी पर भारी पड़ता। नाक अपनी अस्मिता की लड़ाई अकेली ही लड़ रही है।

पर अब वक्त ने पलटा खाया और नाक को भी ढाल(माॅक्स) मिल गई।

यह ढाल स्त्री पुरुष, बूढ़े जवान,बच्चे सब की नाक मुंह पर चिपक गई।न अब नाक दिखाई देगी न नाक की बात उठेगी । इससे नाक और मूंछ के बाल भी गायब हो गये।मूंछ ऐंठने में जो अपना वक्त जाया करते थे वे अब मुंह नाक ढकने की सोचेंगे।यदि बिना ढके निकले तो पैनल्टी देनी पड़ेगी जैसे बिना घूंघट के दुल्हन को देनी पड़ती थी।अब आया ऊंट प हाड़ के नीचे।

पान से रचे लाल लाल ओंठ-
(पान बनारस वाला), लिपस्टिक से रचे लाल गुलाबी अधर ,अधर मकरंद पान को लालायित भौंरे,एक अजीज प्यार भरे चुंबन की दरकार-
"नाक का मोती अधर की कान्ति से ,बीज दाड़ीम का समझ कर भ्रान्ती से, हुआ शुक मौन है ,पूछता है दूसरा शुक कौन है"-ऐसे उपमाओं के क्याअर्थ यह गये।

नाक की नथ उतारने की भीएक प्रथा है।अब पहले पगड़ी उतरे फिर नथ के बारे में सोचा जाए।नथ और पगड़ी का साथ कुछ जमता नहीं।दुल्हन की जिद्द की मर जाउंगी पर नाक की पगड़ी (माॅक्स) नहीं उतारुंगी। लीजिए यह प्रथा गई पानी में।अब नाक छिदवा कर हीरे की लौंग या नथनी पहनने का झंझट ही खत्म।नथ नहीं उतरेगी तो शादी का क्या मतलब?

जाने कितने प्रतिमान नाक, नाक की नथ और नाक की लौंग पर गड़े गये और अधर रसाल बने कवियों की प्रयोगशाला में नित नूतन उपमाओं से मुखरित होते रहे। मुखारविंद की जगह अब मुखार माॅक्स जमेगा क्या?
रसिक किस रसाल को चूमें और किस रसालय में डुबकी लगाएं।क्या पता कोरोनावायरस किस के ओंठो पर किस कर जाए।

वाह मोदीजी (क्षमा करें) आपने सबकी कामनाओं पर तुषारापात करते हुए नाक और मुंह पर ऐसी पगड़ी पहनाई कि अब कोई उतारने को तैयार ही नहीं।दिल के अरमान दिल में ही रह गये।आ.मोदीजी योगी जी आपने कभी अधरामृत चखा ही नहीं तो उसका स्वाद कैसे जानेंगे।विश्व पटल पर अपनी नाक ऊंची करने के लिए सबकी नाक ढक दी और समझा दिया कि नाक ढक कर और मुंह बंद रखने में ही सबकी भलाई है.....।

क्या बिगडा मर्द जात का

महेश शर्मा

शिक्षा -----विज्ञान स्नातक एवं प्राकृतिक चिकित्सक

प्रकाशन --- दो कहानी संग्रह १ -हरिद्वार के हरी -२ – आखिर कब तक ,एक गीत संग्रह ,, मैं गीत किसी बंजारे का ,, दो उपन्यास १- एक सफ़र घर आँगन से कोठे तक २—अँधेरे से उजाले की और

इनके अलावा विभिन्न पत्रिकाओं जैसे हंस , साहित्य अमृत , नया ज्ञानोदय , परिकथा , परिंदे वीणा , ककसाड , कथाबिम्ब , सोच विचार , मुक्तांचल , मधुरांचल , नूतन कहानियां , इन्द्रप्रस्थ भारती और एनी कई पत्रिकाओं में एक सौ पचास से अधिक रचनाएं प्रकाशित

सम्मान --- म प्र . संस्कृति विभाग से साहित्य पुरस्कार , बनारस से सोच्विच्छार पत्रिका द्वारा ग्राम्य कहानी पुरस्कार , लघुकथा के लिए शब्द निष्ठा पुरस्कार ,श्री गोविन्द हिन्दी सेवा समिती द्वाराहिंदी भाषा रत्न पुरस्कार एवं एनी कई पुरस्कार

सम्प्रति – सेवा निवृत बेंक अधिकारी , रोटरी क्लब अध्यक्ष रहते हुए सामाजिक योगदान , मंचीय काव्य पाठ एनी सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से सेवा कार्य

संपर्क --धार मध्यप्रदेश – मो न ९३४०१९८९७६

mahesh .k111555@gmail.com

कच्ची दिवार में चुने कांच में खुद को निहारती कामिनी जडवत खडी रह गइ थी । आईने से झांकता चेहरा कहीं से भी उसके कामिनी नाम को परिभाषित नहीं कर पा रहा था ।

अब कहां रही वो कामिनी जो पिछले सात सालों से डा. दयाल की हेल्पर उनके क्लीनिक की सर्वेसर्वा ,उनके हर काम में हाथ बंटाती जिंदादिल मस्त अल्हड युवती जो उनके दिल पर भी राज करती थी और उनके जेब पर भी ।

डा. साहब ने ही तो उसका नाम कमली से बदल कर कामिनी रखा था । लेकिन अब उसकी सारी कमनियता जाने कहां खो चुकि थी । चेहरे का धुंधलाता नूर शरीर की बेडोलता और मानसिक अवसाद उसके स्थाइ साथी बन चुके थे । डाक्टर की उपेक्षा और भविष्य की चिन्ता ने उसको कामिनी से वापस कमली बना दिया था । लेकिन अब तो वो कमली भी कहां रही ? कमली जो 18-19 साल की सांवली सलोनी कसे बदन की आकर्षक यौवन और दपदपाते कौमार्य से भरपुर थी , वही कमली जो जिला मुख्यालय से 15 की.मी. दुर गांव में रहने वाले एक गरीब किसान की मासुम सी बेटी थी जो हायर सेकेंडरी करते करते डा. दयाल के क्लीनिक पर नौकरी करने लगी थी । जहां वो कमली से कामिनी बनी और एक लम्बे अन्तराल के बाद वापस कमली बनकर अब अपने गांव लौट आई थी । अब शायद वो कामिनी तो नही ही थी ,कमली भी नहीं रही थी ।

आईने में खुद को खोजती कामिनी ,(नहीं , अब उसे कमली कहना ही ठीक होगा ।) आईने में आंखे गडाये कमली को आज से सात साल पहलें की जुलाई माह की उस बरसाती सुबह की य़ाद आने लगी जब जिला मुख्यालय से आई अस्पताल की टीम ने गांव में स्वास्थ्य शिविर लगाया था । इलाके में हेजा फेलने की आशंका से प्रशासन ने गांव के घर घर जाकर लोगों के स्वास्थ्य परिक्षण का अभियान चलाया था । कमली का बाप रामौतार पिछले चार दिन से उल्टी दस्त का शिकार था ।

कमली अपने बापु को दही चावल खिला ही रही थी कि उसके टुटे फुटे टापरे में डा. दयाल ने अपने सहायकों के साथ प्रवेश किया । खाट पर लेटे मरीज और उसके नजदिक बैठी कमली दोनों ने डा. को चौंका दिया । अब डा. के हाथ तो मरीज की नब्ज टटोल रहे थे लेकिन आंखें कमली के अनगढ देहाती सोन्दर्य पर टिक गई थी । कमली भी फिल्मी हिरो जैसे इस गौरे चिट्टे शानदार शहरी साहब को एकटक निहारे जा रही थी . रामौतार को दवाइयां और जरुरी निर्देश देकर बडे बेमन से डा. दयाल अपनी टीम के साथ वापसी को मुडे कि उन पर बारिश मेहरबान हो गई । अचानक तेज होती बारिश के कारण डा. दयाल को 20-25 मिनीट कमली के टापरे में गुजारने पडे । और इतना समय काफी था उस टापरे मे दो अन्जान अपरिचित लेकिन जवान व्यक्तित्वों को एक दुसरे से प्रभावित होने के लिए | हालांकि कमली प्रभावित हुइ थी उस भव्य प्रभावी शहरी साहब को इतनी देर तक इतने नजदिक महसुस करने से जबकि शहरी सोन्दर्य के आदी

डा. दयाल शिकार हुए उस कमसिन निर्दोष अनगढ देहाती उफनते यौवन से।

इन 20-25 मिनिट में डाक्टर ने कमली के परिवार का उसकी समस्या और आवश्यकता का पुरा जायजा लेकर उन्हे हर तरह की मदद का भरोसा भी दे दिया था। नतीजतन अगले कुछ दिनों में ही कमली शहर जाकर सुबह 10 से 2 बजे तक का स्कुल पुरा कर 2 से 4-5 बजे तक डा. के क्लीनिक पर काम करने लगी।

कमली को याद आये वो शुरुआती अच्छे दिन। डा. दयाल और उनकी बहुत ही सीधी सादी देवी स्वरुप पत्नी डा. सरोज और उनकी नन्ही सी प्यारी बेटी खुशबु इन तीनों का हर बात में ध्यान रखती कमली ने सबका दिल जीत लिया था। जब दोनो पति पत्नी ड्युटी पर होते तो खुशबु का और सारे घर का ध्यान रखती कमली।थके हारे ड्युटी से आते पति पत्नी को तत्काल चाय नाश्ता देती कमली। क्लिनिक में मरिजों के चेकअप में उन्हे दवाईयां देने समझाने में डा दयाल का पुरा पुरा साथ दे रही थी कमली। और यही वक्त था जब कमली का नया जन्म हो चुका था कामिनी के रुप में।

खुद डा. दयाल ने एक दिन पत्नी के सामने ही बडे अपनत्व से कमली पर लाड जताते हुए उसकी बहुत सराहना की और घोषित किया कि एसी योग्य पढी लिखी लडकी का नाम कमली नहीं कामिनी होना चाहिये। और अपनी उम्र के 21वें साल को छुती कामिनी का शरीर सौष्ठव अपने नाम को सार्थक कर रहा था। । कामिनी अब इंजेक्शन लगाना स्लाईन चढाना बुखार चेक करना एसे सभी प्रायमरी काम करने लगी थी। उसके काम के बदले कामिनी को अच्छा मासिक वेतन भी मिल रहा था। गांव मे रहने वाला रामौतार अपनी गरीबी के दिन भुलने लगा था, बडा खुश था एसी बेटी पा कर।

कामिनी का रहन सहन पहनावा काफी बदल चुका था। कामिनी में आ रहे परिवर्तन से जहां डाक्टर दयाल बहुत मुग्ध हो रहा था वहीं पत्नी डा. सरोज कुछ कुछ संशय महसुस करने लगी थी। लेकिन डा. सरोज स्वभाव से बहुत शान्त सीधी और संकोची थी इसके पीछे बचपन से ही मां का साया ना होना, मायके में केवल बिमार वृद्ध पिता का होना भी एक कारण था। डा. दयाल सरोज के इस सीधे और कमजोर स्वभाव से वाकिफ थे और पुरा फायदा उठाना जानते थे।

कहते हैं आग और फूस का ज्यादा देर तक का साथ रहे तो परिणाम विनाश ही होता है। अब डा. दयाल और कामिनी में कौन आग था और कौन फुस ये तो सोचना होगा पर हां वातावरण का ताप बढने लगा था | जिसकी आंच डा. सरोज भी महसुस करने लगी थी। लेकिन केवल अनुमान और संदेह के आधार पर तो कुछ नहीं कहा जा सकता। डा.दयाल के हर काम में सहायता करने वाली उनका हर बात में ध्यान रखने वाली उन्मुक्त योवन की ओर अग्रसर कामिनी अब डा दयाल के दिलोदिमाग पर पुरी तरह छा चुकी थी। मरीजों के उपचार के दौरान आपसी शारीरिक स्पर्श दोनो के दिमाग में तीव्र उद्वेग पैदा करता था।

आंखें मटकाते हुए मुस्कराते हुए कामिनी डा दयाल के शरीर मे आग सी लगा रही थी। अब डा. दयाल दिन भर में यही मौका देखते रहते जब वे कामिनी के उद्धाम यौवन से परिपुर्ण शरीर के खास अंगो का स्पर्श सुख प्राप्त करें। और कामिनी भी प्रयास करती उन्हे एसे अवसर उपलब्ध कराने को। एसे मे अक्सर ये होने लगा कि कई बार डा. दयाल एकान्त पाते ही कामिनी को चुम लेते, उसे बांहों में भर लेते बल्कि कई बार कामिनी के सुपुष्ट अंगो का मर्दन भी कर लेते।

अब दोनो के बिच उस चरम काम सुख को प्राप्त करने में बहुत हल्का सा अवसर नामक अवरोध ही बचा था। और यह अवसर दिया खुद डा. सरोज ने। वो भी बेचारी क्या करती। देहरादुन में अकेले रहते वृद्ध पिता ने बेटी से मिलने की तीव्र इच्छा जताई तो सरोज रोक ना पाइ खुद को और चल दी बेटी को लेकर संशय, असमंजस और तनाव के साथ। इधर कामिनी ने गांव में बापु को खबर भेजी क्लीनिक में काम ज्यादा होने से अगले 4 – 5 दिन वो घर नहीं आयेगी। गरीबी से संपन्नता की ओर बढते रामौतार को इस खबर से कोइ फरक नहीं पडा।

और अन्ततः आ ही गई वो रात जो दो प्यासे शरीरों की पिछले दो सालों से जाग्रत आग को शान्त करने वाली थी। वो रात जो डा. सरोज के जीवन को अन्धकारमय बनाने वाली थी। और जमकर भोगा डा.दयाल और कामिनी ने उस रात को। सुबह देर से उठ कर डा. दयाल ने जैसे तैसे अपनी दिन की ड्युटी पुरी की और कामिनी तो दिन भर सोती रही जगती रही याद करती रही उस अलभ्य अनिर्वचनीय कामसुख को जो उसे जीवन में पहली बार जी भर के मिला। दोपहर बितते बितते पिछली रात की थकान जा चुकी थी और फिर आने वाली रात की कल्पना में मन की उत्तेजना चरम पर थी।

कामिनी ने बडे प्यार से, जतन से रात के लिये खाना बनाकर रखा। और डा. दयाल ने रतिसुख को बढावा देने के लिये इन्तजाम किया अंग्रेजी शराब का। कमजोर सी ना नुकुर करते कामिनी ने जीवन में पहली बार स्वाद लिया उस सोमरस का जिसे सदियों से सही गलत की मान्यताओं में उलझे क्या देवता क्या शैतान और क्या मनुष्य सभी पी रहें हैं। पीने के बाद कामिनी ने नशे की उन्मुक्तता में डा. दयाल के सामने खुलकर यह शर्त रख दी कि मुझे भोगना है तो मुझसे शादी करो।

दुनियादारी में कुशल डा. चौंके उन्हे गुस्सा भी आया कामिनी की इस जुर्रत पर लेकिन बड़ी कुशलता से उन्होंने कामिनी को पुरा आश्वस्त किया कि शीघ्र ही वो उससे शादी कर लेगा और भोली, मासुम लेकिन चालाक होती कामिनी समझ रही थी कि इतना आसान नहीं है ये सब, फिर भी उसका अब यही एक सपना था मिसेज डा. दयाल बन जाने का किसी भी कीमत पर किसी भी हालत में।

दूसरी रात भी अभिसार की रात थी , दोनो विषयासक्त देह रात भर एक दुसरे मे समाती रही अलग होती रही फिर समाती रही । और अगली तीन रातें भी एसी ही गुलजार रही । आज डा.सरोज की वापसी का दिन था । कामिनी ने सारा घर व्यवस्थित कर दिया था | सरोज की वापसी से दोनो खिन्न थे | असुविधा महसुस कर रहे थे लेकिन भयभीत जरा भी नहीं थे । किसी भी अनैतिक कार्य को प्रथम बार करने में ही पाप की अनुभुति होती है और दिल में भय पैदा होता है | फिर तो ये सब सहज और जरुरी होता जाता है । डा. सरोज ने पता किया कि उसकी अनुपस्थिति में कामिनी पुरे पांचो दिन गांव नहीं गइ बल्कि सारा समय क्लीनिक पर भी न बिताते हुए घर पर ही रही ।

काफी विवाद हुआ पति पत्नी के बीच । खुब रोई डा सरोज ,पति से केफियत भी मांगी कामिनी को घर पर सुलाने की । डा. दयाल ने बडी सहजता से लिया सरोज के विलाप को ,कहा पांच दिन से घर के और क्लीनिक के सारे काम कर रही हे कामिनी ।

कौन कौन से काम कर रही थी कामिनी तुम पांच दिनो तक ? सरोज ने कामिनी से डा. दयाल के सामने ही जोर देकर पुछा । एक क्षण ठिठकी कामिनी फिर एक नजर डा. दयाल की ओर देखा और पुनः सरोज से आंखें मिलाते हुए जवाब दिया , जो जो भी काम डाक्टर साब ने बताये वो सारे काम किये । सरोज हतप्रभ थी एसे जवाब से । मगरुर लडकी ! सरोज का ङाथ उठा कामिनी पर तभी डा. दयाल ने ङाथ पकड लिया सरोज का ।

निकल जा मेरे घर से बदचलन , पांव मत रखना आज के बाद मेरे घर में सरोज ने चिखते ङुए कामिनी को बाहर जाने का इशारा किया । कामिनी खडी रही तभी डा. दयाल ने कामिनी को आंखों का इशारा करते हुए कहा , कामिनी तुम क्लीनिक पर जाओ मैं आ रहा हुं । पैर पटकती हुइ कामिनी के जाते ही सरोज रो पडी जोरों से, प्लीज इसको आज ही इसके गांव रवाना करो । मैं इसे एक पल भी नहीं देखना चाहती । सरोज की निगाहें डा.दयाल के चेहरे पर आते जाते भावों पर गौर कर रही थी मानो वो डा. के चेहरे के भावों से अपना मुल्यांकन कर रही थी । देखो सरोज अनावश्यक जिद ना करो । कामिनी के बिना हमारे क्लिनिक और घर का सारा काम बिगड जायेगा । उसे अब नहीं हटाया जा सकता ।

इतनी महत्वपुर्ण हो गई है वो अब आपके लिये ? मुझसे भी ज्यादा ?हां कुछ मामलों में तुमसे भी ज्यादा। कौन से मामले हैं वो जो एसी आवारा बदचलन लडकी को हमारे यहां रखना इतना जरुरी है ? तुम सब समझती हो सरोज ,में इसका जवाब देना जरुरी नहीं समझता । यह कहते हुए डा. दयाल रोती बिलखती सरोज को छोड क्लीनिक पर पहुंच गये जहां बिफरी शेरनी की तरह बैचेन कामिनी डा. का इन्तजार कर रही थी । डा. दयाल को देखते ही गुर्राई ,मुझे क्या करना है अब डा. साब ?

कुछ नहीं कामिनी तुम अब घर का कोई काम नहीं करोगी । तुम्हे क्लीनिक ही सम्हालना है । क्यों ? एसा क्यों ? मेरी बात को समझो , कुछ ही दिन में सब ठिक हो जायेगा । तुम कुछ दिन तक शाम को गांव चली जाया करो और यहीं रात रुकना हो तो मैं क्लीनिक का पिछला कमरा साफ करवा देता हुं । में तुमसे रोज ही मिलता रहुंगा ।

पर एसा कब तक चलेगा डा. साब मैं अब तुम्हारे बिना एक दिन भी नहीं रह सकती । कामिनी रुआंसी हो उठी । प्लीज थोडा धीरज धरो ,हम सब ठीक कर लेगें ।

अन्ततः एसा ही हुआ । कामिनी अब डा. दयाल के घर नहीं जाती अपितु क्लीनिक पर ही रहती . शाम को कभी घर चली जाती कभी वहीं रात रुक जाती । डा. दयाल का ज्यादातर समय अब क्लीनिक पर ही बितने लगा । शाम को भी देर तक डा. क्लीनिक पर ही रहते इस बिच मौका मिलते ही दोनो का मिलन हो जाता । प्यास बुझ जाती । लेकिन इस प्यास का यह भी उसुल है कि सहज उपलब्धता प्यास को कम करती है जबकि रुकावटें प्यास को जबरदस्त ढंग से भडकाती है । दोनो कामपीडित देह चाहती थी पुर्ण स्वतंत्रता, निर्बाध मिलन , अनवरत संलग्नता ।

डा सरोज काफी लड झगड कर , डा दयाल को टोक टोक कर ताने मार मार कर थक चुकी थी । कई दिनें तक दोनो के बिच अबोला रहा । डा दयाल ने सारी कह कर वातावरण को नार्मल करने का प्रयास किया । डा सरोज का इस तरह के गृहस्थ जीवन से मोह भंग होने लगा था । लड झगड कर अपना प्यार पाने का विचार उसे बिलकुल गवारा ना था ।एसे कुसमय में याद आइ उसे अपने गुरु स्वामी आत्मानन्द की । स्वामी आत्मानन्द का हरिद्वार में विशाल आश्रम था । वर्ष में एक बार स्वामीजी के प्रवचन का आयोजन नगर में अथवा इस क्षेत्र में होता रहता था । सरोज ने इस सारी घटना का विस्तार से ना सिर्फ जिक्र ही स्वामी आत्मानन्द से किया था बल्कि उन्हें यहां तक कह दिया था कि बेटी के कारण ही उसे रुकना पड रहा है अन्यथा अब उसे जीवन से कोइ मोह नहीं रहा । स्वामीजी ने उसे समझाया था कि सब ठीक हो जायेगा और यह भी कहा कि जरा भी दिमागी विचलन हो तो सीधे आश्रम ही चली आना कोइ गलत कदम मत उठाना । डा. दंपत्ति का जीवन युं ही तनावपुर्ण चल रहा था । डा.दयाल कुशलता से बिलकुल गुप्त ढंग से अपनी अय्याशी के मौके निकाल ही लेता था जबकि सरोज का ज्यादातर समय अब धार्मिक क्रियाकलाप ,पुजापाठ में बितने लगा था । एसे में आइ वह एक बरसाती शाम जिसने सरोज के जीवन की धारा ही बदल दी ।

डा.दंपत्ति को एक पारिवारिक मित्र के यहां विवाह समारोह का निमंत्रण आया था , विवाह स्थल 25-30 किलोमीटर दुर था । दोनो पति पत्नी दोपहर होते होते वहां पहुंच गये थे और देर रात तक लौटने का प्लान था । अचानक क्लीनिक से एक सिरियस केस का फोन आने से डा.दयाल सरोज से वापस लौटने का कह कर चल दिये ।

क्लीनिक पहुंचे , नया मरीज भर्ती अवश्य हुआ था लेकिन ज्यादा सिरियस नहीं था । उसे आवश्यक ट्रीटमेन्ट देकर डा.दयाल वापस फंक्शन में जाने को घर पर तैयार हो रहे थे कि मौका देखकर कामिनी घर पर आ गइ दोनो बेताब थे मोके का फायदा उठाने को , रोक ना सके कुद पडे वासना के गहराते सागर में । महिनों बाद आजादी का अहसास हो रहा था । आधे घंटे बाद ही डा.दयाल ने जाना चाहा लेकिन कामिनी छोडने को तैयार नहीं थी ,लिपटी थी जैसे अब कभी नहीं छोडेगी उसकी प्यास बढती ही जा रही थी । अन्ततः डा.दयाल ने सरोज को फोन लगा ही दिया कि वो हास्पीटल में उलझ गया है देर हो जायेगी हो सकता हे न आ सके, फंक्शन पुरा करके डा. माथुर की गाडी से सरोज आ सकती है । सरोज चिन्तित थी जल्दी घर पहुंचने के लिये उसे पुरा सन्देह था कि इस तरह जाना और रुक जाना एक प्लान ही हो सकता हे । वह इसी प्रयास में थी कि किसी साधन से जल्दी घर पहुंचे ।

डा. दयाल को अन्दाजा था कि सरोज किन्ही साधनो से जल्दी भी आना चाहेगी तो भी उसे तीन से चार घंटे तो लगेंगे ही और इतना समय पर्याप्त था दोनो की भुख प्यास मिटाने के लिये । दोनो शरीर एक दुसरे में समाने लगे थे । इन्ही रंगरेलियों के चलते अचानक बाहर हुइ कुछ आहट से दोनो चोंके सम्हलते तब तक सरोज अन्दर आ चुकी थी । वस्त्रहीन डा दयाल ने लपक कर बेडरुम का दरवाजा बन्द किया और दोनो शीघ्रता से कपडे पहनने लगे । सरोज दोनो हाथों से ठोकती रही दरवाजा लेकिन पुरे कपडे पहन कर ही डा.दयाल ने दरवाजा खोला और दरवाजा खोलते ही कामिनी तेजी से निकल कर बाहर चली गई । डा. दयाल आगबबुला होती चिखती चिल्लाती सरोज को शान्त करते रहे । अचानक सरोज चुप हो गइ दुसरे कमरे में जाकर दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया ।

तभी सरोज को बाहर सोती बेटी का ध्यान आया पुनः दरवाजा खोलकर बेटी को लेकर कमरे में बन्द हो गई । घंटो डा. दयाल दरवाजा बजाते रहे लेकिन दरवाजा नहीं खुला । अन्ततः डा. दयाल देर रात थक कर , दो पेग चढा कर हाल मे ही सो चुके थे । रात भर की जगी सरोज काफी सोच विचार कर निर्णय ले चुकी थी । खुद के और बेटी के कुछ कपडे और कुछ रुपये पर्स में रख सुरज निकलने के पहले ही डा. दयाल को हाल में सोता छोड एक विरक्त नजर डालते हुए निकल कर पहुंच चुकी थी रेल्वे स्टेशन । उसका लक्ष्य था स्वामी आत्मानन्द का आश्रम हरिद्वार ।

क्लीनिक के पिछले कमरे में बेड पर रात भर करवटें बदलती, सोती जगती कामिनी बेचेन थी अब क्या होगा ? क्या उसे अब गांव जाना होगा , हमेशा के लिये ? बडी मुश्कील से सुबह सुबह नींद लगी होगी कि डा. दयाल ने उसे जगाया , वो चली गई कामिनी । कौन ? कामिनी हडबडाकर उठ बैठी । सरोज , डा. दयाल ने जवाब दिया । अब क्या होगा डा. साब ? मेडम ने तो सब कुछ देख लिया है , बडी बात हो गइ ना ? देखो किसी से भी ये सब कहने की जरुरत नहीं हे । मेडम अपने मायके गइ है कुछ दिनों के लिये । तुम बिलकुल नार्मल ही रहना , बाकी मैं सम्हाल लुंगा ।

पर मुझे मत छोड देना तुम , मैं अब बिलकुल नहीं रह सकती तुम्हारे बिना प्लीज । हां हां ठीक हे तुम जरा धीरज रखो डा. दयाल ने कामिनी की पीठ सहलाइ ।

हम शादी कब करेंगे डा. साब कामिनी ने डा. के गले में बांहे डालते हुए लिपट जाना चाहा । डा. दयाल ने उसे झिडकते हुए एक तरफ किया , तुम्हे शादी की पडी है यहां सब उलझता जा रहा है । तुम एसा करो कुछ दिन गांव चली जाओ ।

नहीं में अब दुर नहीं रहुंगी । मुझे यहीं रहने दो मैं कुछ नहीं बोलुंगी प्लीज ।

डा दयाल कुछ जवाब दिये बिना वापस अपने क्वार्टर की ओर चल दिये थे । उनका दिमाग समस्या की गंभीरता को तोल रहा था । घर के हाल में घुसते ही उनकी नजर पडी सेन्ट्रल टेबल पर रखे कापी के एक पन्ने पर , बिना संबोधन के सरोज ने दो पंक्तियां लिखी थी,, जा रही हुं में हमेशा के लिये , अब मुझसे मिलने की मुझे खोजने की कोशीश मत करना ,, डा . दयाल के दिमाग मे एक साथ दो बातें कोंधी पहली तो यह कि सरोज कोइ लफडा खडा नहीं कर रही है उसका मन का भय कुछ कम हुआ । दुसरे नया भय , क्या सचमुच सरोज अब वापस नहीं आयेगी ? सिर पकड के आधे घंटे से बेठे डा.दयाल अभी तक तय नहीं कर पाये थे कि ये अच्छा हुआ य़ा बुरा हुआ ।

तभी उनके बालों में ङाथ फेरती कामिनी की आवाज सुनाइ दी खाना बना दुं ?

डा.दयाल ने जवाब दिये बिना आलमारी में रखी व्हीस्की की बाटल की ओर इशारा किया कामिनी लपक कर बाटल और दो ग्लास ले आइ । दोनो मिलकर सारी परेशानी भुलने की कोशीश करने लगे । अब कोइ अवरोध नहीं था दोनो के बिच । कोइ रोकने वाला नहीं ,कोइ टोकने वाला नहीं । । स्टाफ वालों और आसपास वालों से छुपते छुपाते दोनो स्वच्छंद अय्याशियों में डुब गये । नित नये तरिके से रोज रोज मजे लेने लगे ।लेकिन अति कहीं भी हो किसी भी क्षेत्र में हो अन्ततः हानिकारक ही होती है । डा.दयाल वो भंवरा था जिसे किसी एक फुल के पराग कण बांध नहीं सकते थे । कुछ ही दिनों में डा. को कामिनी से उक्ताहट होने लगी वैसे भी कामिनी से खेलते खेलते डा. को 3 साल होने को आये थे इस बिच बढती उम्र और तीन चार बार कराये एबार्शन से कामिनी के शरीर का आकषर्ण फिका पडता जा रहा था चेहरे की चमक अब पहले सी नहीं रह गइ थी । मदमाती मस्त आंखों के निचे स्याह काले धारे पडने लगे थे ।

डा. दयाल का ज्यादा समय अब शासकिय असपताल में गुजरने लगा था । कामिनी क्लीनिक पर ही रहती उसे अस्पताल आने की परमिशन नहीं थी । जब तब

कामिनी द्वारा शादी की जिद किये जाने पर डा. का एक ही जवाब होता कि पहले सरोज से तलाक की कार्यवाही हो जाने दो। मजबुर असहाय कामिनी कुछ न कर पाती उसकी बोखलाहट , चिडचिडापन बढता जा रहा था । इसी बिच कामिनी को आया बुखार टाइफाइड में बदल गया . उसी क्लीनिक में पुरे एक माह भरती रही कामिनी . य़द्यपि डा.दयाल ने कामिनी के इलाज में कोई कमी नहीं रखी लेकिन बुखार के बाद आराम करने के नाम पर कामिनी को गांव भेज दिया। कामिनी के ना नुकुर करने के बावजुद उसे पुरे दो माह गांव रहने की हिदायत दे डाली । कामिनी ने डा. को गांव आकर मिलते रहने की बहुत कसमें डाली लेकिन डा. कुछ भी बहाने बना कर टालता रहा।

गांव में रहते हुए कामिनी का एक एक दिन पहाड सा गुजरता वह बिमार हालत में भी कई बार शहर आने की सोचती पर डा. दयाल जाते जाते उसके बापु के कान में क्या मंत्र फुंक गया था कि उसके बापु ने उसकी एक ना सुनी । दुखी कामिनी घर में अकेली पडी पडोस की रमली काकी को अपने सारे सुख दुख सुनाकर जी हलका करती । रमली काकी उसे धीरज तो बंधाती पर चेतावनी भी देती उसे कमली कह कर ही बात करती । रमली काकी के अनुसार,, मरद जात तो कुतरा से जरा कम नी हे झां खुल्लो मिल्यो कि मुं मारियो,, लेकिन कामिनी को डा. पर पुरा भरोसा था वो सपने देख रही थी तबियत ठीक होते ही शहर जाकर डा. का घरबार सम्हालने के।

जैसे तैसे एक आध महीना बिता होगा कि कामिनी को मोका मिला शहर जाने का । रामौतार कहीं बाहर गया था और कामिनी की तबियत भी ठीक हो रही थी । भर दोपहरी में कामिनी रमली काकी से बोलकर निकल पडी और पहुंची सीधे क्लीनिक। वहां डा. दयाल तो नहीं थे पर स्टाफ के रामसिंह ने मुस्कराते हुए बताया ,,डा. साब तो घर पर आराम करने गये हैं,, कामिनी जब डा. के घर की ओर मुडी तो रामसिंह ने रोका अभी मत जा , थोडी देर यहीं रुक , डा.साब ने किसी को भी घर आने का मना किया है। कामिनी की त्योरियां चढ गई , मेरे लिये कोइ मनाही नहीं है , मेरा ही घर है वो समझा ? अरे उनके मेहमान आये हुए हें अभी मत जा । कामिनी बिना रुके डा. के घर की ओर चल दी । घर के बाहर जरा रुकी , अन्दर से हंसी मजाक की आवाजें आ रही थी , निश्चित रुप से उसमें एक आवाज किसी स्त्री की भी थी । कामिनी को काटो तो खुन नहीं। कालबेल बजाइ कोई जवाब नहीं लेकिन हसीं मजाक की आवाजें बन्द हो चुकी थी।

कामिनी लगी जोरों से दरवाजा ठोकने। कुछ क्षणों मे ही डा. दयाल ने दरवाजा खोला , कामिनी तुम ? इस वक्त यहां ? कामिनी ने कुछ ना सुना डा. को धकेलते हुए सीधे बेडरुम में पहुंच गइ और वहां का नजारा देखते ही खडी रह गइ । बिस्तर पर शरीर पर चादर डाले अधनंगी सी लेटी सकुचाती हुइ एक 17-18 साल की लडकी को देखा । घुमकर डा. की ओर देखा और झपट पडी डा. पर , धोखेबाज कमीन बदमाश अब में समझी क्यों तु मुझको गांव से लाना नहीं चाहता था । तुने मेरी जिन्दगी बरबाद करदी , अब इसको बरबाद करेगा।

डा. ने उसे अपनी बांहो मे जकडते हुए चुप करने की कोशीश की , लेकिन कामिनी तो शेरनी की तरह गुर्राती हुइ बेकाबु हो रही थी , आज के आज ही मुझसे शादी कर वरना सारे शहर में तुझे बदनाम कर दुंगी , पुलिस में रिपोर्ट कर दुंगी।

ठीक है जो तु कहेगी वह सब होगा तु चुप रह। डा. ने समझाया। तब तक बिस्तर पर अधनंगी पडी लडकी तेजी से उठी और अपने कपडे पहन कर बाहर भाग चुकी थी । उसकी ड्रेस देख कर कामिनी ने जाना वो भी एक नर्स ही थी। डा. ने समझाया कामिनी को , चल गांव चलते हें तेरे बापु से बात करने। बेकाबु होंशोहवास में कामिनी डा. की गाडी मे बेठी यही सोच रही थी कि पहले शादी हो जाये फिर उस चुडेल से निपटुंगी जो डा. के बिस्तर में मेरी जगह सो रही थी।

गांव पहुंच कर डा. ने कामिनी को उसके टापरे पर उतारकर रामौतार को गाडी में बिठाया और वापस शहर की ओर गाडी घुमा दी। कामिनी को बस यही बताया कि अभी आते हें शादी के कागज तैयार करके । बदहवास कामिनी रात भर इन्तजार करती रही बापु का और डा. का। कोई नहीं आया। रमली काकी उसे कमली , कमली कह कर समझाती रही बडे लोगों की बदमाशी का , मरद जात की लुच्चई का कोई अन्त नहीं है कमली उसे भुल जा । रोती रही कामिनी रात भर और भ्रमित होती रही कि वो कामिनी है या कमली . रात भर संताप करते करते सुबह सुबह नींद लगी होगी कामिनी की (ओफ अब इसे कामिनी कहा जाये या कमली) कि अचानक बाहर से आने वाली आवाज से कामिनी उर्फ कमली चौंक कर उठी । देखा तो बापु गिरते पडते , लडखडाते आ रहे थे शरीर पर चोंटो के भी निशान थे। कमली चिल्ला पडी क्या हुआ बापु ? कैसे हुआ ये सब, डा. साब कहां है ?

कराहते हुए रामौतार बोला मत पुछ बेटी । डा. का ही किया धरा है ये सब।

क्या कह रहे हो बापु ? डा.साब ने पिटवाया तुमको ? कमली चीख उठी।मुझे सब सच सच बताओ।

मैं सब बता दुंगा बेटी पर पहले तु एक सोगन खा मेरे सामने। क्या बापु ? कमली विचलीत हो रही थी। तु आज के बाद उस कमीन डा. का नाम भी नहीं लेगी ,उस के घर पांव भी नही रखेगी। बोल बेटी मानेगी मेरी बात ? कमली तो मानो आकाश से जमीन पर गिरी वो भी कांटो भरी जमीन पर । क्यों बापु एसा क्यों ? वो तो मेरे से ब्याह रचाने को तैयार बैठा है।

नहीं बेटी तु भरम में जी रही है वो एक नंबर का बदमाश है उसी ने पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी है कि कमली नाम की उसकी नौकरानी उसके घर से सोने के कडे और नगद रुपे दस हजार की चोरी करके गांव भाग गई है ।कमली बेहोश सी होने लगी उसे विश्वास नहीं हो रहा था जो वो सुन रही थी , रामौतार बोले जा रहा था , मुझे थाने

पर बन्द कर दिया था और पुलिस ने बहुत मारा फिर डा. ने ही छुडाया वो भी इस शर्त पर कि आज के बाद मैं या तु उसके घर कभी भी नहीं जायेंगे वरना वो हम दोनो को जेल में बन्द कर देंगे। बेटी तु डा. को भुल जा ।
बापु एसा मत बोल , रो पडी कमली, मैं बरबाद हो जाउंगी , मै जी नहीं पाउंगी उसके बिना कमली विलाप करने लगी। तभी पडोस से रमली काकी भी आ गई उसने कमली को अपनी बाथ मे भर लिया , चुप कर चुप कर कमली रो मत ई तो सबइ मरद लुच्चेइ होत हैं मेरी फुल सी बिटिया को बिगाड के बरबाद कर दिया । पहले अपनी घरवाली को त्रास दिया उसे बेघर किया , फिर तुझे पुरा निचोड के फेंक दिया . अब किसी और को बरबाद करेगा। ई तीन तीन औरतन का जीवन नरक करने वाले मरद का तो कुछ नही बिगडा। या दुनिया एसीज हे बेटी। तु धीरज धर।

लेकिन कमली को धीरज कहां था उसके तो सारे सपने घराशाई हो गये थे । क्या क्या सोचा था उसने । रामौतार तो अद्धा पी के बेहोश होता सो गया लेकिन काकी की गोद मे कमली सारी रात रोती रही । सुबह देर को जागी कमली एक घंटे से टापरे की कच्ची दिवार में लगे आईने में खुद को निहारती खोज रही थी उस मासुम अल्हड कमसिन कमली को या मदमाते यौवन और खुबसुरत जिस्म वाली उस कामिनी को जिसने डा. दयाल को दिवाना बना दिया था उसका। लेकिन उसे आईने में ना तो वो कमली मिली और ना ही वो कामिनी , हां उस आईने में उसे दुखी होती रोती कलपती डा. सरोज जरुर दिखी । कमली के कानो में रमली काकी के स्वर गुंज रहे थे , तीन तीन औरतन का जीवन नरक बनाने वाले इ मरद जात का क्या बिगडा। लेकिन कमली जो डा. की संगत मे रह कर कुछ कुछ पढे लिखे लोगों जैसा भी दिमाग रखती थी , ये भी सोच रही थी कि , हर औरत का जीवन बिगाडने में मरद के साथ किसी ना किसी औरत का भी हाथ रहता जरुर है।

नलिन खोईवाल

376-ए,सुदामा नगर,
इंदौर-452009

दो नवगीत

ज्योति कलश उतार दें
जलता जब नन्हा दीपक,
आँगन का तम हरता।

जगमग-सी द्वार-देहरी,
बिखरे झिलमिल तारे।
आलोकित दीपशिखा से ,
हारे यह अंधियारे।
पथ में फैला तिमिर घना,
अंतस उजास भरता।

सूरज से लें ज्योति कलश,
धरती पर उतार दें।
अंधेरा ना रहे शेष,
दीपधन उपहार दें।
मंद-मंद ऐ दीपक जल,
धरा से तमस छटता।

है बहुत उदास चेहरे,
हम उन्हें मुस्कान दें।
नाउम्मीद जिंदगी को,
आशा का जहान दें।
अब भी शेष है उम्मीद,
तिमिर सदा ना रहता।

******

द्वार पर एक दीप जलाना।
तम के यम को दूर भगाना।।

सद्गुण का संचार करें हम,
अवगुण का संहार करें हम,
विश्वास के दीप जलाकर-
तिमिर पर प्रहार करें हम।

है घना तिमिर अंतर्मन में,
ज्ञान का उजास फैलाएं।
मन की खिड़कियाँ खोल कर हम,
निशपति घर-आँगन बिखराएँ।

ज़िंदगी को सबल बनाएँ,
मुश्किल से भी हम तर जाएँ।
शुभ दिन का हम अभिनंदन कर-
नयन में एक सपन जगाएँ।
द्वार पर एक .....

वायरस

श्यामल बिहारी महतो

जन्म पंद्रह फरवरी उन्नीस सौ उन्हतर
मुंगो ग्राम ,पोस्ट -तुरीयो
पिन कोड 829132
जिला -बोकारो, झारखंड
शिक्षा स्नातक
प्रकाशन बहेलियों के बीच कहानी संग्रह भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित तथा अन्य दो कहानी संग्रह बिजनेस और लतखोर प्रकाशित और कोयला का फूल उपन्यास प्रकाशित

संप्रति: तारमी कोलियरी सीसीएल में कार्मिक विभाग में वरीय लिपिक स्पेशल ग्रेड पद पर कार्यरत और मजदूर यूनियन में सक्रिय

गांव के इतिहास में पहली बार ऐसा हो रहा था। किसी मामले को लेकर रात के बारह बजे पंचायत बैठी थी। इससे पहले इस तरह का मामला न देखा न सुना गया था। फैसले के इंतजार में पूरा गांव जगा हुआ था। छोट-बोड की नींद उड़ी हुई थी..

गांव के मोबाइल गैंग की गुप्त सूचना पर गांव के चौकीदार की अगुवाई में गांव के बाहर इमली पेड़ के नीचे एक प्रेमी जोड़े को उस वक्त दबोच लिया गया था जब वे दोनों प्रेम के सागर में आलिंगनबद्ध-एक्काकार थे। चौदह वर्षीय हाई-स्कूली छात्रा चांदनी का दिल सत्रह वर्षीय ट्रेक्टर चालक सूरज पर आ गया था। तभ से सूरज इंटा-बालु की तरह चांदनी को भी ढो रहा था।

उन्हीं दोनों की पंचायत बैठी हुई थी। फैसले के इंतजार में पूरा गांव जगा हुआ था।

पंचायत से थोड़ी दूर चौकीदार आज का युग कथा सुना रहा था-" आज आदमी मोबाइल युग में जी रहा है, जहां रिश्तों की कोई गारंटी नहीं है। कब कहां किस मोड पर किसके दिल में किसका रिंग टोन बजने लगे कह पाना मुश्किल है।

एक माह पहले इसी गांव के दशरथ जी की पुतोहू के दिल में पड़ोसी गांव के डीजे मास्टर डेगलाल का रिंग टोन बजने लगा। एक रात पुराने बरगद पेड़ के नीचे दोनों का रिचार्ज हुआ। साप्ताह दिन बाद ही दोनों गांव के नेटवर्क से बाहर ! वापस हुए तो तमाशा भी हुआ। पंचायत बैठी, दशरथ जी के पुत्र राम ने सीता.. नहीं नहीं ..सविता को वापस रखने से साफ इंकार कर दिया-" अब हमारे घर में उसके लिए कोई जगह नहीं . है.।"

डेगलाल ने डीजे बजाते हुए कहा-" सविता भाभी अब मेरी बीबी, इसके रिचार्ज में कभी कोई कमी होने नहीं देंगे ...!"

बेचारे दशरथ जी ने-राम " जी" से कुछ कहना चाहा, उसके पहले एक ने कहा दिया-" अब जी और घी लगाने का समय गया..!"

डेगलाल के दूरदर्शन पर "डीजे " डांस करती सविता भाभी ने कहा-" डेगलाल के दमदार रिचार्ज पर तो अब मैं जिंदगी भर आनलाईन रहूंगी..!"

कहने -करने के लिए पंचों के पास कुछ शब्द बचा नहीं था, सहमति पर स्वीकृति के मुहर लगाये,पंच खर्चा लिए और चलते बने।

परन्तु चांदनी और सूरज का फैसला करना आसान नहीं था। दोनों नाबालिग।थाने जाने से कोर्ट कचहरी का लफड़ा बढ़ सकता था। और नाबालिग की शादी कराना भी जूर्म ! ऊपर से बेटी का बाप रिश्ते में गारंटी चाहता था और बेटा का बाप नोट ! तनाव में पहर कट रही थी। पहले की शादियों में गारंटी हुआ करती थी, जैसे मोबाइल कंपनियां शुरू शुरू में गारंटी दिया करती थी,अबवारंटी देती है-गारंटी नहीं। कारण सबका नेटवर्क उसके रिचार्ज पर निर्भर करता था। जिसका रिचार्ज जितना ज्यादा होगा-उसका नेटवर्क उतना ही फास्ट होगा। अगर रिचार्ज न हो तो मोबाइल का नेटवर्क

गायब ! अगर पत्नी का ठीक से रिचार्ज न हो तो पति के नेटवर्क से पत्नी गायब ! कारण रिश्ते में वायरस घूस जाता है और जम्प कनेक्शन किसी के साथ हो जाता है ।यह कोई नई बात नहीं है-सदियों से यह सिलसिला जारी है-तरीके बदल गये है । पर यहां तो चांदनी और सूरजके बीच पंचायत ही वायरस बन घूस आयी है.जिससे युवा वर्ग में घोर असंतोष था ।" इसके साथ ही चौकीदार चुप हो गया था ।

घटना करम परब के संजोत रात की थी ।करम आखडा में डीजे की धून में करमैती सब नाच में मशगूल थीं । लेकिन चांदनी का मन डांस में जरा भी नहीं लग रहा था । फोन पर कॉलटोन सुनने को उसका दिल बेकरार था । और उसके दोनों कान किसी के फोन के इंतजार में खड़े थे ।उसका बैचेन मन बार बार करम आखडा से बाहर भाग जाने को मचल रहा था, जैसे वृन्दावन में कृष्ण की बांसुरी की धुन सुनने को राधा बैचेन हो जाया करती थी । परन्तु यह वृन्दावन नहीं-बगडेगवा गांव था -डेगेडेगे लड़कों का मोबाइल गैंग बैठा हुआ था ।

दो दिन पहले करम परब की खुशी में बारह हजार का " वीवो " मोबाइल चांदनी को उपहार में देते हुए सूरज ने कहा था-" मेरे लिए करम आखडा का तुम मस्त वीडीयो बनाना-फिर हम दोनों उसी जगह मिलेगें -जहां कोई आता-जाता नहीं...।"

चांदनी उन्हीं के ख्यालों में खोई थी कि उसका " वीवो " बज उठा-" मैं आ रही हूं ...।" और फोन कट हो गया था । चांदनी ने इतनी चतुराई से फोन निकाला, फिररिसीवकिया औरटॉप के अन्दर डाला। शायद ही उस पर किसी की नजर गई हो, ऐसा लगा था । अगले ही पल वह करम आखडा से गायब हो चुकी थी ...!

" किसी ने देखा तो नहीं तुम्हें आते हुए..!" सूरज चांद की मधुर रोशनी में चांदनी से चिपक गया था ।

दो बेकरार दिल को बेकाबू होने में देर न लगी । सांसों की लपटों से दोनों सुलगने लगे थेऔर पांव तले के पत्ते चीखने चिल्लाने लगे थे .!

भोर भोरमें साहस बटोर कर पंचों ने एक स्वर में कहा-" तुम दोनों ने जो अपराध किया है, अगर पंचायत माफ भी कर दे तो भी कानून तुम्हें माफ नहीं करेगा...।"

"लेकिन हम तुम्हें कानून के हवाले नहीं करेंगे ...।" मुखिया जी ने बात का शिरा पकड़ते हुए कहा-" तुम दोनों को सजा पंचायत देगी और सजा ये है कि तुम दोनों को शादी करनी होगी..। क्या तुम दोनों तैयार हो...?"

" हमें मंजूर है..!"सूरज ने कहा

" मुझे भी..।" चांदनी ने हामी भरा ।

" परन्तु शादी अभी नहीं होगी, शादी करने के लिए पहले तुम दोनों को बालिग होना होगा, यही सजा होगी..।"

" हमें मंजूर है....!"दोनों ने एक साथ कहा

" मां बाप में से किसी को कुछ कहना है ?"

" मुझे पंचायत का फैसला मंजूर है ।" लड़की का बाप रघु महतो बोला

" और आपको विपत कुछ कहना है..?" मुखिया ने लड़के के बाप से पूछा था

" जैसा पंचों का फैसला....।"

" अब इस पर कोर्ट एग्रीमेंट होगा... राजेश बाबू . एक एग्रीमेंट पेपर चाहिए..!"

" मुखिया जी इतनी रात .! कोर्ट बंद .. कहां मिलेगा..!"

" राजेश बाबू पुण्य का काम है , देखिए आपके पास मिल जायेगा....!"

" मुखिया जी रात और दिन में आप फर्क नहीं समझते है.. देखता हूं...!!

राजेश बाबू उठकर घर की ओर चल पड़े थे...!

बगडेगवा गांव में समय ने जैसे बगावत कर दिया था..!

पंचायत के फैसले का अभी महज आठमाह ही बीता था किनोवें माह बच्चे की किलकारी से बगडेगवा में डीजेफिर बज उठा तो लोग जाने पंचायत के कारावास में कन्हैया का जन्म हो चुका है!जिसने सुना वही दूसरे को सुनाने लगा-

“ कैसा तो युग आ गया,पंच-पंचायत की इज्जत भी नहीं रहने दी ।’

“ अब पंचायतके दिन लद गए...!”

“ छि: छि:.. आज के बच्चों में ऐसी आग लगी रहती है कि पूछो मत.. शुरू हुआ तो निकाल कर ही ठंडा होगा..!”

‘” बिन शादी के ससुराल जाने में जरा भी शर्म नहीं आई चांदनी को ....!”औरतें चटखारे ले रही थीं ।

जंगल में लगी आग की तरह बात गांव में फ़ैल गई।बच्चे की बात मुखिया जी के कानों से जा टकरायी ।लगा अबोध बच्चे ने कान में पैशाब कर दिया । गुस्से से चेहरा तमतमा उठा । उसके पंचायत के फैसले को पकौड़ा बना दिया और उसे कोई भी खा सकता है। उन्होंने चौकीदार को हांक लगाई ।वह दौड़ा दौड़ा पहुंचा था पंचायत घर ।

इस बार पंचायत दोपहर बाद ही बैठ गई थी ।

जहां मुखियाडिलूमहतो बार बार चांदनी और सूरज पर क्रोधित हो रहे थे-“तुम दोनों ने पंचायत के फैसले को मजाक उड़ाया औरएग्रीमेंटको तोडा है,घोर अपराध किया है और इसका सबूत है तुम्हारी गोद में यह बच्चा !”

“ हमने एग्रीमेंट को नहीं तोड़ा है मुखिया जी !”चांदनी भी चुप रहने वाली नहीं थी ।

“ एग्रीमेंट में साफ साफ लिखा है कि बालिग होने तक तुम दोनों शादी नहीं कर सकते हो-तुमने तो बच्चा पैदा कर दिया। यह एग्रीमेंटटुटना नहीं हुआ..?”

“ हम तो आज भी कुंवारे हैं मुखिया जी..!”सूरज भला कैसे चुप रहता ।

“ फिर यह बच्चा कैसे पैदा हो गया...?”

“ एग्रीमेंट कागज पर लिखा है बालिग होने तकहम शादी नहीं कर सकते हैं-परन्तु यह कहीं नहीं लिखा है कि हम बच्चा पैदा नहीं कर सकते हैं ...! चांदनी कुछ ज्यादा ही खुल गई थी ।साल भर पहले पंचों के फैसले को चुपचाप स्वीकार कर लेने वाले प्रेमी जोड़े आज पंचायत से ही

भीड़ गये थे। सूरज कह रहा था" बच्चा तो हमें भगवान ने दिया हैमुखिया जी लेने से कैसे मना करते...?"
" बिन बियाही मां के बच्चे को समाज क्या कहता है-मालूम है तुम्हें...?"
" बस कीजिए न मुखिया जी,अब बच्चों की जान लेंगे क्या ?" पूर्व सरपंच ने हस्तक्षेप करते हुए कहा-"नादान है, भूल हो गई,तब शादी नहीं की थी,। आज कर लेंगे और दस भयाद को खस्सी भात खिला देगें.. सूरज मुखिया जी के लिए देशी कड़क मुर्गा ले आना, चौकीदार जाओ एक पुड़िया सिंदुर ले आओ...!"
मुखिया जी ने कुछ कहना चाहा इससे पहले सूरज बोल उठा"हम तैयार है सरपंच जी....!
" पंचायत की जय .."कोई बोल पड़ा
फिर पीछे से एक साथकई बोल पड़े " खस्सी भात की जय
"खस्सी भात की जय...!"

काव्य

केशव शरण

एस 2/631-3 के के
कुंज विहार कॉलोनी, सेंट्रल जेल रोड
सिकरौल, वाराणसी 221002

उसी पादान पर

उसके अंदर
एक छाँव है
जो इतनी घनी हो गई है
कि दूर से ही ठंडक का
अहसास कराती है

शुरू से ही वह
इन्सान भला है
दूसरे, उम्र-भर
धूप में जला है

इसके बावजूद
पहचान के उसी पादान पर
खड़ा वह शख़्स है
क्योंकि उसने कोई बड़ा काम
नहीं किया
इसलिए उसके मान-सम्मान पर
ध्यान नहीं दिया किसी ने
जिसमें एक पेड़ का अक्स है

अभी तक

चाँद-सा चेहरा
और फूलों-सा बदन लिये
परी तू
सपने में आई

आँखों में
वही चाँदनी
साँसों में
वही ख़ुश्बू
अभी तक छाई!

कौन कैसा व्यक्ति है

कौन नास्तिक है
ईश्वर, अल्लाह, गॉड
नाम के प्रति

कौन आस्तिक है
कर्मकाण्डी परम
जैसा कहता धरम

इससे कोई दिक़्क़त नहीं है कि
कौन कैसा व्यक्ति है
अगर अवाम के प्रति
उसकी संवैधानिक दृष्टि है

वक़्त

अभी वक़्त है
ख़याल यही था मेरा
अंत तक

कहानी

वाजिद हुसैन
348 ए ,फाइक एंक्लेव ,फेज़ ,2
पीलीभीत बाईपास ,
बरेली (उ प्र)243006

सामने वाली खिड़की

उसके और मेरे कमरे की खिड़की आमने -सामने थी, पर उससे मुलाकात नहीं थी। मैं एक पत्रिका का सब एडिटर था। मेरा काम आर्टिकल्स कहानी इत्यादि को चेक करने के बाद एडिटर की टेबल तक पहुंचाना था। ...वह एक कविता पत्रिका में छपवाने के लिए लाई थी। मैंने कविता में कुछ संशोधन किया जिससे कविता प्रकाशन योग्य हो गई। उसे परिश्रमिक मिला तो चहकते हुए बोली, 'शाम को वैस्टर्न पर सेलीब्रेट करते हैं।'

मैं पहली बार किसी लड़की के साथ होटल में गया था। मधु कश्यप ने डोसा आर्डर किया। मैंने डोसे को परांठे की तरह खाना शुरू किया तो उसने एक हाथ में फ़ोर्क पकड़ा और दूसरे में स्पून और मुझे एक बाइट खिलाकर बताया था कि ऐसे खाया करो। और मैं उस वक्त उसका चेहरा देखता रहा था -अपलक। मानो वह मेरी मेट्रेन हो और मुझे सिखा रही हो कि नीरज देखो !ऐसे सलीके से खाया करते हैं। तब मैंने मज़ाक में कहा था, 'मधु क्या फर्क पड़ता है अगर मैं मेरी तरह खाता हूं।' उसने कहा था'-नीरज देखो न कितने लोग आपके गंवार पन को देख नीचे ही नीचे मंद -मंद हंस रहे हैं।'

हां, लोग हंस तो रहे थे लेकिन क्या करूं, मैं तब भी गंवार था और आज भी गंवार हूं। एक दिन मैंने गंवारों की तरह मधु से कहा, 'माताजी मेरे विवाह के लिए सुशील व सुंदर कन्या की खोज में लगी है पर मैं तुमसे प्रेम करता हूं।' उसने आह भरते हुए कहा, 'मैं भी आपको चाहती हूं, पर पापा रूढ़ीवादी हैं, अंतर्जातीय विवाह के विरुद्ध हैं। मां होती तो पापा को राज़ी कर लेती।

कोरोना कॉल में उसकी शादी तय हो गई। एक दिन उसने अपनी खिड़की से मुझे नीरज कहकर पुकारा और कहा, 'कल मेरी शादी है, आना ज़रूर।' मुझे उसका चेहरा गमगीन सा लगा।

उस समय मैं एक रोचक किताब पढ़ रहा था। मेरे हाथ से किताब छूट गई। मैं सोचने लगा, 'इस शादी से मधु खुश नहीं लगी। मधु सुंदर है जब वह हसंती है, उसके सुंदर दांत दिखते हैं, मन करता है कि उसके माथे पर बोसा दे दूं। और एक मैं हूं, गंवार, हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा। यदि उसके पापा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा होता, तो मेरे व्यकित्तव और पोज़ीशन से इम्प्रेस होकर वह इस प्रस्ताव को स्वीकृति दे देते।'

शादी कोरोना काल में, प्रोटोकॉल से हो रही थी। मधु ने अपने दोस्तों में से केवल मुझे ही आमंत्रित किया था। वरमाला की रस्म के बाद फेरो की तैयारी हो रही थी। वर के मोबाइल पर कोरोना पॉज़िटिव होने का मैसेज आया। एंबुलेंस उसे अस्पताल ले गई, वहां उसकी मृत्यु हो गई।

मधु की दुनिया उजड़ गई थी। वह विधवा है, या कुंवारी। इस पर तो अधिकांश लोग बहस करते थे पर उसके पुनर्विवाह की कोई नहीं सोचता।

एक दिन मैंने खिड़की से उसे गेरुआ वस्त्रों में देखा। मुझे लगा मानो वह जाड़ों की ओस भीगी पतझड़ी हरसिंगार हो। सुहागरात की फूलों की सेज के लिए नहीं, वह केवल देव पूजा के लिए समर्पित थी। मैं उसकी पूजा मन ही मन किया करता था। किसी को कुछ नहीं मालूम। इसके लिए मैं गर्व का अनुभव भी करता था। परंतु पहाड़ी नदी की तरह मन का वेग भीतर-ही-भीतर कसक उत्पन्न करता था इसलिए मैं सोच रहा था कि किस तरह उसे पुनर्विवाह के लिए राज़ी करूं?

कुछ दिनो बाद, मैं मधु के घर गया। बातों बातों में उसके पिता को उसका पुनर्विवाह करने की सलाह दी। उसके पिता का उत्तर था, 'मधु मांगलिक है, जिसके कारण उसके पति की अकास्मिक मृत्यु हो गई। अत :उसका पुनर्विवाह उचित नहीं है। उसे सन्यासिन का जीवन व्यतीत करना है।' यही हमारी सामाजिक परंपरा और प्रथा भी है।

दरअसल उनके लिए रुढ़िवादिता की ज़ंजीरों को तोड़ना इतना आसान नहीं था, जितना मैं समझता था। सोच-विचार के बाद मैंने अपने आलेखों का सहारा लिया। मैं अपनी पत्रिका में पुनर्विवाह और विधवा विवाह संबंधित आलेख लिखता था। पत्रिका की एक प्रतिलिपि बिना मूल्य लिए, दीपक के हाथ, मधु के घर भिजवा देता था। दीपक मधु के पड़ोस में रहने वाला उसी की जाति का युवक था। उसे मैंने मधु के पापा की सिफारिश पर डिलिवरी ब्याय की नौकरी पर लगवा दिया था। बाद में पता चला,वह खुराफाती है।

ज्योतिषी जिस प्रकार नक्षत्र के उदय की प्रतीक्षा में आकाश की ओर निहारा करता है, मैं भी उसी तरह कभी-कभी

लीन शांत जीवन ज्योति झिलमिला कर क्षण भर में मेरे मन की सारी बेचैनी दूर कर देती थी। किंतु उस दिन सहसा मैंने यह क्या देखा !उस दिन सावन के तिपहर को पूर्वोत्तर दिशा में बादल घिर रहे थे। उस घिरी हुई आंधी की बादलो-भरी तेज़ चमक में मेरी पड़ोसिन खिड़की पर अकेली खड़ी थी, उस दिन उसकी शून्य डूबी धनी काली आंखों में मैंने दूर तक फैली एक कसक देखी। तो है, मेरी प्रियतम में अब भी ताप है। अब भी वहां गर्म सांसों की हवा बहती है। वह देवताओं के लिए नहीं, मनुष्य के लिए ही है। उस दिन उस आंधी के प्रकाश में उसकी दोनो आंखों की तेज़ छटपटाहट उतावले पक्षी की तरह उड़ी चली जा रही थी। स्वर्ग की ओर नहीं, मानव हृदय के घोसले की ओर। उस चमकती दृष्टि को देखने के बाद मेरे लिए अपने बेचैन मन को काबू करना मुश्किल हो गया। ...तब मैंने निश्चय कर लिया कि उसके समाज ने भी पुनर्विवाह प्रचलित करने के लिए केवल व्याख्यान और लेख लिखकर नहीं, मुझे खुद आगे बढ़ना होगा। फिर मैंने मधु से मिलकर उसे पुनर्विवाह करने की सलाह दी और उसने इस पर विचार करने की सहमति दे दी।

मेरे आलेखों का उसके पिता पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने मधु का पुनर्विवाह करने का मन बनाया। मधु इस बात से अंजान थी, 'कि यह सब मैने उससे शादी करने के लिए किया है।' वह समझती थी कि एक दोस्त और शुभचिंतक के नाते मैं उसका भविष्य सुधारना चाहता हूं।

दीपक शातिर दिमाग था। उसने अंदाजा लगा लिया था, कि नीरज सर मधु से प्रेम करते हैं और उसे पुनर्विवाह के लिए अपने आलेखों द्वारा राज़ी करना चाहते हैं। उसने बीच में ही भाजी-मारने का मूड बना लिया। एक दिन वह पत्रिका देने गया। उसने मधु से विवाह का प्रस्ताव किया पर उसे स्वीकृति नहीं मिली। तब उसने सभी युक्तियों का प्रयोग कर उसके साथ अपनी आंखों के दो-चार आंसू मिलाकर संपूर्ण रूप से उसे हरा दिया। पुनर्विवाह की लाज में वह गड़ी जा रही थी। इसलिए दीपक ने इस बारे में किसी से भी चर्चा करने से मना कर दिया था।\

मधु के पिता का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिर रहा था। एक दिन उनकी हालत चिंताजनक हो गई। उन्होंने मुझे खिड़की में से बुलाया, मुझसे पूछा, 'दीपक मधु से विवाह करना चाहता है, हमारी ही जाति का है, कैसा लड़का है?' मेरे मुंह से निकला, 'लफंगा'।' उन्होंने कहा, 'तुम ही तो उसे हमारे घर भेजते हो।' ... फिर मुझे उन्हें सब कुछ बताना पड़ा।

उनके मुंह से निकला, 'जात-पात और रूढ़िवादिता ने मुझे हृदय विहीन कर दिया है। मैं अपनी बेटी को कुएं में धकेल रहा था। भगवान ने अनर्थ होने से बचा दिया।'

उसी समय उन्होंने मधु से कहा, 'तुम दोनों प्रेम करते हो, मैं तुम्हें विवाह के बंधन में बांधना चाहता हूं।' वह हमें अपने घर के मंदिर में ले गए। वहां हमने भगवान को साक्षी मानकर एक दूसरे को पति-पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। मरते समय उनके चेहरे पर संतोष झलक रहा था।

राजेन्द्र लाहिरी

यादें रेडियो की

क्या बताएं वो समय ही कुछ और था,
तब मनोरंजन के लिए रेडियो का दौर था,
स्टेशन खुलने से पहले बजते रोचक नये नये गाने,
जो होते थे बड़े ही सुहाने,

बड़े अदब से किया जाता था नमस्कार,
मन प्रफुल्लित होता सुन देश दुनिया का समाचार,
आज के टी वी चैनलों की तरह
कई स्टेशन सुनने को मिलते थे,
पसंदीदा कार्यक्रम सुन दिल खिलते थे,

मेरी दिनचर्या में रेडियो शामिल था अनवरत,
हो चाहे ऋतु सर्दी,गर्मी,बारिश या शरद,
होती थी रोज कृषि पर उपयोगी चर्चा,
मुफ्त की सलाह बिना किये कोई खर्चा,

स्वास्थ्य से संबंधित जब सलाह होते थे,
बच्चे ट्यून बदलने के लिए रोते थे,
कमेंट्री सुनते चक्कर लगा आते खेत का,
तब दौर था राष्ट्रीय खेल हॉकी और क्रिकेट का,

रेडियो सीलोन सुनाता बिनाका गीतमाला,
न सुन पाये तो लगता समय खराब कर डाला,
बी बी सी हिंदी,वॉयस ऑफ अमेरिका,
के साथ पसंदीदा था अपना आकाशवाणी,
आकर्षक,मनमोहक,सुनाता अपनी वाणी,

मेरी शिक्षा में था रेडियो का अहम योगदान,
जानने और सीखने को मिला महत्वपूर्ण ज्ञान।

(छायाचित्र गूगल से साभार)

पामगढ़ छग
raajendralahiri@gmail.com

शराफ़त अली ख़ान
343,फाइक इन्क्लेव, फेज-,2
पो.रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली-
sharafat1988@gmail.com

पागल

आज काफी अरसे के बाद बड़ी ख़ालाजान के घर आया हूं।ख़ालाजान को सलाम करके मैं घर के बड़े से आंगन में बिछे निवाड़ के पलंग पर बैठा ही था कि ख़ालाजान करीब आकर मेरे सिर पर हाथ रखकर दुआएं देने लगीं।फिर उलहाने के अंदाज में बोली ,"बहुत दिनों बाद आया है तू ,घर पर सब ठीक है ?"मैंने कुशलता का समाचार दिया ।इतने में ख़ालाजान की लड़की नाहिद पानी का गिलास ले आई ।मैंने ख़ालाजान को बताया कि मैं एक सरकारी काम से बदायूं आया था। काम खत्म होते ही आपके पास मिलने चला आया।"

"अच्छा किया। इतने दिनों से कोई खोज खबर भी नहीं मिली थी ।

मैं अभी ख़ालाजान से बातें कर ही रहा था कि दरवाजे पर आहट हुई और खालूसाब अंदर दाखिल हुए। उन्हें देखते ही मैं उठ खड़ा हुआ और ख़ालूसाब को अदब से झुक कर सलाम किया। खालूसाब ने भी मेरे सिर पर हाथ रखा और दुआएं देने लगे।

मैंने पूछा," खालूसाब कहां से आ रहे हैं?" अभी असर की नमाज पढ़ कर आ रहा हूं ।"इतना कहकर वह अंदर कमरे में चले गए ।

ख़ालाजान ने खालू साहब को कमरे में जाते देखा तो मेरी तरफ मुख़ातिब हुईं,और कमरे की तरफ कनखियों से देखते हुए बोलीं," पगला गए हैं ये अब तो।"

मैं चौंका," अरे ख़ालाजान, ये आप क्या कह रही हैं? खालूसाब पगला गए हैं।"

' हां बेटा, इन्हें तो अब दीन-दुनिया से कोई मतलब नहीं रहा ।बस नमाज़ है और ये हैं, दूसरा और कोई काम नहीं है इनके पास।"

इतने में खालू अपनी जैकेट उतार कर मेरे पास आ गए। उन्होंने शायद ख़ालाजान की बातें सुन ली थीं। कुछ बुजुर्ग ऐसे होते हैं जो अपने मतलब की बात दूर से भी सुन लेते हैं मगर दूसरे की बात को वह पास से भी सुनने में असमर्थता दर्शाते हैं।

खालूसाब ने आते ही कहा,"तुम्हारी खाला क्या कह रही थी ,पागल हो गया हूं मैं।"

मैंने सहजता से कहा," नहीं खालूसाब! ऐसी कोई बात नहीं।"

" नहीं, यह मुझे पागल ही कहती है ।देखो बेटा, मैंने अपनी सारी जिंदगी कानपुर में कबाब की एक दुकान पर गुजार दी। मेरे बनाए कबाब पूरे कानपुर में मशहूर थे ।मैंने जो कमाया ,इसे बराबर भेजता रहा। ये घर तोड़कर नया बनवाया ।दो-दो हज करे मैंने ।अब, जब मेरे अंदर कुव्वत नहीं रही, जिस्म अब साथ नहीं देता तो मैंने काम बंद करके दुकान बेच दी और सारा पैसा मैंने बैंक में जमा कर दिया, किसी बात की कोई तंगी नहीं है ।मगर ये औरत अब मुझे नाकारा समझ रही है और इस बुढ़ापे में पागल होने का तमग़ा पहना रही है।" खालूसाब कहते-कहते हांफने लगे।

खालूसाब कुछ देर ठहरकर सहज होकर बोले ,"बताओ बेटे ,अब मैं क्या करूं? कैसे जिंदगी गुज़ारु?"

खालूसाब की मन: स्थिति पर मुझे अफसोस हुआ ।जब आदमी कोल्हू के बैल की तरह पैसे कमाने में जुटा रहा तो अच्छा था और जब अब वह बुढ़ापे में अक्षम हो गया तो उसे पागल घोषित कर दिया गया।

मैंने कुछ सोच कर कहा," खालूसाब आप कम से कम इन घर वालों की नज़र में रहें। सुबह 5:00 बजे उठकर आप फज़र की नमाज़ पढ़ने जाते ही हैं।नमाज़ के बाद कम से कम 1 घंटा टहला कीजिए उसके बाद घर जाकर नाश्ता करके सो जाइए। फिर दोपहर उठकर ज़ोहर की नमाज़ चले जाइए। वहां से आकर थोड़ा आराम करके 4:00 बजे असर की नमाज़ अदा करने चले जाइए। फिर एक घंटा टहलकर घर आकर चाय वगैरा पीकर मग़रिब की नमाज़ चले जाएं। उसके बाद खाना खाकर थोड़ा आराम करके ईशा की नमाज़ अदा करके सो जाइए। इनके सामने कम ही आइए ताकि इन्हें आपको कुछ कहने का मौका ही ना मिले।"

मेरी बातें अभी खत्म ही हो पायी थी कि मग़रिब की अज़ान होने लगी ।खालूसाब नमाज़ के लिए उठ खड़े हुए और मुझसे बोले ,"देखो बरखुरदार! तुम आज नहीं जाओगे, मुझे तुमसे ढ़ेर सारी बातें करनी हैं। रात को फुर्सत से बैठेंगे तब बातें होंगी।"

मैंने उनका दिल रखने के लिए यह कहा ,"ठीक है खालू साहब, आप नमाज़ पढ़ कर आइएगा।"

खालूसाब के जाते ही ख़ालाजान आ गईं। बोलीं,"क्या कह रहे थे तुम्हारे खालू ?"

मैंने ख़ालाजान को समझाया ,'आप नाहक इस उम्र में उन्हें उल्टा सीधा कहती हैं ।ये उम्र तो आपसी प्यार -

मोहब्बत की है।"

इतना सुनते ही ख़ालाजान भड़क गईं," मोहब्बत.... इस मरदुए ने कभी जवानी में मोहब्बत के दो बोल नहीं बोले।हमेशा मुझे जख़्म ही दिए ।अब मैं इनसे मोहब्बत की बातें करूं ?मेरा दिल तो फटा हुआ है इनकी तरफ से।"

मैंने ख़ालाजान को किसी तरह समझाया और जल्द ही आने का वायदा करके उनसे विदा ली । मैंने सोचा, अगर मैं ज़रा और देर कर देता हूँ तो खालूसाब फिर मुझे आज रात रोक कर अपना दुखड़ा सुनाएंगे और अपने दिल के गुबार को निकालेंगे।

मैं काफी रात गए वापस अपने शहर पहुंचा।

सुबह अभी आंख खुली भी न थी कि मोबाइल बजने लगा। मैंने आलस के चलते बेमन से मोबाइल उठाया ।उधर से मोबाइल पर नाहिद का नाम आ रहा था ।फोन ओके करते ही नाहिद ने रोते हुए मनहूस खबर दी ।,"भाई साहब !अब्बू रात अल्लाह को प्यार हो गए ।"

मैंने फौरन "इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलाही राज़ेऊन)"हम अल्लाह ही के हैं और हमें अल्लाह ही की तरफ लौटकर जाना है(पढ़ा और सोचने लगा। खालूसाब की ढ़ेर सारी बातें अब उनके साथ ही दफ़न हो जाएंगी, वह जो मुझसे कहने वाले थे।

प्रतिभा पाण्डेय "प्रति"

मिलें तो नाप लेना

चाहत में, अजीब एहसास सा है,
ये इश्क भी अजीब विश्वास सा है ।।1।

धरा प्यासी अम्बर झूमकर बरसा,
अगल-बगल कुछ उदास सा है ।।2।

शब्द से परे अर्थहीन जज्बात यह,
तेरा-मेरा प्रेम तो आकाश सा है ।।3।

जिन्दादिली का नमूना मेरा दिल,
दिल तेरे स्नेह में उजास सा है ।।4।

पसंद हो तुम रूह,भाव,एहसास को,
तेरे संग प्रेम जीवंत मधुमास सा है ।।5।

शीघ्रता करना नेह को किनारा देने में ,
डूबता तन-मन नहीं कुछ घास सा है ।।6।

अनंत रंग में रंगती उर रंगीन किशोरी
ऐसी ऋतु लाए प्रेम जैसे काँस सा है ।।7।

तुम बिन जीवन असत्य लगता मुझे,
समझो प्रेम को नहीं खेल ताश सा है ।।8।

थाह गहराई की,मिलें तो नाप लेना,
मन प्रतिभा का हरि तेरा दास सा है ।।9।

(चेन्नई,ईमेल:pp1707954@gmail.com)

रंजना लता

सहा नहीं जाता

दर्द दिल का सहा नहीं जाता,
याद का सिलसिला नहीं जाता।

बात इतनी सी रह गई कहनी,
बिन तेरे अब रहा नहीं जाता।

अश्क़ भर आते हैं इन आंखों में,
जब जुबां से कहा नहीं जाता।

इश्क़ सौदा नहीं इबादत है,
देके दिल फिर लिया नहीं जाता।

कौन जीता है अपनी मर्ज़ी से,
अपनी मर्ज़ी मरा नहीं जाता।

छिनकर रोटियां गरीबों की,
पेट अपना भरा नहीं जाता।

(समस्तीपुर (बिहार)
ranjanalata06@gmail.com)

कहानी

डॉ सरला सिंह स्निग्धा
दिल्ली
sarlasingh55@gmail.com

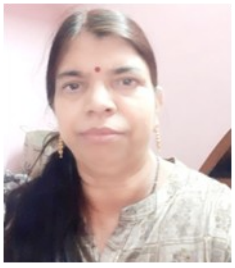

अजब-गजब

आगरा में बड़ी-सा मकान, पति ठेकेदार तथा बेटा प्राइवेट कम्पनी में लगा हुआ था। मकान वैसे तो सविता के पिताजी का था पर अब वही उसकी मालकिन थी। उसके पिता जी ने अपनी दोनों बेटियों में अपने जायदाद का बंटवारा इस तरह किया था की आगे चलकर दोनों के मध्य कोई भी मतभेद न आ सके। गांव की सारी खेती और मकान बड़ी बेटी को तथा शहर का मकान तथा बैंक की जमा पूंजी छोटी बेटी के नाम कर दिया था। हां इतना जरूर था कि हर माह मिलने वाली पेंशन को वे किसी को भी नहीं देते थे। दोनों बहनें इस बंटवारे से बहुत खुश थीं। माता -पिता के सेवा की भी जिम्मेदारी भी बराबर-बराबर बंटा हुआ था। छः माह वे लोग शहर में रहते तथा छः माह दूसरी बेटी के पास गांव में।

सविता ने अपने ही मायके के चचेरे भाई की बेटी शिखा को अपने बेटे के लिए पसंद किया था। शिखा सुन्दर होने के साथ -साथ गुणी भी बहुत थी। विवाह के बाद उसने पूरे घर की सारी जिम्मेदारी बहुत ही अच्छे ढंग से संभाल लिया था। जल्दी ही वह तीन बेटों की मां भी बन गयी। नाती पाकर सविता व उनके पति तथा पिता व मां सभी निहाल हो गए। घर में खुशियां ही खुशियां दिखाई देती थी। शिखा का पति भी उसे बहुत प्यार करता था। सविता की बड़ी बेटी व दामाद भी ज्यादातर वहां आया करते थे।

शिखा बड़ी ही लगन और विनम्रता के साथ सबकी ही सेवा में लगी रहती थी। नाना जी यानी सविता के पिताजी शिखा के सेवा भाव से बहुत ही प्रभावित थे। जिस घर में शादी शुदा बेटियां ज्यादा ही अधिकार जमाने लगती हैं उस घर का टूटना लगभग निश्चित हो जाता है। बेटियां अगर ससुराल पक्ष से सम्पन्न हों तो उनको मायके की सम्पत्ति के लिए लोभ नहीं करना चाहिए। माताएं भी बेटे बहू से अधिक बेटियों के लिए ज्यादा ही प्रेम प्रदर्शित करती हैं। उनका वश चले तो अपनी बेटी को मायके का ईंट पत्थर मिट्टी सबकुछ भरकर दे दें। यह भी सास-बहू के मध्य मनमुटाव का एक बहुत बड़ा कारण होता है।

शिखा में सेवा भाव की जरा भी कमी नहीं थी उसने अपनी सास के पिताजी की भी उस समय बहुत ही लगन से सेवा की जब वे 90वर्ष की अवस्था में बिस्तर पर पड़े हुए थे। करीब पांच साल वे बिस्तर पर ही थे ।उनकी सेवा न तो उनकी अपनी बेटी ही करती थी और न ही नाती और नातिन। सभी केवल ज़बान से ही प्यार का प्रदर्शन किया करते थे। शिखा को भी घर में इसी कारण ज्यादा इज्जत मिलती थी कि वह घर के काम के साथ ही साथ नाना जी की देखभाल भी लगन से कर रही थी। शिखा के सेवा भाव से प्रभावित होकर नाना जी ने यानी उसकी सास के पिता जी ने अपनी पांच लाख की एफडी शिखा को देने का एलान कर दिया। यहीं से सबके मन में खोट की भावना जन्म लेने लगी थी। जैसे ही नाना जी का देहान्त हुआ, सारा बैंक बैलेंस शिखा की सास सविता ने अपने नाम करवा लिया।

पांच लाख के लिए सविता की बेटी मायरा भी आगे आ गयी। उसे भी जरूरी काम याद आ गये

शिखा ने अपनी सास से उन पैसों को अपने बच्चों के नाम करने के लिए आग्रह किया, "मम्मी जी उन पैसों को तो नाना जी ने मुझे देने का वादा किया था, आप मुझे न सही मेरे बच्चों के नाम ही उन पैसों को कर दीजिए। बच्चों का भविष्य भी सुरक्षित हो जाएगा।"

"कैसा पैसा? वे पैसे मेरे पिताजी के हैं, मैं उन पैसों का जो चाहूं करुं। तुम कौन होती हो सलाह देने वाली।"

"मम्मी जी, सबके सामने नाना जी ने उन पैसों को मुझे देने के लिए कहा था।" शिखा ने कहा "पता नहीं मुझे तो नहीं पता है, कह दिया होगा नीम-बेहोशी में। वे मेरे पैसे हैं उनके बारे में अब कभी भी बात मत करना। जाओ अपना काम करो।"

शिखा मायूस होकर वहां से हट गयी। वह अपने को ठगा हुआ सा महसूस कर रही थी। जब तक उसने नाना जी की सेवा की तब तक सभी उसकी वाहवाही कर रहे थे। सविता देवी भी अपने पिता के वायदे का समर्थन कर रही थीं। पर पिता जी के जाने के बाद उन्होंने गिरगिट की तरह रंग बदल लिया।

शिखा का पति मनीष भी एक छोटी-सी प्राइवेट नौकरी ही करता था। आनाज गांव से आ जाता था बाकी ख़र्च उसके ससुर और पति के पैसों से चलता था। पांच लाख उसके बच्चों के नाम फिक्स हो जाता तो उसे उनके भविष्य के प्रति ज्यादा परेशान नहीं होना पड़ता। वह कुछ

भी समझ नहीं पा रही थी।

कुछ समय बाद शिखा की ननद जी अपने पति के साथ कुछ दिनों के लिए मायके आयीं। वे जब भी मां के पास आतीं थीं उनको कोई न कोई काम अवश्य होता था। इस बार भी वे अपनी डिमांड लेकर ही आयी हुई थीं।

"मम्मी मैं लखनऊ में एक फ्लैट ले रही हूं उसमें क़रीब तीन -चार लाख की और जरूरत है, अगर आप दे देतीं तो मेरा काम बन जाता। सबसे आखिर में आपके पास आयी हूं, इन्कार मत करना।"

"हां, हां क्यों नहीं। सबकुछ तुम्हारा ही तो है। क्यों मनीष?" सविता जी ने इसी बहाने बेटे मनीष की सहमति भी लेनी चाही।

अरे मम्मी, जैसी आपकी मर्जी। बेटे में मां का विरोध करने का साहस ही नहीं था। जितना मां कह देती थी उसके लिए वही पत्थर की लकीर बन जाता था। वह अपने आप निर्णय लेने में सक्षम ही नहीं था।

सविता जी ने अपनी बेटी मायरा को चार लाख का चेक दे दिया। घर में सविता जी का ही बोलबाला था। उनके पति भी उनका विरोध नहीं करते थे उनकी ही हां में हां मिलाया करते थे।

शिखा को यही बात चुभ गयी कि उसकी सास ने उसके पैसे उठा कर उसकी ननद रानी को थमा दिया।अब उसने अपनी सास से अपने जेवर मांगे, उसके जेवर भी सासू मां की हिफाज़त में थे।

मम्मी जी आप मेरे बक्से की चाभी दे दीजिए। कुछ सामान लेना है।

सविता देवी ने उसके बक्से की चाभी थमा दी, "लो जाकर ले लो सामान। उसमें क्या रखा है, कुछ भी तो नहीं है।"

शिखा को काटो तो खून नहीं, फिर भी वह चाभी उठाकर अपने बक्से के पास पहुंची। बक्सा खोलते ही वह बेहोश होते -होते बची। बक्से में कुछ भी नहीं था केवल कुछ सस्ती सी साड़ियां ही थी बाकी मंहगी साड़ियां कपड़े और ज़ेवर कुछ भी उसमें नहीं था।

मम्मी जी ये क्या कर रही हैं, मेरा सब सामान कहां है? "तेरी मां ने चोरी कर लिया होगा, मुझे क्या मालूम तेरा सामान। बेटा देख रहा है तेरी पत्नी मुझे चोर कह रही है।" सविता देवी ने बेटे मनीष को घूरते हुए कहा।

मनीष ने अपनी पत्नी को शिखा को वहीं पर तीन चार थप्पड़ जड़ दिया मगर मां से यह नहीं पूछा कि उसका सामान कहां चला गया?

शिखा ने अपने तीन बच्चों में से दो बेटों को वहीं छोड़ दिया और सबसे छोटे दो साल के बेटे को लेकर मायके चली गई। उसने सास के जीते जी ससुराल न आने की क़सम खा ली। इधर सविता देवी इस कोशिश में हैं कि शिखा को तलाक़ दिला दें और उनके तीन बच्चों के बाप बेटे के लिए कोई अच्छा खासा दहेज वाली बहू मिल जाए।

शेफालिका सिन्हा

हवा बदल गई

हवा बदल गई या हम बदल गए
न उनके आने की खुशी है, न जाने का कोई गम।

तरक्की की राह पर हम पहुंच गए
सस्ती हो गई जान,महंगा हो गया ईमान।

दूर से बातें कर, दिखाते चेहरे पर मुस्कान
आज हाथों में ही बसती है सबकी जान ।

बनती बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें, मिटता पेड़ पौधों का निशान
बूंद बूंद पानी के लिए तरस रहा इंसान

पहले जहां होते थे चार-पांच मकान
बसती है वहां सौ जान,फिर भी अकेला होता है इंसान।

स्वप्न सुंदर होगा साकार

नव वर्ष के आरंभ से ही
नई उम्मीदें खिलखिलाएं
नई राहों पर कदम बढ़ाएं
बीते वर्ष जो न पाया
उसको हम भूल जाएं।

चुनौतियां मिले भी तो
उससे नहीं हम घबराएं
नई सीख, नई ताकत से
मंजिल की तरफ कदम बढ़ाएं।

मन में विश्वास रहे
मिलेगी नई दिशा ,नई मंजिलें
नई खुशबू, नई उम्मीदें
स्वप्न सुंदर होगा साकार
भविष्य लेगा सुनहरा आकार ।।

(रांची, झारखंड)
shefalikadav@gmail.com

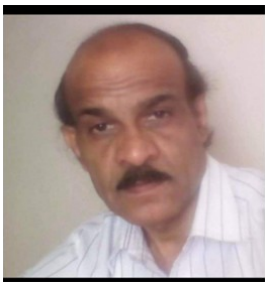

नवीन माथुर पंचोली

अमझेरा धार मप्र

ग़ज़लें

1

यूँ सलीक़ा लिए पैगाम दिया जाता है।
नाम जो रोज़ सुबह शाम लिया जाता है।
काम वह क़ाबिले तारीफ़ हुआ करता है,
जो सही वक़्त पर अंजाम दिया जाता है।
चाँद ही वक़्त-बेवक़्त निकलता है मग़र,
बेवज़ह रात को बदनाम किया जाता है।
जी रहें हैं जताकर लोग सब हस्ती अपनी,
इक भला शख़्श क्यों गुमनाम जिया जाता है।
आप भर जायेंगे वो ज़ख़्म सारे चोटों के,
हाल ही क्यों इन्हें मुद्दाम सिया जाता है।

2

हो गई कौन सी गल्तियाँ।
लग गई आप पर सख़्तियाँ।
कुछ हवाएँ चली और फिर,
सब कहाँ खो गई कश्तियाँ।
रास्ता जब हुआ घूमकर,
कट गई राह से बस्तियाँ।
इक ज़रा सी हुई भूल क्या,
लोग कसने लगे फब्तियाँ।
आप-अपनें कभी भूलकर,
रास आई नहीं मस्तियाँ।

3

रोज़ से कुछ आज़ थोड़ा है अलग।
रात का अंदाज़ थोड़ा है अलग।
है सफ़ेदी आसमाँ पर दूध सी,
चाँद का एजाज़ थोड़ा है अलग।
है शरद की रात इतनी ख़ुशनुमा,
जश्न का आगाज़ थोड़ा है अलग।
कौन ,कितना देखकर समझा करे,
आज इसमें राज़ थोड़ा है अलग।
इस ज़मीं के साथ चलता - घूमता,
एक ये हमराज़ थोड़ा है अलग।
लाखहोंगे ख़ूबसूरत और पर,
आज इसपर नाज़ थोड़ा है अलग,

4

कभी जब बात नीयत की रहेगी।
ज़रूरत आदमीयत की रहेगी।
रहेगा भाईचारा जब घरों में,
नहीं मुश्क़िल वसीयत की रहेगी।
हमेशा जीत लेगी दिल सभी का,
शराफ़त जो तबीयत की रहेगी।
निभाई जाएगी अक़्सर वही तो,
रिवायत जो जमीयत की रहेगी।

5

तन्हाइयों को दर्द से फ़ुरसत नहीं मिली।
शहनाइयों को सोज की क़ीमत नहीं मिली।
सच की लड़ाई जब चली उन पैतरों के साथ,
अंज़ाम को जज़्बात से हिम्मत नहीं मिली।
उसका सभी के साथ था अच्छा गुज़र-बसर,
लेक़िन उसे इस बात की इज्ज़त नहीं मिली।
कहता रहा है ताज वो इक बात आज तक,
सबको यहाँ मुमताज़ सी चाहत नहीं मिली।
कैसे करेगा पास वो फाईल यूँ आपकी,
अफ़सर जिसे उस काम की रिश्वत नहीं मिली।
बारात में शामिल हुए जितने सगे यहाँ,
नाराज़ हैं वो सब जिन्हें ख़िदमत नहीं मिली।
कसरत नहीं, योगा नहीं , डर खान-पान का,,
पैसा कमाया लाख पर सेहत नहीं मिली।
,इतना इसेउतना उसे ,जितना लिखा मिला,
सबको जहाँ में एक सी क़िस्मत नहीं मिली।

डॉक्टर नरेश सिहाग की रचनाएँ

कागज की नाव

बारिश की पहली बूंदों संग,
मन के कोने में जागे उमंग।
कागज के पन्नों से फिर,
बचपन की यादों का हुआ संग।

मोड़ा-मोड़ी, बन गई नाव,
जैसे सपनों का छोटा गांव।
बहती धारा संग जब चली,
मन में उम्मीदें फिर से पली।

छोटे हाथों से बहाया उसे,
हर बूँद ने सहलाया उसे।
हवा संग डगमगाती गई,
पर साहस से आगे बढ़ती रही।

पानी की लहरों से बातें करे,
संग झूमे, गुनगुनाए, हँसे।
कागज की नाव का वो सफर,
सिखा गया जीवन का हुनर।

जीवन भी तो ऐसी नाव है,
सपनों की धाराओं पर बहाव है।
हर ठोकर को हंसकर सहना,
और बोहल आगे बढ़ते रहना।

सर्दी आई, सर्दी आई

सर्दी आई, सर्दी आई,
ठंडी हवा संग खुशबू लाई।
धुंध ने ओढ़ा चादर आसमां पर,
धरती पर बिखरी सफेदी छाई।

गुनगुनी धूप के टुकड़े प्यारे,
कभी छुपते, कभी नज़ारे।
चाय की चुस्की, अदरक का स्वाद,
संग में गुझिया और गर्म पकोड़े।

स्वेटर, शॉल, और रजाई लाए,
हर कोई आग के पास सिमट जाए।

कंपकंपाते हाथ, गर्म जोश,
सर्दी का मौसम लगता ख़ास।

पंछी भी बैठे धूप निहारें,
पत्ते भी झरकर मौसम पुकारें।
सर्दी में बस इतना कह दो,
प्रकृति का हर रूप है अद्भुत, मानो।

दर्पण

दर्पण, तुम तो साक्षी हो, हर चेहरे की सच्चाई के,
बिना बोले कह देते हो, हर मन की गहराई को।

तुम्हारे सामने जो भी आया,
सच से न भाग पाया,
झूठ की परतों के पीछे भी,
तुमने सत्य का हाथ थमा।

तुमने देखा सुख के क्षण,
और आँसू की धाराएं,
हर चेहरे पर तुमने लिखी,
अनकही सी दास्तां।

चाहे हों झुर्रियां वक्त की,
या यौवन का श्रृंगार,
तुमने हर रूप को दिखाया,
बिना किसी विचार।

तुम पर दिखती छवि है बस,
पर तुमसे परे भी है बात,
जो झाँके अपनी आत्मा में,
वही है सच्चे दर्पण के साथ।

इसलिए दर्पण, तुमसे सीखा, खुद को स्वीकारना,
अपने सच को प्यार करना,
और बोहल आगे बढ़ते जाना।

किस्मत

किस्मत के खेल निराले हैं,
समझ न पाएं इंसान हैं,
कभी खुशी के दीप जलाए,
कभी छीन ले मुस्कान ये।

सोचता है मन,
क्या लिखा है इन लकीरों में,
क्या छुपा है आसमानों के गहरे ताबीरों में।

कभी मेहनत रंग लाती है,
तो किस्मत भी झुक जाती है,
कभी कोशिशें थक जाती हैं,
और किस्मत हंस जाती है।

कुछ कहते हैं,
किस्मत से सब कुछ है मिलता,
पर बिना कर्म के,
क्या किस्मत का जादू है चलता?

खुद पर ऐतबार रख,
और चल बढ़ अपने राह,
किस्मत भी तेरे कदमों में होगी,
बन जाएगी तेरी चाही भी।

याद रख,
ये खेल अद्भुत है,
न तू हार मान लेना,
किस्मत के संग चलना है,
बोहल खुद पर ऐतबार रखना।

****

(अध्यक्ष एवम् शोध निर्देशक हिंदी विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर
राजस्थान)

डॉ. राकेश जोशी

प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष
अंग्रेज़ी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला
देहरादून, उत्तराखंड

ग़ज़लें

1

ख़ंजर को ख़ंजर कहना है
ऐसा अब अक्सर कहना है
हर दिन-हर पल डरने वालो
डर को भी अब डर कहना है
शीशों के इस शहर में आकर
पत्थर को पत्थर कहना है
खेतों में हल लेकर निकलो
बंजर को बंजर कहना है
जंगल में तुम सबको जाकर
बंदर को बंदर कहना है
सर्दी के ही मौसम में तो
बेघर को बेघर कहना है
अजब चलन है नए शहर का
ज़ालिम को भी 'सर' कहना है

2

सच कहो, क्या कभी ये इंतज़ाम बदलेगा
या फ़क़त तख़्तियां बदलेंगी, नाम बदलेगा
क्या ये दरबार, ये दफ़्तर भी बदल पाएंगे
या हमेशा की तरह बस निज़ाम बदलेगा
तेज जब भागने लगता है तो इतना तय है
अब वो घोड़ा नहीं उसकी लगाम बदलेगा
सिर्फ किरदार बदलने से कुछ हुआ कब है
दौर बदलेगा जो किस्सा तमाम बदलेगा
ये जो बच्चे हैं, उठाते हैं अभी तक कचरा
ये पढ़ेंगे तभी तो इनका काम बदलेगा
इस अन्याय से भरी हुई व्यवस्था को
कोई राजा नहीं, कोई ग़ुलाम बदलेगा

3

कल ज़मीं पर आज-से दंगल नहीं थे
आज जो भी हैं सफ़र में, कल नहीं थे
देखकर ये खुश हुआ मन, क्यारियों में
ढेर-सारी सब्ज़ियाँ थीं, फल नहीं थे
आज बस्ती में कहीं पानी नहीं है
कल तो पानी था मगर कल नल नहीं थे
थी सड़क चौड़ी बहुत, पर रास्ते में
वो पुराने पेड़, वो जंगल नहीं थे
फिर मरे कुछ लोग सर्दी से वहाँ कल
क्या तुम्हारे देश में कंबल नहीं थे
जिस क़दर लोगों की थीं मजबूरियां कुछ
उस क़दर आकाश पर बादल नहीं थे
पाँव में छाले सभी के थे हज़ारों
पर किसी के ख़्वाब तो घायल नहीं थे
आज रौनक आ गई खेतों में फिर से
खेत तो कल भी थे लेकिन हल नहीं थे
ख़ूब-सारा वक़्त था औरों की ख़ातिर
बस, हमारे वास्ते कुछ पल नहीं थे

टीकमचन्दर ढोडरिया "काव्यांजलि"

पंचायत समिति के पास,छबड़ा जिलाबारां, राजस्थान

गीत

1

निन्द्रा से उठ मृदु पग धरती
पग धर आँगन गिरती पड़ती
छम-छम करती बढ़ती आगे
नन्हीं बिटिया सी है धूप

वृक्षों के झुरमुट से तकती
कलियों पर बैठी वह हँसती
छत पर छुपकर नाचे गाये
हुयी कुमारी अब है धूप

नदियों की धारा में तिरती
झरनों को बाहों में भरती
बैठ दुपहरी करती बातें
हुयी सयानी अब है धूप

पर्वत से नीचे है उतरी
शिथिल क्लान्त धरती पर पसरी
झीनीं चादर तन पर डाले
लगे बुढ़ायी अब है धूप

2

वन उजड़े अब नहीं
लहलहाते.....
नदिया ढोती पाप हमारे
सिसक रहा है नीर
नाग कालिया बना प्रशासन
किसे सुनायें पीर
तट घायल अब नहीं
गुनगुनाते

विकसित इतनें हुए हैं बन्धु
करते हैं विषपान
बाहर की भटकन में खोदी
हमनें निज पहचान
मन पंछी अब नहीं
चहचहाते

अपनापन होठों तक सीमित
प्रीति हुयी है बाँझ
ओढ़ मुखोटे भटकरहें हैं
सभी सुबह से साँझ
रिश्तें हमें अब नहीं
गरमाते

3

गाँव था कैसा बैठ पास मैं
तुझे सुनाऊँ हाल.....
भोर हुये ही धेनु रँभाती
पक्षी करते गान
गले बँधी बेलों के घण्टी
छेड़े मधुरिम तान
भाभी चक्की आटा पीसे
दादी करती जाप
लिये ठोपला अम्मा जाती
उपले देती थाप
नयी बहुरिया पनघट जाती
मुखपर घूँघट डाल.....
भाईजी खेतों पर जाते
काका दुहते गाय
लिए कलेवा काकी आती
सिरपर छाक जमाय
छड़ी लिये दादाजी बैठे
दरवाजे के पास
नेह डोर से बँधा हुआ था
घरभर का विश्वास
इक चूल्हें पर बनती थी तब
सबकी रोटी दाल.....
चौपालों पर बैठे करते
सुखदुख की हम बात
तारों सँग चलता चंदा भी
ले अपनी बारात
दादी नानी हमें सुनाती
रोज कहानी रात
पता नहीं कब सब सो जाते
कब होता परभात
मोटा खाया पहना मोटा
फिर भी थे खुशहाल.....
गाँव था कैसा बैठ पास मैं
तुझें सुनाउँ हाल.....

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

24 परगना (नॉर्थ)कोलकत्ता

गजलें

1.

ख़बर में रह , नयी रफ़्तार बन जा,
निकल हुजरे से अब बाज़ार बन जा।

पसीने की कमाई का मजा ले,
कभी दो पल को तो खुद्दार बन जा।

मुसलसल ये दुकाँ चलती रहेगी,
कभी टोपी कभी ज़ुन्नार बन जा।

तू अपना मर्तबा भी जान लेगा,
किसी के वास्ते बेकार बन जा।

यहाँ किसको समझ है शायरी की,
अगर बिकना है तो अखबार बन जा।

2.

चुप क्यों है इतने आप ज़रा खुल के बोलिए
अब मत छुपाएँ पाप ज़रा खुल के बोलिए

इसको भी जी हुज़ूर है उसको भी जी हुज़ूर
हैं किसके साथ आप ज़रा खुल के बोलिए

इतना तो खुल के आप कभी बोलते न थे
किसका है ये प्रताप ज़रा खुल के बोलिए

इतनी मिठास लफ़्ज़ों में पहले तो थी नहीं
मुद्दे पे आएँ आप ज़रा खुल के बोलिए

जमहूरियत के नाम पे जो चल रहा जनाब
वरदान है या शाप ज़रा खुल के बोलिए

ऐसे तो ये नहीं थे कभी , जानता हूँ मैं,
किसकी है इन पे छाप ,ज़रा खुल के बोलिए

3.

आस के पत्थर उबाले जा रहे हैं,
ख़्वाब रोटी के उछाले जा रहे है।

भाषणों के पाग में हैं शब्द पागे,
मुँह में खुद ही खुद निवाले जा रहे हैं।

तज्रिबा कैसा हैं ये अहले सियासत,
सूइयों में फार डाले जा रहे हैं।

क्या लिखा है आसमानी पुस्तकों में,
प्रश्न करता मार डाले जा रहे हैं।

इक नये इतिहास की स्थापना में,
माजी के पन्ने खँगाले जा रहे हैं।

4.

बुझी आँखों की, जलते ख़्वाबों की पहचान थोड़ी है,
सियासत करना है उनको किसी का ध्यान थोड़ी है।

हलों की नोक से धरती के विस्तृत कैनवासों पर,
जो खुशियाँ आँक दे, दहकाँ है वो,भगवान थोड़ी है।

सिकम की आग में हर पल यहाँ आँसू उबलते हैं,
यहाँ है भूख पसरी कोई दस्तरखान थोड़ी है।

यहाँ जो एकटक चुप-चाप देखे जा रहा सब कुछ,
है वो भी खेल से वाकिफ़ कोई नादान थोड़ी है।

कोई सड़कों पे आ - कर यूँ ही हंगामा नहीं करता,
है गुज़रा सर से पानी क्या करे भगवान थोड़ी है।

सियासी तिकड़मों की गोद से निकला है ये मोहरा,
ये जो बैठा है अनसन पर कोई दहकान थोड़ी है।

अनिल कुमार मिश्र
राँची,झारखंड,भारत

अधखुली खिड़कियाँ

उसके मन की
अधखुली खिड़कियाँ
झाँकती हैं
मेरे अंतर्मन को
महसूस करती हैं
हृदय के भाव-तरंगों को
ढूँढती हैं अपने को
उन तरंगों में
खिड़कियों के उस पार से
तरंगित हृदय
बड़ी बेसब्री से ढूँढता है
दूसरी ओर के तरंगित तरंगों को
अनंत बलवती इच्छाओं के साथ।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

इन्दौर

झील के ऊपर अगहन माह के मेघ

नील गगन में रुई सरीखे फाहों के अम्बार लगे।
हे अगहन में दिखे मेघ! तुम हिम से लच्छेदार लगे।
निर्मल धवल कीर्ति के बेटे नभ के नव सरदार लगे।
पूरा जल कर चुके दान तुम सचमुच पानीदार लगे।

नीचे झील, झील का पानी दर्पण का आकार लगे।
इस दर्पण में सुगढ़ दूधिया जल घन एकाकार लगे।
निराकार से अजल सजल तुम प्रकट रूप साकार लगे।
सच पूछो तो श्वेत पटों से सजे हुए दरबार लगे।

बीच बसी थी बस्ती लेकिन अब सूना संसार लगे।
कर्ज चुकाने की चाहत में सभी झील के पार लगे।
तुम्हें बसाना चाह रहे सब ताकि तनिक आभार लगे।
इसीलिए सारे रहवासी छोड़ चुके घर बार लगे।

मधुकर वनमाली

मुजफ्फरपुर बिहार

प्रणय

किसी के श्वास का सौरभ,अगर छक कर पिए मधुकर
कली की आंक लेता हो,अगर भुजबंध में कसकर
पलक के चूमकर बादल, अगर बारिश नहाता हो
अधर के चख लिए पाटल, उन्हें गुलकंद पाता हो
जमाना क्यूं बिफरता है,अगर हो प्रेम छलका सा
प्रणय वरदान जीवन का,भली है प्रीत की आशा।

गुलाबी आंख के डोरे ,भरे उन्माद सा भीतर
ढलक जाए कभी अंबर,ढुलक जाए तभी सीकर
शिखर से वक्ष को छूकर, बनूं बादल मचल जाऊँ
चले तूफान अंबर में,गरज कर फिर बरस जाऊँ
किसी का कुछ बिगड़ता है? रहूं मदहोश हल्का सा
प्रणय वरदान जीवन का,भली है प्रीत की आशा।

लताएं खींच खाती ज्यों,विटप उल्लास में कोई
अगर बंधन नहीं माने, यहां आतुर युगल कोई
न होगी वासना कैसे, अगर यौवन रहेगा तो
भ्रमर हर फूल पर बैठे,अगर मकरंद होगा तो
बहक जाएं सभी आलिम,जरा आंचल न ढलका सा
प्रणय वरदान जीवन का,भली है प्रीत की आशा।

सतीश कुमार नारनौंद

जिला हिसार हरियाणा

दिल तो दर्पण है

वह नादां भीत बालू से बनाने लगा,
उम्र ढल गई सारी आज बताने लगा।

निज हसरतें मिटाई तुम सबके लिए,
कसक वेदना की आज सुनानें लगा।

जिसकी अंगुली थाम चलना सीखे,
उन बाहों को कमजोर बताने लगा।

समय के दरिया में बह जाते रिश्ते,
रोकर अपना अनुभव सुनानें लगा।

सीसे सा टूटा दिल लिये हुए वह,
आज बेबस था नजरें चुराने लगा।

भीगी पलकें तो दुःख बयां कर गई,
पर महफ़िल में आ मुस्कराने लगा।

नेमीचन्द कुम्हार
ग्राम- बागडों का बास,पोस्ट-
किशनपुरावाया- बधाल,जिला-
जयपुर (राजस्थान)

बचपन को किसने मारा

आखिर बचपन को किसने मारा ?
मैंने महसूस किया बच्चों में अब,
भगवान नहीं विज्ञान बसता है।
मां बापू का प्यार अब उनके,
बचपन को नहीं मिलता है।
अधिक कमाने की लालसा में,
बाहर बीत जाता है दिन सारा।
आखिर बचपन को किसने मारा ?
रोते-बिलखते मासूम बचपन में,
नहीं कोई खिलौना अब शेष रहा।
काम-काज की भाग-दौड़ में,
मोबाइल ही एक अवशेष रहा।
संस्कारों की पारिवारिक शाला में,
बच्चों का नहींबचाकोई सहारा।

आखिर बचपन को किसने मारा?
उसके सारे खेलों पर क़ाबू,
अंग्रेजी विद्यालयों का हो गया।
बस्ते के बोझ तले,
जाने बचपन कहां खो गया?
पढ़ते-पढ़ते बचपन अब,
लगनेलगाहैटूटता तारा।
आखिर बचपन को किसने मारा?
प्रतिशत-अंकों की दौड़ में,
आखिर वही तो पिसता है।
बंद कमरे की खुली किताबों में,
बचपन यूं ही सिसकता है।
सारी रात नींद से था वह थका हारा,
आखिर बचपन को किसने मारा?
मुरझा गया है बचपन,
नहीं खिलखिलाता अब भोर में।
गिरते-पड़ते कब बीत गया,
वह आधुनिकता के इस शोर में।
टूट-टूट कर बिखर गया वह,
जो था बच्चों का प्यारा।
आखिर बचपन को किसने मारा?

बचपन को इस क़द्र मिटाने में,
सबने भूमिका निभाई।
परिवार,शिक्षा,सरकार नहीं कोई अछूता,
दया किसी को नहीं आई।
नहीं है कोई निर्दोष,
है दोषी जगत यह सारा।
आखिर बचपन को किसने मारा?
लौटा दो चमकते चंचल बचपन को,
चांदनी चांद सितारों की।
फिर से महकने दो बचपन को,
जैसेखुशबू फूल बहारों की।
सबका एक ही ध्येय हो,
हो सबकाएकही नारा।
चंद कोशिशों से इस बचपन को,
जाएफिरसे सँवारा।
आखिर बचपन को किसने मारा?
आखिर बचपन को किसने मारा?

युद्ध युद्ध

डॉ. अखिलेश शर्मा

मानवता का
करे संहार
युद्ध युद्ध !
रुदन, क्रंदन
चीख,पुकारें
बारूदी,
सांसें- सिसकारें
निर्दोषों पर अत्याचार
युद्ध युद्ध !

गांव,शहर
पूरे बर्बाद
कैसे फिर होंगे
आबाद?
जहर उगलते हैं हथियार
युद्ध युद्ध!

भाग रहे
बच्चे ,महिलाएं
कहां स्वयं को
कैसे बचाएं?
बिखरे रहे हैं घर-परिवार
युद्ध युद्ध !

स्वार्थ, जिद्द
ताकत ,सीमाएं
झूठ, फरेब से
दुनिया को भरमाएं,
कौन हैं इसके जिम्मेदार
युद्ध युद्ध !

बहुत हो गया
बंद करो अब,
तांडव मौत का
खत्म करो सब,
विश्व हो रहा है शर्मसार
युद्ध युद्ध !!

केशव शरण
एस 2/631-3 के के, कुंज विहार कालोनी,
सेंट्रल जेल रोड, सिकरौल, वाराणसी

प्रकृति, संस्कृति और स्त्री की त्रयी का बहुआयामी विमर्श

स्त्री चेतना, पर्यावरण और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सुप्रतिष्ठित लेखिका सुश्री आकांक्षा यादव के आलेखों का संग्रह "प्रकृति, संस्कृति और स्त्री" को पढ़ते हुए जहाँ हम विषयवार उनके विचारों, विवरणों और विवेचनों से प्रभावित होते हैं वहीं हम निबंध विधा के महत्व को भी जान पाते हैं। संवेदनाओं और सरोकारों से प्रेरित यह विधा लेखन की अन्य विधाओं की तुलना में निश्चय ही कहीं ज़्यादा श्रमसाध्य, अध्ययनजन्य, शोधपरक और बौद्धिक है। एक अच्छा आलेख वह है जो हमें आत्मनिष्ठ रूप से वस्तुनिष्ठ जानकारियाँ, समझ और दृष्टि दे और हमारी चेतना तथा संवेदना का विस्तार करे। इस कसौटी पर इस किताब के आलेख जो संख्या में सोलह हैं, सोलह आने खरे हैं। इस पुस्तक में स्त्री पक्ष पर छः, प्रकृति पक्ष से दो और शेष संस्कृति पक्ष पर आलेख हैं। नारी विमर्श, लोक चेतना, प्रेम, भाषा, शिक्षा, साहित्य, सोशल मीडिया से जुड़े मुद्दों के साथ ही पर्यावरण विषयक चिंताएं लेखिका की प्रस्तुत कृति के मुख्य विषय हैं। विभिन्न विधाओं में सृजनरत सुश्री आकांक्षा यादव की यह चौथी पुस्तक है। एक लेखिका के साथ-साथ अग्रणी महिला ब्लॉगर के रूप में भी उन्होंने देश-विदेश में कीर्ति फैलाई है।

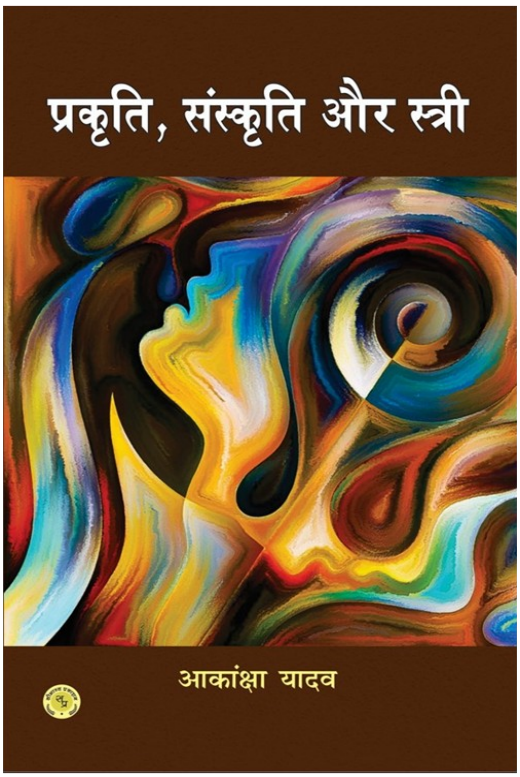

इस आलेख-संग्रह में "प्रकृति, संस्कृति और स्त्री" शीर्षक से कोई आलेख नहीं है लेकिन सारे आलेख इस महाशीर्षक के अंतर्गत हैं जो मानवीय परम्पराओं, उसके वर्तमान और भविष्योन्मुखी जीवन-संभावनाओं पर आधारित हैं। इनके विषय हमारे रोज़मर्रा के अनुभवों या अवसर विशेष के अनुभवों से संबंधित हैं। हम इन्हें कैसे जीते थे, कैसे जीते हैं और कैसे जीना चाहिए उस सबको ये आलेख प्रत्यक्ष करते हैं। इनमें किसी विशेष विचारधारा का पक्ष नहीं है, जो है सामान्य जनबोध का लेखकीय जनबोध व पक्ष है। लोक चेतना में स्वाधीनता की लय खोजने का उपक्रम है।

इस पुस्तक में आज़ाद भारत के लोकजीवन के विविध पक्षों और प्रश्नों पर विचार किया गया है इसलिए यह लेख "लोक चेतना में स्वाधीनता की लय" प्रथम स्थान पर रखा गया है। इसमें पराधीनता के कारण, संघर्ष की भीषणता और स्वाधीन भारत के सपनों व आशाओं का उल्लेख है। लेखिका का मानना है कि इतिहास लोकमानस में पीढ़ी-दर -पीढ़ी प्रवाहित होता रहता है और आज़ादी एक विस्तृत अवधारणा है जिसमें न सिर्फ़ राष्ट्र बल्कि व्यक्ति की भी स्वाधीनता का समान महत्व है जो राजनैतिक दमन और आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने के साथ नवोन्मेषकारी है। ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम के साथ किंवदंतियों में समाए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का चित्रण भावोद्वेलित करता है। लेखिका आकांक्षा यादव की निबंध शैली विशिष्ट है। इसमें भाषा का कसाव और प्रवाह है जो विवरणों की शुष्कता को समाप्त कर उन्हें मर्मपूर्ण और पठनीय बनाता है। सूचनाओं के साथ संवेदनाओं का विस्तार विषय को एक विचार-पूर्णता और आवश्यक जीवन-संदेश तक पहुँचाता है। यह शैलीगत विशिष्टता लेखिका की अपनी है इसलिए लेखिका के हर लेख में मिलती है।

ज़ाहिर है शेष पन्द्रह आलेख स्वतंत्र भारत में जीवन-स्थितियों और परिस्थितियों के संदर्भ में होंगे जिनमें हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी, हमारी शिक्षा, हमारा घर-परिवार, हमारा पर्यावरण, हमारे त्योहार, हमारी जीवन शैली, हमारी तकनीकी और हमारे विमर्श जो चाहे स्त्री को लेकर हो या प्रकृति या संस्कृति को लेकर, समाहित हैं। ये सारे आलेख एक साथ मिलकर एक ऐसी वैचारिकी रचते हैं जिसमें हमारी पूरी भारतीय परम्परा, राष्ट्रीय जीवन और व्यक्ति की स्वायत्तता का यथार्थपरक चिंतन उभरता है। सृष्टि का संवाह करने वाली नारी की अस्मिता पर

यथार्थपूर्ण और आवेशहीन बहुआयामी विमर्श समावेशी और गहरी चिंतन दृष्टि का परिचायक है तथापि प्रखरता और तेजस्विता कहीं से कम नहीं है। विवरणों और आंकड़ों से भरे ये आलेख छूटने का कहीं से मौक़ा नहीं देते। मिथक से, इतिहास से, लोक से, शास्त्र से, परम्परा से जुटाए गए साक्ष्य, आँकड़े और विवरण इन आलेखों को दस्तावेज़ी बनाते हैं और लेखकीय विवेचनाएँ न्याय-अन्याय और सच-झूठ का स्वरूप सामने रखती हैं। सहज, सरल, प्रवाहमयी, भावपूर्ण भाषा संवेदित करती चलती है और पाठकीय बोझिलता से बचाती है।

इस पुस्तक में लोक चेतना में स्वाधीनता की लय, भूमंडलीकरण के दौर में भाषाओं पर बढ़ता खतरा, भारतीय संस्कृति की पहचान है हिन्दी, प्रकाश-स्तम्भ की भांति हैं शिक्षक, भविष्य संवारने के लिए सहेजें बचपन, मानव और पर्यावरण : सतत विकास और चुनौतियाँ, लौट आओ नन्ही गौरैया, विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्ष, प्रेम, वसंत और वैलेंटाइन, मानव जीवन को लीलती तंबाकू की विषबेल, माँ : एक अनमोल रिश्ता, समकालीन परिवेश में नारी विमर्श, आजादी के आंदोलन में भी अग्रणी रही नारी, सोशल मीडिया और आधी आबादी की मुखर अभिव्यक्ति, शिक्षा, साहित्य और स्त्री, 'नारी शक्ति वंद गढ़ेगी राजनीति में महिलाओं की नई इबारत सहित स्त्री पक्ष पर छह, प्रकृति पक्ष से दो और शेष संस्कृति पक्ष पर आलेख हैं। 'प्रेम, वसंत और वैलेंटाइन' एक ऐसा आलेख है जिसमें तीनों पक्ष हैं। इस पुस्तक को पढ़ते हुए हम एक विचार यात्रा पर निकलते हैं जिसके पन्द्रह पड़ाव हैं और आख़िरी एक मंज़िल है जहाँ स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र नारी एक नई इबारत लिखने जा रही है जो नारी शक्ति वंदन के रूप में राजनीतिक है और राजनीति से आगे भी। वे डॉ. अम्बेडकर जी को उद्धृत करती हैं, जो कहते हैं कि मैं किसी भी समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से नापता हूँ।

स्वतंत्रता संग्राम से आज के समय तक राष्ट्रीय, सामाजिक, पर्यावरणीय, नागरिक स्थितियों और परिस्थितियों में स्त्री, संस्कृति और प्रकृति के प्रश्नों पर एक द्रष्टा और भोक्ता के अनुभवों और अध्ययनों द्वारा सृजित ये आलेख हमें सूचना सम्पन्न करने के साथ हमारे संवेदनात्मक ज्ञान में वृद्धि करते हैं और समाज और राष्ट्र के लिए कुछ करने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। लेखन की यह सार्थकता है कि वह हमें विवेक और दृष्टि-सम्पन्न बनाए। आकांक्षा यादव जी के आलेखों में यह ताक़त और क्षमता है। संग्रहीत आलेख युगीन विषयों के संकटों और प्रश्नों से टकराते हैं। चाहे वह हिन्दी भाषा हो, नारी, बालक, युवा हों, प्रकृति हो या संस्कृति हो या टेक्नोलॉजी या तम्बाकू। लेकिन इनका स्वर टकराहट का नहीं है बल्कि संवेदना और समाधान का है। इसलिए ये विमर्शात्मक होते हुए भी सरस हैं और इनमें दृष्टि की समरसता है।

इन विमर्शात्मक आलेखों के बीच एक सृजनात्मक आलेख भी है जिसे हम ललित निबंध भी कह सकते हैं। यह निबंध है- प्रेम, वसंत और वैलेंटाइन। इसमें काव्यात्मक आत्मोद्धार का दर्शन और कविताओं के सुन्दर उद्धरण हैं। इसमें खलील जिब्रान, अज्ञेय, कबीर और किंवदंती बन चुके प्रेमियों की सूची के साथ वेद की ऋचाओं की झंकृति है। यहाँ लेखिका एक सधी और सुधी विमर्शकार के साथ एक बेहतरीन ललित निबंधकार भी दिखाई पड़ती हैं।

सौभाग्य प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित सुश्री आकांक्षा यादव के इस संग्रह में समाहित आलेख हमें सूचना -सम्पन्न करने के साथ हमारी ज्ञानात्मक संवेदना में भी वृद्धि करते हैं इसलिए इनके महत्व का दायरा बड़ा है। भाषा, नारी, समाज और पर्यावरण विमर्श के लिए आवश्यक आंकड़ों और ब्योरों की यहाँ उपलब्धता है। आलेख लेखन की विशिष्ठ शैली और पठनीयता है। विचारों का भावाकुल प्रसार है। इसमें वह सब कुछ है जो एक विद्वान को भी रुचेगा और एक विद्यार्थी के लिए तो इसे विमर्श-गीता ही समझिए! इसकी सुन्दर और सम्यक भूमिका प्रसिद्ध शिक्षाविद, साहित्यकार पूर्व कुलपति प्रो. राम मोहन पाठक ने लिखी है। निश्चिततः, प्रस्तुत कृति पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय है। आशा की जानी चाहिए कि यह कृति हिन्दी के अनुरागियों एवं नारी, प्रकृति और संस्कृति के विविध आयामों पर शोधार्थियों में अपना स्थाई स्थान सुनिर्मित करने में सफल होगी।

कृतिः प्रकृति, संस्कृति और स्त्री
लेखिका: आकांक्षा यादव,
पृष्ठः 128 मूल्यः ₹250/- संस्करणः 2023
प्रकाशकः सौभाग्य प्रकाशन, नई दिल्ली

मधुर कुलश्रेष्ठ
नीड़, गली नं 1, आदर्श कॉलोनी गुना
पिन 473001
मोबाइल 9329236094

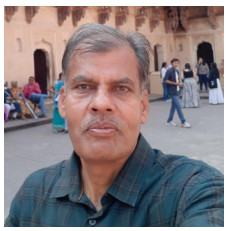

त्राहिमाम युगे युगे - ज्वलंत विसंगतियों का आईना

यह चिरंतन सत्य है कि मृत्यु का निर्धारण जन्म के साथ ही हो जाता है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण भी अर्जुन को मृत्यु के स्वाभाविक होने का संदेश देते हैं-
"जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।
अर्थात मृत्यु निश्चित है जिस किसी प्राणी ने जन्म लिया है उसकी मृत्यु होना स्वभाविक है।"

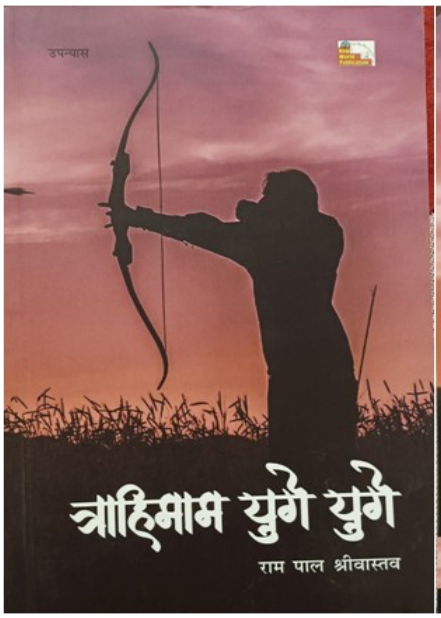

लेकिन जब कहीं कोई दम तोड़ता है तो उससे भावनात्मक रूप से जुड़े हुए लोगों को बहुत वेदना होती है। व्यक्ति जितना उसका करीबी होता है वेदना उतनी ही ज्यादा गहन होती है। यदि उस वस्तु को अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए बलात क्षरित करके दम तोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है या दूसरे शब्दों में कहा जाए कि उसकी सुनियोजित हत्या की जाती है तो एक संवेदनशील व्यक्ति को अत्यधिक पीड़ा होती है। उसका व्यथित हृदय चीत्कार करने लगता है, "त्राहिमाम प्रभो, त्राहिमाम।"

इस क्षरण या मृत्यु की सतत प्रक्रिया प्राकृतिक एवं अवश्यंभावी है तथा सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह शुरू हो जाती है। युगों-युगों से जारी इस प्रक्रिया को मनुष्य ने अपनी लिप्सा से ग्रसित होकर प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का नाजायज दोहन कर विलुप्ति के कगार पर पहुँचा दिया है। यह प्रक्रिया आज भी न केवल जारी है बल्कि यह इंसान की बेशर्म हवस के विध्वंस का शिकार हो गई है।

राहुल सांकृत्यायन के "अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा" की तरह संपादक माधवकांत सिन्हा दो सहयोगियों नवीन कुमार तथा अब्दुल्लाह के साथ सीवीसी के भारत प्रमुख कल्पेश पटेल के स्वप्न "ग्रामीण पृष्ठभूमि पर वास्तविकता आधारित औपन्यासिक कृति" को साकार करने के लिए निकल लिए देश के पिछड़ेतम जिले बलरामपुर के ग्राम मैनडीह। जिससे वे अपने उपन्यास में अपने स्वयं के भोगे हुए यथार्थ को हूबहू रच सकें।

प्रकृति ने धरती की प्यास बुझाने के लिए नदी-नालों में कल-कल बहता हुआ निर्मल जल प्रवाहित किया है। हमारे पूर्वज भविष्य दृष्टा थे, उन्होंने जल की महत्ता को महसूस करते हुए तथा मानव की संभावित अबुझ प्यास की कल्पना करते हुए संसाधनों को संरक्षित रखने के उद्देश्य से जल को वरुण देवता तथा नदी-नालों, पेड़-पौधों को देवी-देवताओं के नाम दे दिए थे। राजे-महाराजों ने भी जल संरक्षण के लिए तालाब और डेम बनवाए थे। बलरामपुर रियासत ने नेपाल की तराई में खैरमान बाँध बनवाकर भुलवा नाले को चिरयौवन का वरदान दिया था। किंतु मनुष्य की भेड़ियाई भूख ने उपजाऊ जमीन के लालच में भुलवा जैसे असंख्य नदी-नालों, तालाबों और बांधों की नोंच-खसोट की तथा उन्हें मृतप्राय कर उनका अस्तित्व ही मिटा दिया है। कई बार क्षेत्र भ्रमण या यात्राओं के दौरान बिना नदी-नाले के सड़क पर सीना ताने खड़े पुल और पुलियाओं की हास्यास्पद स्थिति नजर आ जाती है। संभवतः उस जगह के नदी या नाले का अपहरण वहाँ के दबंगों द्वारा कर लिया गया होगा।

दरअसल नदी-नाले तथा कूले-कांतर का अंत होना केवल नदी-नालों का अंत नहीं होता है बल्कि एक सभ्यता का अंत होना होता है। बकौल उपन्यासकार श्रीवास्तव जी की चिंता बाजिव है -

"नाले और कूले-कांतर सभ्यता का अभिन्न हिस्सा होते हैं। यदि इनको अच्छे से संरक्षित न किया जाए तो एक समय ऐसा आता है कि हमारी संस्कृति ही नष्ट हो जाती है।" (भुलवा की मौत, पेज 36)

नदी-नाले ही गायब नहीं हुए हैं बल्कि सदियों से आबाद रहे दर्जीपुरवा, तिलकपुरवा जैसे अनेक गाँव विभिन्न कारणों से मानचित्र से गायब हो गए या गायब कर दिए गए हैं।

"ऐसे लगभग दो दर्जन गाँव हैं जो अब मानचित्र पर नहीं हैं। पुराने दस्तावेज़ों में कुछ का उल्लेख अवश्य है।" (दो पाटन के बीच में, पेज 90

नदी गायब हुई, नाले दम तोड़ गए, गाँव विलुप्त हो गए, लोक वाद्य लुप्त हो गए, लोक गायकी खत्म हो गई, यहाँ तक कि पेशेगत जातियों का पेशा लोक कलाएं समाप्त हो गई हैं। पिता दिलावर की नट खेल दिखाने के दौरान हुई मृत्यु से रघुवीर जैसे नट कला के स्थान पर भिक्षावृत्ति करने लगे।

धन-दौलत, जमीन-जायदाद, यौनिकता की बड़ी गजब भूख पैदा कर ली है मनुष्य ने। अपनी हड़प नीति में उसने न लाज-लिहाज का ध्यान रखा है, न मान-मर्यादा का। चाहे वह योगेश द्वारा अपनी विधवा भाभी देवेंद्र कुंवरि के सभी पैसे हड़प लेने के बाद घर से निकालने की घटना हो।

"उनके पास अब कुछ भी नहीं है कि धेला भी किसी को कुछ दे सकें। उनकी सगाई वाली सोने की अंगूठी भी तो उषा ने चुरा ली है।" (ये कहानी फिर सही, पेज 134)

या नेहा द्वारा अपने पति राजकुमार के दोस्त भूलन को राजकुमार की जानकारी में होते हुए अपने रूप-सौंदर्य के जाल में फँसाकर 5 बीघा खेत की रजिस्ट्री अपने नाम करा लेने की घटना हो।

"अरी सुनत हेव, दुरिया तौ बनाए रहव, जिसिम के साथ आगे ना बढ़ै देव और खेतवक बात कै लेव।" (जमाने से पंगा, पेज 193)

या भूलन के भाई छांगुर द्वारा लता के प्रेम में अपने हिस्से की 5 बीघा जमीन की रजिस्ट्री लता के नाम करने की घटना हो।

"जब ऐसी बात है तब हम तुम्हारे साथ इसकी शादी कर देंगे लेकिन एक शर्त है। तुमको अपना 5 बीघा खेत लता के नाम करना होगा।" (जमाने से पंगा, पेज 195)

न केवल उपन्यास में बल्कि समाज में भी कोमल मानवीय संवेदनाओं की जगह धोखाधड़ी, छल-कपट, झूठ-प्रपंच ही दिखाई देते हैं। ग्रामीणों के उत्थान तथा ग्रामीण विकास हेतु सरकार द्वारा चल रही तमाम योजनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार ने इनमें पलीता लगाने का काम ही किया है। रही बची कसर सरकारों ने जगह-जगह दारू (मेरी व्यंग्य रचनाओं अनुसार राष्ट्रीय पेय) के ठेके खुलवा कर पूरी कर दी है। खैरात में मिले पैसों से ग्रामीण दारू पीकर लत लगा रहे हैं और बाद में अपनी जमीन-जायदाद औने-पौने दामों में बेचकर परिवार को तंगहाली में डाल रहे हैं तथा असमय मौत का शिकार हो रहे हैं।

समाज में मुस्लिमों के प्रति देखने के नजरिए में आए बदलाव को सीमा सुरक्षा बल एवं पुलिस की कार्यवाही से समझा जा सकता है कि किस तरह अब्दुल्लाह को बिना किसी सबूत के केवल मुस्लिम होने के नाते देशद्रोह व आतंकवादी धाराएं लगाकर जेल में बंद कर दिया गया।

उपन्यास ने समाज में व्याप्त तमाम रूढ़ियों यथा गौवंश की मृत्यु पर अनुष्ठान, वन भूमि पर अवैध कब्जा, शिक्षकों द्वारा बच्चों के साथ अमानवीय व्यवहार को भी पाठकों के सामने विचार करने के लिए प्रस्तुत किया है।

किंतु अंत भला तो सब भला। आखिरकार "त्राहिमाम युगे युगे" को योकर पुरस्कार मिल ही गया। लेकिन न जाने क्यों राम पाल जी ने न्यूयॉर्क जाते समय प्लेन क्रेश कराकर कथा को दुखांत बना दिया। मेरी समझ से शायद उनके मन में अब्दुल्लाह को जेल, कोर्ट, कचहरी से बचाने की जद्दोजहद रही होगी।

राम पाल जी उर्दू के विद्वान हैं इसकी झलक उपन्यास में प्रयुक्त हुए उर्दू के शब्दों से मिलती है। पाठक को इन शब्दों के अर्थ जानने के लिए गूगल की मदद लेनी पड़ सकती है। हालाँकि समूचे वाक्य को एक प्रवाह में पढ़ने से अर्थ समझ में आ जाता है।

जैसा कि राम पाल श्रीवास्तव जी ने "दो बातें" में स्पष्ट कर दिया कि वे बलरामपुर के मैनडीह के निवासी हैं। इसलिए उपन्यास के सभी सोलह अध्याय यथार्थ के करीब हैं और माधवकांत में उनकी ही झलक लगने लगती है।

प्रकाशक न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन दिल्ली एवं मुद्रक सूरज प्रिंटर्स दिल्ली द्वारा उपन्यास "त्राहिमाम युगे युगे" का उत्कृष्ट प्रकाशन किया है। बधाई।

पाठकों के द्वारा दी जा रही सतत प्रतिक्रियाएं "त्राहिमाम युगे युगे" की लोकप्रियता को दर्शाती है।

समाज के नंगे सच को पाठकों के सामने लाने के लिए बहुत बहुत बधाई राम पाल श्रीवास्तव जी। और हमसब इस उम्मीद में हैं कि कभी तो नेता, दबंग, अधिकारी तथा ग्रामीण अपनी-अपनी काली कारगुजारियों पर त्राहिमाम करेंगे।

त्राहिमाम युगे युगे (उपन्यास)

लेखक - राम पाल श्रीवास्तव

प्रकाशक -न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन नई दिल्ली

प्रथम संस्करण -2024

मूल्य -425 रुपए

डॉ. परिधि शर्मा
जुगल किशोर डेंटल क्लिनिक
आर.के टावर, न्यू मेडिकल रोड़
मलकानगिरी (ओड़िसा)
mylifemychoices140@gmail.com

अपने -अपने देवधर : एक समग्र आकलन

बुक्स क्लिनिक द्वारा सद्य: प्रकाशित ग्रंथ 'अपने -अपने देवधर ' हिंदी और छत्तीसगढ़ी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देवधर महंत के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का तटस्थ भाव से किया गया एक सार्थक मूल्यांकन है। डा.देवधर महंत की रचनाधर्मिता की विस्तृत रूप से पड़ताल करने वाली इस महत्वपूर्ण कृति की प्रस्तुति का श्रेय संपादक बसंत राघव को जाता है। बसंत राघव एक अच्छे लेखक भी हैं जिन्हें लेखन की कला अपने पिता प्रसिद्ध साहित्यकार डा.बलदेव से विरासत में मिली है।

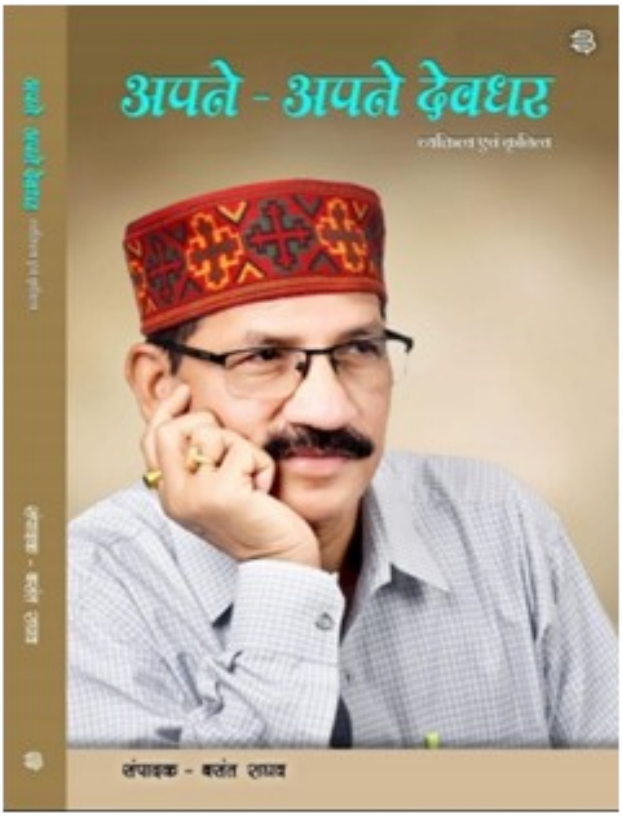

इस संकलन में व्यक्तित्व खंड में डा. जगमोहन मिश्र , शिवशंकर पटनायक , डा.बलदेव , रमेश अनुपम ,लक्ष्मीनारायण पयोधि , डा. महेन्द्र कुमार ठाकुर, डा. अजय पाठक, रामेश्वर वैष्णव, मीर अली 'मीर', रामेश्वर शर्मा, डा.माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग', ,प्रो.बांकेबिहारी शुक्ल, प्रो.भूपेन्द्र पटेल, प्रो.राजकुमार राठौर, डा. सोमनाथ यादव, डा. मंतराम यादव, महेश श्रीवास , डा .जे.आर.सोनी , सरला शर्मा, डा. शालिनी श्रीवास्तव, शशि दुबे , संतोषी श्रद्धा, डा.वंदना जायसवाल के मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी आलेख शामिल हैं वहीं संत बालक भगवान, डा. बलराम एवं राजेश चौहान की भावपूर्ण काव्यात्मक प्रस्तुति भी मौजूद है।

कृतित्व खंड में डा.चित्तरंजन कर, डा. बिहारीलाल साहू, डा.विनयकुमार पाठक, डा.भागीरथ बड़ोले, श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी, नर्मदाप्रसाद मिश्र 'नरम', डा. बलराम, डा. उमाकांत मिश्र, डा. सुधीर शर्मा, डा. हेमचंद्र पांडेय,डा. गंगाधर पटेल 'पुष्कर', रजत कृष्ण, रमेश शर्मा , तिलक पटेल, डुमनलाल ध्रुव, निर्मल आनंद , प्रमोद सोनवानी'पुष्प', डा. अनिल भतपहरी ,पोखनलाल जायसवाल , डा. साधना कसार , मंगला देवरस इत्यादि महत्वपूर्ण लेखकों की आलोचकीय दृष्टि से संपन्न आलेख भी ध्यान खींचते हैं।देवधर महंत के छत्तीसगढ़ी सृजन पर डा.विनयकुमार पाठक, डा. सालिकराम अग्रवाल, डा.फूलदास महंत, उमेश शर्मा, रामेश्वर शर्मा, निर्मल आनंद के सूक्ष्म अवलोकन आलेख के रूप में संयोजित हैं।

साक्षात्कार खंड में दिनेश ठक्कर, ऋतु राघव और सृजन महंत द्वारा डॉ. देवधर महंत से लिए गए जीवंत साक्षात्कार का संग्रहण भी उल्लेखनीय है।

बानगी के तौर पर डा.देवधर महंत की कहानी "मोड़ पर " तथा कुछ गीत ग़ज़ल , मुक्तक, दोहे इत्यादि भी पुनर्पाठ के रूप में पाठकों के लिए प्रस्तुत किये गए हैं जो एक अच्छा प्रयास है। डॉ देवधर महंत के लेखकीय जीवन से जुड़ी सत्रवार यात्राएं एवं उनके अविस्मरणीय काव्य पाठ संस्मरणों को भी खूबसूरती से सिलसिलेवार किताब में जगह दी गयी है।

इस कृति की एक और विशेषता है , डा. देवधर महंत को लिखे गए विभिन्न साहित्यकारों के उल्लेखनीय पत्रों का दुर्लभ संचयन। इस संचयन में छायावाद प्रवर्तक मुकुटधर पांडेय, डा.शिवमंगल सिंह सुमन , कमलेश्वर, डा.धर्मवीर भारती , डा.हरदेव बाहरी , स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी , लतीफ घोंघी , सूर्यबाला , डा.कुंतल गोयल, इंदिरा राय , जया जादवानी , डा. स्नेह मोहनीश, स्वदेश दीपक, बालकवि बैरागी, भारत -भूषण, चंद्रसेन विराट, माणिक

वर्मा, बलवीरसिंह 'करुण', द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र', श्यामलाल चतुर्वेदी, नारायण लाल परमार, डा बलदेव , हरि ठाकुर, दानेश्वर शर्मा,प्रदीप चौबे , सुरेश उपाध्याय , विनीत चौहान, डा.विष्णु सक्सेना, प्रकाश प्रलय , रामप्रताप सिंह विमल,परितोष चक्रवर्ती , ओमप्रकाश वाल्मीकि , डा. शरण कुमार लिंबाले ,विभु खरे , सतीश जायसवाल , कुमार प्रशांत, कृष्णकांत एकलव्य , डा. रमेशचन्द्र महरोत्रा , डा.बालेंदुशेखर तिवारी, डा.प्रेमशंकर , डा.गणेश खरे , डा.सुरेशचंद्र शुक्ल, "चंद्र", ललित सुरजन,रमेश नैयर, सोमदेव, डा.जगमोहन मिश्र , डा. चित्तरंजन कर , डा.हर्षवर्धन तिवारी , डा . अरुण कुमार सेन, डा.रामलाल कश्यप , श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी , अशोक झा, नरेंद्र श्रीवास्तव , विद्याभूषण मिश्र , दानेश्वर शर्मा , रविशंकर शुक्ल , मुन्नीलाल कटकवार , डा विमल कुमार पाठक, लक्ष्मण मस्तुरिया , रामेश्वर वैष्णव , मुकुंद कौशल , डा.अजय पाठक , गिरीश पंकज, विनोद साव,महेश अनघ , जहीर कुरैशी, बबन प्रसाद मिश्र, आलोक प्रकाश पुतुल, कमलेश भारतीय, कैलाश चंद्र पंत , डा. विष्णुसिंह ठाकुर, गजेन्द्र तिवारी, त्रिभुवन पांडेय, डा. महेंद्र कुमार ठाकुर,भास्कर चौधुरी,माया वर्मा , संतोष झांझी , डा., साधना कसार, डा. भारती खुबालकर , डा.किरण जैन, डा. दमयंती सिंह ठाकुर, मीना मंजुल, आशा झा प्रभृति के दुर्लभ पत्र शामिल हैं। किताब में पत्र साहित्य की प्रस्तुति के माध्यम से लेखक की भीतरी दुनिया तक पहुंचने का एक सुगम रास्ता पाठकों के हाथ लगता है ।

अंत में कतिपय महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ छायाचित्र प्रदर्शित हैं।

इस कृति के अवलोकन से डा.देवधर महंत के बारे में विस्तार से जानकारी मिलती है । डा.देवधर महंत 68 वसंत देख चुके हैं। पत्रकारिता, अध्यापन उसके उपरांत 35 वर्षों के राजस्व अधिकारी के रूप में सेवा का प्रदीर्घ अनुभव उनकी झोली में है। वे छात्र संघ के अध्यक्ष भी रहे। बहुत कम लोगों को पता होगा कि 19 अप्रैल 1977 को बिलासपुर में यूनिवर्सिटी की स्थापना तथा वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के मुख्यालय की मांग को लेकर जे.पी.की तर्ज़ पर मौन जुलूस निकालने का दुर्लभ कार्य भी महंत जी ने कर दिखाया था जिसकी जानकारी किताब के माध्यम से मिलती है। मजदूर और किसान संगठनों से भी उनका जुड़ाव रहा है। नौकरी के दौरान कार्मिक तथा साहित्यिक एवं शैक्षणिक संगठनों में भी उनकी सक्रिय सहभागिता रही। एक दशक से अधिक समय तक अपने समाज के वे राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे।अनेक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना में उन्होंने अपनी भूमिका भी निभाई।

जहां तक महंत जी की साहित्यिक यात्रा का प्रश्न है, इस ग्रंथ से ज्ञात होता है कि उनकी स्वरचित, संपादित 15 कृतियां प्रकाशित हुई हैं। उनकी पहली कृति छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह'बेलपान' 1974 में छपी । 2024 में बेलपान के प्रकाशन वर्ष की अर्द्धशती हो गई। उसी वर्ष 1974 में ही इन्होंने अंतर्देशीय पत्र में मिनी कविताओं की मासिकी "प्रेरणा" का प्रकाशन शुरू किया। उस समय महंत जी फर्स्ट ईयर के छात्र थे। वर्तमान में वार्षिकी "समन्वय" का संपादन भी वे कर रहे हैं। आकाशवाणी एवम दूरदर्शन से भी उनकी रचनाओं का प्रसारण होता रहा है। उनकी लंबी कालजयी छत्तीसगढ़ी कविता 'अरपा नदिया ' पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के एम.ए.(छत्तीसगढ़ी) के पाठ्यक्रम में सम्मिलित है।

अपने जीवन की दूसरी पारी में डॉ.महंत हाईकोर्ट में वकालत करते हुए "रिटायर्ड बट नाट टायर्ड " जैसी उक्ति को भी चरितार्थ कर रहे हैं।

"अपने -अपने देवधर " अपने ढंग की एक अनूठी कृति है जिसमें किसी लेखक के रचनात्मक और सामाजिक जीवन को विभिन्न आयामों से देखने की कोशिश हुई है।इस कोशिश से बसंत राघव के संपादन कौशल का परिचय पाठकों को मिलता है। यह कृति साहित्य के अध्येताओं - शोधार्थियों के लिए आगे चलकर उपयोगी सिद्ध होगी। इस किताब से गुजरना एक अच्छे अनुभव से गुजरने जैसा अनुभव दे सकता है। लेखक और संपादक दोनों को बधाई।

किताब : अपने अपने देवधर
प्रकाशक : बुक्स क्लिनिक
संपादक : बसंत राघव
पृष्ठ: 322 मूल्य: 1000

डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री
माफ़ी, अस्थावां, नालंदा, बिहार

ग़ज़ल

वो इक वक़्त था सूरज से मेरा नाता था
मैं छुपके चांद से मिलने फ़लक पे आता था

फिर ये हुआ कि ताल्लुक भी उनसे रह न सका
वो बेवफा था मेरे ग़म पे मुस्कुराता था

कभी रही नहीं ख्वाहिश भी उसको मिलने की
वो रोज़ कोई बहाने नया बनाता था

कभी भी उसने जो मुझसे जफ़ायें कीं तो फिर
ये सच है बाग़ का इक फूल टूट जाता था

किसे ख़बर थी वही चीज़ लूट लेगा मेरी
वो सारी रात हमें नींद से जगाता था

विजय कुमार तिवारी

(कवि,लेखक,कहानीकार,उपन्यासकार,समीक्षक)
टाटा अरियाना हाऊसिंग,टावर-4 फ्लैट-1002
पोस्ट-घटकिया -751029,भुवनेश्वर,उडीसा,भारत

'बंद दरवाजे का मकान" की संवेदनशील कविताएं

आज की रचनाएं कल के लिए आधार तो बनती ही हैं,पीछे का बहुत कुछ संस्कार आदि समेटे होती हैं। यह कोई दूध की धार है जिसे पीढ़ियाँ कहीं से ग्रहण करती हैं और अगली पीढ़ी को सौंप देती हैं। यह धार काव्य में विशेष रुप से दिखाई देता है। कवियों में खास तरह की संवेदनाएं होती हैं। सृजन में,संघर्ष,पीड़ा आदि का चित्रण, संगति-विसंगति का दृश्यांकन और जुझारूपन भिन्न धरातल पर खड़ा करता है। हरेक विधा का अपना आलोक है और विस्तार भी। लेखन का भाव बनते ही, रचनाकार स्वयं अपनी विधा का चयन करता है और सृजन शुरु हो जाता है।

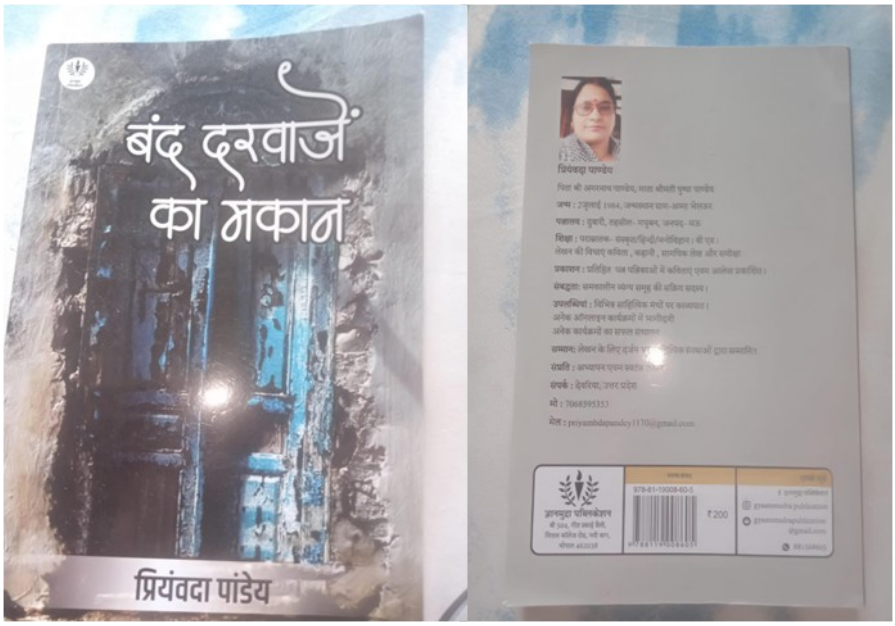

मेरे पड़ोसी जनपद देवरिया, उत्तर प्रदेश की प्रियंवदा पाण्डेय जी का सद्यः प्रकाशित काव्य संग्रह "बंद दरवाजे का मकान" मेरे सामने है, महीनों पूर्व मिला है। मुझे प्रसन्नता है, सामाजिक मीडिया के मंच पर हमारी भेंट हुई है और आज उनकी पुस्तक पढ़ रहा हूँ। उनके लेखन-सृजन की गति की तीव्रता की सराहना होनी चाहिए। उनके द्वारा सस्नेह अर्पित किया जाना भावुक कर रहा है। उन्होंने कविताएं,कहानियाँ,सामयिक लेखों के साथ-साथ सशक्त समीक्षाएं की हैं और प्रभावशाली ढंग से सक्रिय हैं। उन्हें साहित्यिक संस्थाओं से अनेक पुरस्कार मिले हैं और काव्य मंचों पर खूब सराही जाती हैं।

देश के चर्चित व प्रसिद्ध कवि,व्यंग्यकार रामस्वरूप दीक्षित जी ने 'डिब्बी भर धूप की तपिश लिए कविताएं' शीर्षक से अपनी भूमिका में बिल्कुल सही लिखा है-"प्रियंवदा हिन्दी कविता में उम्मीद की रोशनी लेकर आने वाली उन थोड़ी सी कवयित्रियों में हैं,जिनके यहाँ जीवन के स्याह-सफेद सभी तरह के रंग न केवल देखे जा सकते हैं,वरन महसूस भी किए जा सकते हैं।" उन्होंने रचनाओं के धीमी आँच पर पकने की प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए लिखा है-"प्रियंवदा के कवि में यह हुनर कुदरती-सा दिखता है।" दीक्षित जी ने जिस तरह गहन चिन्तन करते हुए इन कविताओं को समझा है,मेरे विचार से, किसी और के लिए कुछ भी शेष नहीं बचता। मेरी प्रियंवदा से कभी-कभी बातचीत भी हुई है,उनमें खास तरह का आक्रोश दिखाई देता है। उनके चिन्तन में समाज,व्यक्ति या जीवन को लेकर सुखद कल्पनाएं हैं और उससे इतर या विचलन भरे दृश्य उन्हें विचलित करते हैं। रामस्वरुप दीक्षित जी के ये शब्द ध्यान खींचते हैं-"इन कविताओं में जहाँ स्त्री सुलभ संवेदना है,वहीं उसकी संघर्ष जन्य पीड़ाएं और लैंगिक दुराग्रहों से टकराते हुए उसके क्षत-विक्षत मन के अंदरूनी जख्म भी। उनके यहाँ स्त्री विमर्श फैशनपरस्ती की चीज न होकर स्त्री को मनुष्य की तरह देखे जाने की सहज,स्वाभाविक और जरुरी अपील की तरह है।" पाठकों से आग्रह है,इन कविताओं में उतरने या डूबने से पहले रामस्वरुप दीक्षित जी की भूमिका को अवश्य पढ़ें,कवयित्री की कविताओं को समझना सहज और सुगम्य हो जायेगा। इस संग्रह में हर

भाव-बोध की कुल 75 कविताएं हैं जिनमें डूबते-उतराते हुए मन झंकृत हो उठता है और निश्चित रूप से ये कविताएं जन -मानस को झकझोरने वाली हैं।

स्त्री,औरत,लड़की,मां,बेटियाँ आदि को लेकर उनकी अनेक कविताएं हैं-नदी और लड़की,उतर आयी है मां, दूसरी औरत होती तो,स्त्री,अस्तित्व को तलाशती औरतें,मां,तुलसी और तरुणी,विधवा स्त्री,मौन स्त्री,सभी स्त्रियाँ,वह स्त्री है,बोलने वाली औरत,सुहागन लिख दिया,मां और बासी रोटियाँ,हर स्त्री में सावित्री, विरहणी स्त्री और लहलहाएगी बेटियाँ। उन्होंने स्त्री के हर स्वरुप को समझने-समझाने की कोशिश की है,उनके सुख को,दुख को,संघर्ष व पीड़ा के साथ-साथ उनकी उड़ान को भी। ये सारे भाव उनके जाने-पहचाने हैं,इनके बीच की संगतियों-विसंगतियों की परख है और सुखद कल्पनाएं भी। 'नदी और लड़की' कविता की यह समानता चमत्कृत करती है कि कैसे हर स्त्री साहसी बन जाती है-

उद्गम से निकलकर फिर कभी न लौटने वाली नदी;
और लड़की में,अद्भुत समानता है यह
घर को छोड़ने वाली लड़की भी पथरीले रास्तों पर रपटकर
लहूलुहान होकर भी लौट नहीं सकती कभी घर को,यह वर्जना
उसे विवश करते हुए अदम्य साहस से भर देती है

'उतर आयी है मां' कविता का भाव सच ही तो है,मां मरती नहीं है,वह अपने बच्चों में सदा अमर रहती है। स्त्री का यह सत्य समझना चाहिए,जो अपने सपनों की स्त्री बन नहीं पाती,वह यह कहकर अपनी पीड़ा कम कर लेती हैं-दूसरी औरत होती तो कर देती/तुम्हारा त्याग जन्म-जन्मांतर के लिए। 'स्त्री' कविता में घूँघट स्त्री को बचा लेता है कि कोई उसके चोटों को पढ़ न ले तथा कुछ और दर्दों से वास्ता न हो। 'अस्तित्व को तलाशती औरतें' स्त्री के श्रम-साध्य जीवन का संदेश देती है और वर्जनाओं से मुक्ति चाहती है। वैसे ही प्रियंवदा ने 'मां' कविता में मां के रुप में स्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व को दिखाया है। अनायास उग आए तुलसी के पौधे की तुलना तरुणी से करना बहुत कुछ स्पष्ट कर देता है और कवयित्री के संकेत झकझोरते हैं।

'मौन स्त्री' स्त्री को परिभाषित करती कविता है-स्त्री का मौन चलायमान है/संतानोत्पादक है/ कामोत्पादक है/स्त्री की गंभीरता ही सुन्दरता है/और मौन उसकी अभिव्यक्ति। 'सभी स्त्रियाँ' कविता का भाव-संदेश यही है कि सभी स्त्रियाँ मां होती हैं। 'वह स्त्री है' कविता में कवयित्री उन स्त्रियों के लिए सच बयान करती हैं जिन्हें अपने पुरुषों का साथ नहीं मिलता,लिखती हैं-वह सुहागिन के वेश में/ खोयी हुई विधवा है/मेरी समझ से। 'बोलने वाली औरत' समाज,सरकार और मीडिया पर जबरदस्त प्रश्न की तरह कविता है जिसके साथ कोई खड़ा नहीं होता और उसे खामोश कर दिया जाता है। 'सुहागन लिख दिया' के सारे बिंब रोचक हैं,सत्य हैं और यह स्वीकारोक्ति नाना भाव जगाने और रिझाने वाली है-

तुझको लिखा सुहाग
खुद को सुहागन लिख दिया

वैसे ही 'मां और बासी रोटियाँ' के सारे बिंब मां के जीवन की सच्चाई बयान करते हैं। कवयित्री की मां के प्रति संवेदना भावुक करती है। 'हर स्त्री में सावित्री' की शर्त बिल्कुल सही है-

जरुरी है कि पुरुष भी
सत्यवान बने ताकि पैदा हो सके
हर स्त्री में सावित्री

'विरहणी स्त्री' कि ऐसी विशद व्याख्या,ऐसी तुलनाएं और ऐसे दृश्य प्रियंवदा ही कर सकती हैं। उनकी इस समझ से किसी को भी विरोध नहीं हो सकता,वह लिखती हैं-हाँ,वह विरहणी स्त्री है/जो मनुष्य को बना देती है/कलाकार/ कथाकार/शिल्पकार/नृत्यकार/क्योंकि उसे आता है/दे देना दर्द को आकार। उनकी ये पंक्तियाँ अद्भुत हैं-बैठती है हर कलाकार/के भीतर/मारकर/कुंडली/कि वह दे सके दुनिया को/एक नयी रचना/एक नया आविष्कार। 'लहलहाएंगी बेटियाँ' मायके से अधिकार पूर्वक जुड़ने के गहरे भाव की कविता है। ऐसी भावनायें हर लड़की की होती है और वह अपनी ओर से हर रिश्ता निभाना चाहती है। स्त्री को लेकर प्रियंवदा हमेशा सृजन के भाव में रहते हुए सुखद कल्पनाएं करती हैं।

उनकी कविताओं में सहजता है,समर्पण है,राग और कोई स्वप्निल संसार है। 'तुम आ जाते हो' में कवयित्री का तंद्रिल स्वप्न बुनना और कोमल फूल झरना उनका गहन भाव ही तो है। यह भाव भी सही है कि आदमी कभी बूढ़ा नहीं होता, उसके भीतर मचलता रहता है एक नन्हा बालक। तुम्हारा चित्र,तुम्हारे आने से, उस रात,यह तुम्हारा नाम है,मनोरम है रात,तुम सच में बसंत हो और जब आपका वरण किया जैसी कविताओं में आपसी सुखद,संकल्पित जीवन के दृश्य उभरते हैं। ये सारे भाव सुखद अहसासों से भरे हुए हैं,पंक्तियाँ देखिए-अनायास घटते रहते हो आप/मेरे भीतर/वैसे ही/जैसे/भूगर्भ में तरंगें/या/धरती के गर्भ/में उत्तरोत्तर/वृद्धिगामी अंकुर। 'तुम्हारे आने से' कविता के बिंब प्रेयसी या पत्नी के मनोभावों को जीवन्त कर देते हैं। प्रतीक्षा करती नायिका के मनोभाव प्रकृति के बिंबों में गहरे तौर पर उभरे हैं 'उस रात', 'मनोरम है रात','तुम सच में बसंत हो' और 'जब आपका वरण किया" जैसी कविताओं में।कवयित्री संकल्पित हैं 'हँसी' कविता में, दृश्य-भाव देखिए-हमने/हँसने की ठान ली है/महंगाई--भ्रष्टाचार, बलात्कार/के बाद भी/हम हँसेंगे/एक बेशर्म सी हँसी। 'उदात्त प्रेम' कविता बहुत कुछ कहती है और अंत में पूर्णता प्राप्त करती दिखाई देती है-उसने महसूस किया उसे/अपनी सांसो/में और/एक लंबी सांस लेकर/उतार लिया अंतस में/अब रहती है वह/ उसके शरीर में प्राणवायु बनकर। प्रियंवदा को अपनी कविताओं के लिए शब्द चयन की समस्या नहीं है,वह अपनी भावनाओं को सहज ही उतार देती हैं और अपनी अनुभूतियों से चमत्कृत कर देती हैं। कुछ क्षण, पिता के रहने तक, अभिलाषा, प्रवृत्तिगत एकता आदि में

गिलहरी,फूल,मौसम, गौरैया, बेटी, मां,पिता जैसे बिंब रिश्तों में संवेदना जगाते हैं,कोई उल्लास और सक्रियता भर देते हैं। रिश्तों के बीच अपनापन,एक-दूसरे के प्रति प्रेम और त्याग जैसे भावों को कवयित्री खूब समझती हैं, जहाँ कहीं विचलन दिखाई देता है,वह आहत होती हैं और चीत्कार करती हैं। 'तुम्हारी कविताएं' कविता के भीतर विरोध-अन्तर्विरोध के स्वर खूब मुखरित हुए हैं और आपसी सम्बन्धों की सच्चाई उजागर हुई है,पंक्तियाँ देखिए-

तुम्हारी कविताओं को पढ़ते हुए
कई बार नंगा हुआ
कई बार गहरी खाई में गिरने से बचा
जो तुम कभी न कह सकी
वह सब
कह गई तुम्हारी कविताएं

'सुबह-सुबह दो पुराने चोर मिल गये' स्मृतियों में हिसाब-किताब करती रोचक कविता है, चोरों के भी उसूल और सिद्धान्त होते हैं-

दोनों अपने उसूल
और सिद्धान्त की बातों में
मगन थे

उनके संवाद के द्वारा कवयित्री समाज का चेहरा नग्न करती हैं और बताती हैं कि स्कूल वाले, अस्पताल,अफसर,हुक्काम सब के सब घर में कुछ और/बाहर कुछ और हैं/यह सभी सफेदपोश चोर हैं। 'मायका छोड़ आयी है' लड़कियों के जीवन की अवश्यंभावी घटना की यथार्थ और भावपूर्ण कविता है। विदा करते समय मां अपनी बेटी के आँचल में चावल,हल्दी,दूर्वा और कुछ रुपये बाँध देती है,यह कविता उस प्रसंग को बहुत गहरा मान देती है और उसकी महत्ता,त्याग दर्शाती है,भाव देखिए-बाबा का मान हमेशा बना रहे/इसके लिए कुछ भी/सह जाने का साहस/साथ लायी है/बेटी,इस बार भी/मायका छोड़ आयी है/और अपनी आत्मा भी। प्रियंवदा पांडेय घर-परिवार के बीच के रिश्तों की टूटन को गहरे तौर पर अनुभव करती हैं। इसका प्रमाण उनकी मार्मिक कविता 'एक समय के बाद' में देखा जा सकता है। उन्होंने निश्चित ही इन अनुभवों को देखा व जिया है और इसका विस्तार चमत्कृत करने वाला है। उनकी संवेदनाएं प्रेम और प्रकृति के साथ गहरा प्रभाव दिखाती हैं और दृश्य पाठकों के मन को संवेदित करते हैं। 'तुम्हें साथ पाकर' पूरी की पूरी कविता स्त्री मन की सहज स्वीकृति है और सत्य भी। भाव तो सबके पास होते हैं परन्तु ऐसी स्वीकृति विरल है जिनमें भाव-संवेदनाएं,सहज समर्पण, गहरा प्रेम, बहुत कुछ परिभाषित हो रहा है।

हमने अक्सर देखा है,कुछ वृक्ष ठूँठ हो जाते हैं और फल-फूल रहित हो अपनी गरिमा खो देते हैं। कवयित्री अपनी अनुभूतियों द्वारा इसका रहस्य बतलाती हैं-वह वृक्ष न बन सके/क्योंकि उन शब्दों में/न छल था/न चाटुकारिता थी/न लूटने की कला थी/न लुट जाने का भय था। इसके अलावे भी अनेक कारण होते हैं,कोई ठूँठ की अवस्था में पहुँच जाता है। इतना ही नहीं,अनेक भौतिक-जैविक प्रक्रियाएं,सामाजिक प्रभाव इसके पीछे होते हैं। कवयित्री की कविताओं का आसमान विस्तृत है,वह बहुत कुछ समेटती हैं और अपने विचारों की पुष्टि करती हैं। उनके बिंब और प्रतीक रोचक प्रभाव डालते हैं। प्रेम उनका प्रिय विषय है। प्रेम के प्रतीकों में मिलेंगे दोनों,फिर आना प्यारे बसंत,सब तुम्हारा है,मेरे भीतर सदा,वहीं और वहीं मिलूँगी, तुम्हारा होना,देर रात,किसी का आना,तुम्हारी पाती,तुम्हारा ही नजारा है और प्रेम जैसी कविताएं प्रेम की नाना भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। भले ही भाव-चिन्तन भिन्नता लिए हुए हैं,भाषा-शैली अलग-अलग है,कवयित्री प्रेम को ही नाना रुपों में चित्रित करना चाहती है। यह उनकी अनुभूतियों की कोई ऊँचाई है और उनका हृदय खोया हुआ सा है। 'प्रेम' कविता की पंक्तियाँ देखिए-प्रेम ने/छू लिया हवा की तरह/मुझे/भीतर धड़क रहा है आजकल/हो गई है हवा सुगन्धित/महकने लगी है हर शय। प्रेम के प्रभाव से उनका तन-मन भीग गया है,आँखों की रोशनी बढ़ गई है,श्रद्धा का चिराग जल उठा है और जीने की ललक बढ़ गई है। वह बसंत को पुनः आने का निमंत्रण देती हैं।

'सीख लिया हमने' कविता के भाव-दृश्य सहज ही भीतर के अन्तर्विरोधों और परिस्थितियों के अनुसार जीने की कला दिखाते हैं। पिता को लेकर उनके भीतर गहरे भाव हैं 'पिता के लिए' कविता में। 'दुनिया के भीतर' कविता में बहुत कुछ समाया हुआ है और नाना बिंब व प्रतीकों में वह जीवन यथार्थ को चित्रित करती हैं। कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी,प्रियंवदा पाण्डेय व्यक्ति,समाज,प्रकृति,ब्रह्माण्ड, जीव-जन्तु या ईश्वर सबके पीछे के कारणों और मनोविज्ञान को समझती हैं। उन्हें पता है,सबको साथ ही रहना है,विरोध-अन्तर्विरोध बने रहेंगे,सहयोग-शान्ति और प्रेम होगा और यह जीवन चलता रहेगा। 'युद्ध' कविता बताती है,युद्ध खत्म हो जाने के बाद विधवा जवानी,बिलखते बच्चे,माताओं की आह रह जायेगी। परिस्थितियाँ और मन के भीतर की इच्छाओं के बीच के नाना दृश्य "सोचती है वह' कविता जीवन्त करती है।

कवयित्री की कविताओं का कोई भाव-क्रम नहीं है,जब जैसा भाव बना,कविता रच दी बल्कि उनकी अनुभूतियों की जटिलता का जैसे कोई प्रवाह है,स्वतः प्रवाहित हो रहा है। एक अपना घर छोड़कर,वह अक्सर मिलने आते हैं,दर्द तू हरदम जवान रहता है जैसी कविताओं के भाव बहुत कुछ कहते हैं जब कोई लड़की ससुराल जाती है,वह सब कुछ साथ लिए जाती है,केवल घर को छोड़कर। उसकी स्मृतियों में सब कुछ जीवन्त रहता है। ऐसे भाव विरल हैं और इससे साहित्य आलोकित होता है। 'अतृप्त पितर की तरह' कविता में बेटी की पीड़ा है,वह कुछ भी भूल नहीं पाती,गहन भाव की पंक्तियाँ देखिए-

बेटी की आत्मा वहीं रह जाती है
उन्हीं दृश्यों रिश्तों में खोई हुई
किसी अतृप्त पितर की तरह।

'कुछ बोलो सही' कविता में नायिका के विरह-वियोग के भाव चरम अनुभूति वाले हैं। बिना जीवन्त अनुभव

के ऐसी पंक्तियाँ आकार नहीं ले पातीं, देखिए-
पाटल अधर के खोल दो,कुछ बोल दो
कह दो कि तुम हो प्राण,तुम हो आत्मा।
जीवित रहे कविता,तारीफें हजार लिखना,कविता होनी चाहिए कभी-कभी,धरती तब-तब रोएगी,पगडंडियाँ, कविता क्या है,मानव,आग बनकर जलते रहेंगे और तुम्हारी पाती जैसी कविताओं में कवयित्री ने सुख -दुख,पीड़ा और नाना जीवन-दर्शन को समझने-समझाने का प्रयास किया है। अनुपम प्रकृति,संस्कारों की बेड़ियाँ,फिर यह अंतर क्यों है? और उम्मीदों का मर जाना जैसी कविताएं जीवन के गहरे प्रश्नों से जूझती हैं और सावधान करती हैं। 'विधवा स्त्री' और 'विरहणी स्त्री' में कवयित्री ने स्त्री जीवन की पीड़ा और मार्मिकता को शब्द दिया है। साथ ही 'बस तुम्हारी याद है' जैसी कविता में बार-बार वह प्रेम की भावनाओं को लिखती हैं। 'बाँहों के डैने में बंद कर लेती है' कविता में प्रियंवदा ने मां को याद किया है। ऐसे लगाव किसी को भी विह्वल कर सकते हैं। 'शायद यही ईश्वर है' कविता में नाना भाव-चिन्तनों,बिंब-प्रतीकों के सहारे ईश्वर की अद्भुत परिभाषाएं या पहचान देखिए-
आज यह अनुभव हो रहा है
न तुम हो न ही मैं हूँ
बस!
एक अलौकिक अनुभूति है
शायद यही ईश्वर है।
"बंद दरवाजों का मकान" शीर्षक से प्रेम जगाती, भावुक करने वाली मार्मिक कविता है जिसके नाम पर ही प्रियंवदा पाण्डेय ने अपने संग्रह का नामकरण किया है। यहाँ इस कविता में प्रेम की अनुभूति है, पंक्तियाँ देखिए-बंद दरवाजों के बीच की झिर्री से/आती है सांस लेने की आवाज/जो बताती है, बंद दरवाजे में भी/जिंदा है उसका प्रेम जिसे अभी भी यकीन है कि/दुनिया प्रेम से जीती जा सकती है। आगे की पंक्तियाँ किसी चुनौती की तरह हैं या कोई संदेश, देखिए -
प्रेमिका फिर यह बताना चाहती हो
तुम्हारे बिना भी आ सकती है सांस
बहती रहेगी हवा जब तक
तुम्हारे बिना भी हँस सकती है
वह मन ही मन बंद दरवाजों के मकान की तरह।

इस तरह देखा जाए तो कवयित्री प्रियंवदा पाण्डेय के पास सशक्त अनुभूतियाँ हैं,रिश्तों की समझ है,उनके बीच के प्रेम,संघर्ष,विरोध-अन्तर्विरोध हैं,पात्रों के मनोविज्ञान की पकड़ और बेहतर जीवन की कल्पनाएं हैं। कहीं-कहीं वह तन कर खड़ी भी होती हैं,विरोध जताती हैं और साहस का परिचय देती हैं। उनके मन में प्रेम की चाह तो है परन्तु अपनी शर्तों पर,कोई समझौता करके नहीं। उनके पास गाँव के शब्द हैं, गाँव,मां-पिता,खेत-खलिहान,फसलें आदि से उनका मन खूब गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी कविताओं में सहजता है,साथ ही गम्भीरता, जटिलता भी है। उन्हें समकालीन काव्य जगत में स्थान मिलना ही चाहिए और पुरस्कृत,सम्मानित किया जाना चाहिए।

समीक्षित कृति :बंद दरवाजे का मकान (काव्य संग्रह)
कवयित्री : प्रियंवदा पांडेय
मूल्य : रु 200/-
प्रकाशक : ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन, भोपाल

डॉ० दलजीत कौर

नए साल के इंतज़ार में

मैं फिर से
इंतज़ार में हूँ
कि कल
बदलेगी तस्वीर
और तक़दीर ।
एक उम्मीद
जागता साल
भविष्य के गर्भ में
कुछ अच्छा होगा ।
आशा की डोर
थामे चला आता
नए साल को थमा
वही डोर चला जाता ।
साल -दर -साल
दुनिया ,देश ,शहर ,आदमी
कुछ नहीं बदलता
वादे ,इरादे ,योजनाएँ
छल करते राजा
छला जाता देश
और आदमी
तिल -तिल मरता
जीने की चाह में
हताश ,निरीह आदमी
दिया जलाता है
उम्मीद का
कि
कल नया साल है !!

(#2571/40 सी
चंडीगढ़ (160036))

कृष्ण कुमार यादव और आकांक्षा की युगल रचनाधर्मिता पर केंद्रित 'सरस्वती सुमन' का संग्रहणीय विशेषांक

हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में आदिकाल से ही तमाम साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी कवि, लेखक या साहित्यकार को अगर ऐसा जीवनसाथी मिल जाए जो खुद भी उसी क्षेत्र से जुड़ा हो तो यह सोने पर सुहागा जैसी बात होती है। एक तरीके से देखा जाए तो ऐसे लेखकों या लेखिकाओं को उनके घर में ही पहला श्रोता, प्रशंसक या आलोचक मिल जाता है। इसी कड़ी में देव भूमि कहे जाने वाले उत्तराखंड के देहरादून से प्रकाशित 'सरस्वती सुमन' मासिक पत्रिका ने हिंदी साहित्य की एक लोकप्रिय युगल जोड़ी आकांक्षा यादव और कृष्ण कुमार यादव की रचनाधर्मिता पर केंद्रित 80 पेज का शानदार विशेषांक दिसंबर-2024 में प्रकाशित किया है। इसमें दोनों की चयनित कविताओं, लघुकथाओं, कहानियों, लेखों को सात खंडों में शामिल किया गया है, वहीं विभिन्न पन्नों पर उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को समेटती तस्वीरों के माध्यम से इसे और भी रोचक बनाया गया है। कवर पेज पर इस युगल की खूबसरत तस्वीर पहली ही नज़र में आकृष्ट करती है। अपने प्रकाशन के 23 वर्षों में 'सरस्वती सुमन' पत्रिका ने तमाम विषयों और व्यक्तित्वों पर आधारित विशेषांक प्रकाशित किये हैं, परंतु किसी साहित्यकार दंपति के युगल कृतित्व पर आधारित इस पत्रिका का पहला विशेषांक है। इसके लिए पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. आनंद सुमन सिंह और संपादक श्री किशोर श्रीवास्तव हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं। 'वेद वाणी' और 'मेरी बात' के तहत डॉ. आनंद सुमन सिंह ने साहित्य एवं संस्कृति के सारस्वत अभियान को आगे बढ़ाया है। अपने संपादकीय में डॉ. सिंह ने कृष्ण कुमार और आकांक्षा से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में परिचय प्रगाढ़ता का भी जिक्र किया है।

सम्प्रति उत्तर गुजरात परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल पद पर कार्यरत, मूलत: उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जनपद निवासी श्री कृष्ण कुमार यादव जहाँ भारतीय डाक सेवा के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं, वहीं उनकी जीवनसंगिनी श्रीमती आकांक्षा यादव एक कॉलेज में प्रवक्ता रही हैं। पर सोने पर सुहागा यह कि दोनों ही जन साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी समान रूप से प्रवृत्त हैं। देश-विदेश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के साथ ही इंटरनेट पर भी इस युगल की रचनाओं के बखूबी दर्शन होते हैं। विभिन्न विधाओं में श्री कृष्ण कुमार यादव की अब तक कुल 7 पुस्तकें प्रकाशित हैं, वहीं श्रीमती आकांक्षा की 4 पुस्तकें प्रकाशित हैं।

प्रधान संपादक डॉ. आनंद सुमन सिंह ने इस युगल विशेषांक के संबंध में लिखा है, " यह युगल विगत लगभग 20 वर्षों से सरस्वती सुमन पत्रिका के साथ निरंतर जुड़ा है। इसलिए जब 'युगल विशेषांक' निकालने का विचार बना तो सबसे पहले उन्हीं से शुरुआत की जा रही है। अब तो इस युगल की दोनों पुत्रियाँ-अक्षिता और अपूर्वा भी लेखन क्षेत्र में पूरी निष्ठा के साथ जुटी हैं और अपनी शिक्षा-दीक्षा के साथ-साथ साहित्य सेवा में भी सक्रिय हैं। 'युगल विशेषांक' का उद्देश्य केवल एक साहित्यिक परिवार से साहित्य सेवियों को परिचित करवाना है और उनके लेखन की हर विधा को पाठकों के सम्मुख रखना है। अनुजवत कृष्ण कुमार यादव और उनकी सहधर्मिणी आकांक्षा यादव दोनों ही उच्च कोटि के साहित्यसेवी हैं और उनके विवाह की वर्षगांठ (28 नवंबर, 2024) पर यह अंक साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी होगा ऐसी हमारी मान्यता है।"

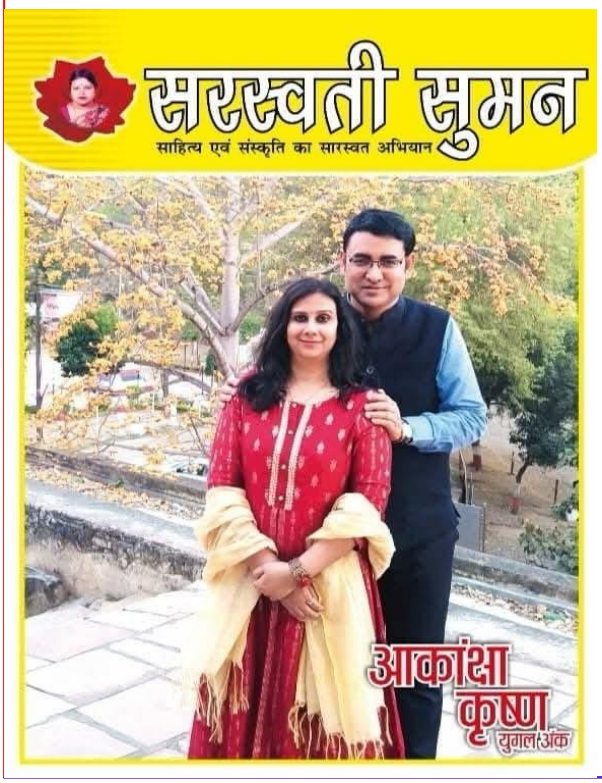

देश-विदेश में तमाम सम्मानों से अलंकृत यादव दंपति पर प्रकाशित यह विशेषांक साहित्य प्रेमियों के लिए एक संग्रहणीय अंक है। साहित्य समाज का दर्पण है। इस दर्पण में पति-पत्नी के साहित्य को समाज के सामने लाकर 'सरस्वती सुमन' ने एक नया विमर्श भी खोला है। साहित्य का अनुराग होने के कारण इस तरह का एक प्रयास हमने भी अपने साहित्य लेखन के दौरान 'सहचर मन' (काव्य संग्रह, 2010) में कराया था, जिसमें आधी कविताएं मेरी और आधी कविताएं मेरे जीवन साथी प्रोफेसर अखिलेश चंद्र की हैं। आशा की जानी चाहिये कि अन्य पत्रिकाएँ भी इस तरह के युगल विशेषांक प्रकाशित करेंगी। निश्चितत: इस तरह के प्रयास न केवल साहित्य में बल्कि दांपत्य जीवन में भी रचनात्मकता को और प्रगाढ़ करते हैं।

प्रो. गीता सिंह
अध्यक्ष-स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
डीएवी पीजी कॉलेज आजमगढ़-276001

सुन्दर दास

कोउ बिभूति जटा नख धारि कहैं यह भेष हमारौ हि आदू।
कोउक कांन फराइ फिरै पुनि कोउक सींग बजावत नादू॥
कोउक केश लुचाइ करै ब्रत कोउक जंगम कै शिव बादू।
ये सब भूलि परै जित ही तित सुंदर कै उर है गुरु दादू॥

मानवी सेवा संस्था : राष्ट्र और राष्ट्र जन की सेवा में समर्पित

274/x ,शक्तिनगर कालोनी ,आरोग्य मंदिर ,गोरखपुर -273003

http://www.manvipatrika.co.in

(पत्रिका यहाँ से भी पढ़ सकते है)